Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

Name. Kirtti Kant Sarma

Binder ke Pasla

MOHAN MOHANI

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मोहन-मोहिनी

(बारहों भाग)

भारत सरकार से रजिस्टर्ड

इस चिन्ह को देखकर मोहन-मोहिनी खरीदें
बिना ट्रेडमार्क की पुस्तक जाली समझें।

'बिन्दु'

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पूज्यपाद गोस्वामी 'श्री बिन्दुजी' महाराज

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

❀ श्री ❀

मोहन मोहनी

[बारहों भाग]

रचयिता :—

भारती—भूषण, कविता-कलाधर, व्याख्यान वारिधि, साहित्य-रत्न श्रीमानस हंस शिरोमणि आदि आदि अनेक उपाधि विभूषित

गोस्वामी श्री 'बिन्दु' जी महाराज

रिसर्च स्कालर श्रीराम चरित मानस

—— : ❀ :——

प्रकाशक :—

प्रेम धाम बृन्दावन

(मूल्य ३-००)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

समर्पण

श्रीयुत् पूज्य पिता जी !

न भाषा, भाव शैली है, न कविता सार गर्भित है ।
हृदय का प्रेम है जो आपको सादर समर्पित है ॥

आपका प्रिय पुत्र—
"बिन्दु"

—o: ❀ :o—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बुलन्दशहर (उ०प्र०)

अपने मोहन से

प्यारे मोहन !

मैं चाहता था कि मेरी मर्मस्पर्शिनी वेदना केवल आप तक ही विदित होती तो ठीक था, परन्तु आपने इन वेदना को घर घर पहुंचा दिया और नाम भी क्या रखा ? "मोहन मोहनी"। धन्य प्यारे धन्य ! अच्छा यदि ऐसी ही इच्छा है तो मै भी जी भर कर सुनने को तैयार हूं। क्या जाने फिर मानव-जन्म दो या न दो ! तो फिर कसर ही क्यूँ रखूँ ? तुम सुनने में नहीं हिचकते तो मैं सुनाने में क्यूँ हिचकूँ ? अपनी पुकार के बारह भाग कर चुका हूं और यह बारहों एक साथ नत्थी करके सरकार के कर कमलों में पेश कर रहा हूं, यदि मेरी इतना ही निर्लज्जता पर रीझ जाओ तो अच्छा है। वरना जितना और सुनना चाहोगे उतना और सुनाऊँगा।

तुम्हारा ही भला बुरा

"बिन्दु"

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रकाशक
प्रेमधाम, वृन्दावन
(उ० प्र०)

(सर्वाधिकार सुरक्षित)

सूचना

विना लेखक की आज्ञा कोई सज्जन इस पुस्तक के पद प्रकाशित करने का प्रयत्न न करें

विनीत
बिन्दु

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

❁ पद सूची ❁

पद		पृष्ठ
अधमों को नाथ उबारना तुम्हें याद हो	[अ]	१
अब आजा रे मुरली वाले झलक०		१०
अब मन ! भजो श्री रघुपति राम		२६
अब तो सुन लो पुकार०		३७
अफसोस मूढ़ मन तू, मुद्दत से०		३८
अहो उमापते अधीन भक्त कीं व्यथा०		४
अजब है यह दुनियां बाज़ार		४१
अड़ा हूं आज तो इस जिद पै कि कुछ०		५३
अहो शङ्कर भोले भगवान		७०
अगर घनश्याम का दिल, आशिकों को०		८६
अब हम मोहन के अनुरागे।		६८
अब तो गोबिन्द के गुण गाले।		१७०
अरे तेरी इक इक स्वांस अमोल०		१०१
अवध नाथ वृजनाथ तुम्हारा०		११५
आन पड़ी मझधार कृष्ण नाव मेरी।	[आ]	८१
आया शरण हूं तेरी०		१०६
इस अपार संसार सिंधु में राम नाम०	(ई)	५
इधर लली है, उधर,		११३
उम्मीद है कि उनके हम खाकनार०	[उ]	१६
उल्फत नशे का जिस दम सच्चा सुरुर०		४२
ऊधो ! हैं बेपीर कन्हाई।	[ऊ]	१८६
एक अर्ज मेरी सुनलो दिलदार हे कन्हैया	(ए)	६
ऐ मेरे घनश्याम ! हृदयाकाश पर	(ऐ)	७०
ऐ घनश्याम मेरे दिल को वह मर्ज लगा देना।		६३
ऐसी दुनियां को क्या करना।		११०
ओ लला नन्द के तु खबर ले हमारी	[अ)	१०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ओ पर्दा नशीं तेरी हर शक्ल० ३३

[क]

कन्हैया प्यारे दुलारे मोहन० ३

कृपा करो हम पे श्याम सुंदर ४

कन्हैया तुम्हें एक नजर देखना है ११

क्या ही मजे से बजती है १५

क्यूँ ये कहते हो घनश्याम आते नहीं ४५

कृष्ण प्यारे को नहीं जागा रे ४६

कन्हैया को एक रोज रोकर पुकारा ६१

कोशिश हजार करके भी ढूँढ़े० ५१

कौन है गुलशन कि जिस गुलशन में ५७

कुछ दशा अनोखी उनकी बतलाते हैं। ६२

क्या वह स्वभाव पहला सरकार० ६५

कैद दुनियाँ! किस अजब जादू की है ६५

कृपा की न होती जो आदत तुम्हारी ६८

कहूं क्या मन मंदिर की बात ७८

कुछ अनोखा वो मेरा मन नंद का लाल निकला ८०

करना है कुछ तुमको विहार आंखों से। ९४

कौमे हिंदू में, न गर हर साल आती होलिका। ६४

कराल कलिकाल में जो तेरा० १०४

[ख]

खबर क्यों न लगे मेरी नन्दकुमार। ४४

[ग]

गजब का दावा है पापियों का, २६

गुलाम गर्चे खता बेसुमार कहते है। ६२

गर प्रेम की इस दिल में लगी घात न होती। ६३

गजब की बांसुरी बजती थी० १३

गैर मुमकिन है कि दुनिया० १०६

[घ]

घनश्याम तुमसे ये अर्ज है ४३

घनश्याम जिसे तेरा जलवा नजा० ४७

घनश्याम हमारा मनमोहन, कुछ दोस्त हैं० ८१

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

घनश्याम ये तुझ पर मेरा मस्ताना हुआ दिल		८३
घनश्माम तुझे ढूँढ़ने जाये कहां-कहां।		२२
चाहें मैं भूलूँ तो भूलूं मोहन०	[च]	५६
चलो सखि चलिये री०		११४
छोड़ बैठा है सारा जमाना मुझे	[छ]	३६
जय जगपति-जय जनपति०	[ज]	१
जिधर भी मैं देखता हूं मुझको०		३
जगत झूठा नजर आया।		१२
जो करुणाकर तुम्हारा बृज में फिर अवतार,		१४
जिसकी चितवन का इशारा दिल में हैं		१६
जो उन सांवले को सदा ढूँढ़ता हैं।		२५
जग में सुन्दर है दो नाम।		४०
जिस पर ये दिल फिदा है०		४७
जय जय बिन्दु और ब्रजनन्दन०		८६
जिसने घनश्याम तेरे प्रेम का०		८६
जिस दर पै ठीक ना है वह दर कभी न०		६१
जो नहीं प्रेम का प्याला पिया		६२
जय जय जन संकटहारी प्रभु		५१
जग असार में सार रसना०		५३
जल्वये यार है कहां कहां ? जख्मी दिलो०		५३
जब से घनश्याम इस दिल में०		५८
जिससे बृजमण्डल का मन गोपाल०		६५
जीवन का मैंने सौंप दिया सब भार०		७२
जो हरि भक्तों की दुनियां हैं।		७५
जब दर पै तुम्हारे ही अधमों का०		७६
जो तू चाहे कि हो घनश्याम की०		७६
जो श्याम पर फिदा हो उस तन को०		८६
जाना कभी स्वभाव न खल का।		१०४
जो मानव मन कर देती है मानस०		७६

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

जय. बृजराज कन्हैया लाल। १०८
जिस कदर श्याम से हो० १११
तेरी हीरा जैसी श्वांस वातों में बीती जाय [त] १८
तुमने घनश्याम अधीनों को जो तारा होगा २१
तरीका अब निराला अपनी सेवा का० ३३
तूने किया न हरि का ध्यान० ४५
तू नहीं अगर है दिल में तो यह० ५२
तुम्हारी कृपा है तो दुश्मन का डर क्या ? ६०
तेरा कौन संगाती हरि बिन० ७१
तौलने बैठा हूं मैं आज। ७३
तेरी कंचन जैसी काया पल में० १५
दशा मुझ दीन की भगवान्० [द] २
दिल तो प्यारा है मगर दिल से भी० २०
दास रघुनाथ का नंद सुत का सखा० ३३
दिखा देते हो रुख जब सांवले० ३६
दरश दिखला दो राजिव नैन– ३७
दृग तीर तेरे मोहन० ८७
दो शुभ संगति दीन दयाल। ६
दुनियां तो क्या ? १११
दोऊ जन लेत लतन की ओटें ११४
दीनों ने जब क्लेशित होकर० ११५
ध्यान घनश्याम का दीवाना बना देता [ध] २५
धर्मों में सबसे बढ़कर हमने ये धर्म ६३
न किया जिसने भजन राम का० [न] ४४
नक्सा है दिल पै तस्वीर घनश्याम की। ४८
न यूँ घनश्याम तुसको दुख से० ६०
न यज्ञ साधन न तप क्रियायें० ७३
न शुभ कर्म धर्मादि धारी हूं भगवान ७४

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न क्यूँ आजाय खिंचकर खुद० ६६
न तो रूप है न रंग है० ११०
पुकार सुन लो जरा काली कमली वाले (प] ५
प्रभो मुझको सेवक़ बनाना पड़ेगा। १६
प्रभो अपने दरबार से अब न टालो। (४२
प्रवल प्रेम के पाले पड़कर० ४६
पाप लाखों के जो तू हर गया० ४७
प्रेम की इस दिल में है लगीं घात० ६३
प्रेम ही है तेरा सिद्धान्त १०२
प्रभो दो वह पीड़ामय प्यार ८२
पतझड़ न खिजा है० १०७
बन्शी वाले क्यों नहि आते हमारे आह पर ब त्र ६
बन्शी बाले हमारी खब लेना १६
बताऊँ तुम्हे श्याम में क्या कि क्या हूं ८७
बैठें हों कहाँ रूठकर व्रजधाम बसैया ४६
बेकार कोई करता है क्यों तकरार ५१
वह दिल ही नहीं जिस दिल में ५२
बिरही की बिरह बेदनाये सुनकर भी० ५५
वही प्यारहैं जिसका हुस्न ५६
बहुत दिन से तारीफ़ सुनकर तुम्हारी ६६
वो जाने श्याम की नजरों के मज़े ६६
बसहु मन मोहन के पाँव ७६
वो खुश किस्त हैं जिसका ७७
बांका झूला सिय साजन कारी ११७
भटका हैं बहुत मन माया में ८
भज तुलसी दास मन भज़ तुलसी दासम् ६
भोले भक्तो के भाव का २७
भव सागर का रत्न वही है ज़िसमें २६
भक्ता जन मुद्रित मन हृदय सुमिरन करो ३१

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भक्त बनता हूं मगर अधमो कां०	४८
भजन श्याम सुन्दर का करते होगे	६१
भीजत श्याम कुन्जन में दोउ अटके	११५
मन अब तो सुमर ले राधेश्याम	११
मिलूंगर मेरे मन में मन मिलते हो	१३
मुझपर भी दया की कर दो नजर	१७
मेरो यार यशुदा कुँवर हो चुका है	२२
मैं घनश्याम को देखता जा रहा हूँ।	२३
मन ग्रहण करो अन्तिम उपदेश	२८
मेरे राम मुझे अपना लेना।	३०
मन मूरख वाले राधा कृष्ण हरे	३२
मेरी आंखों में बहीं दिलदार है	३२
मोहन प्रेम बिना नहीं मिलता०	३६
मै घन श्याम का बावला हो रह	
मेरी और मोहन की बोतें०	८२
मिला है तुमको किस्मत से०	७०
मुझसी नमक हराम न और	७६
मस्तो में हमारा भी जो परवाह न करते	७७
मातेश्वरी तू धन्य है	७६
मेरे और मोहन के दरम्यान होकर	८२
'मोहन और मस्तो के०	६३
मन की मन में रहनी चाहिये	६८
मोहन हम भी तुमसे रूठे	६६
मुझे नहीं नाथ कुछ चिता	६६
मोहन हम तो बने तुम्हारे	१५०
यदि नाथ का नाम दया निधि है (य)	२१
ये अर्ज सामले सरकार हम सुनाते हैं।	२३

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ये झगड़ा है मोहन हमारा ८६
योगो न यती आकिल दोनो न बनादे ! ६०
यही नाम मुख में हो हरदम हमारे ६०
य साँवले को मनाने की राह करते हैं। ५४
ये न कहना कि अजी क्या है भला चोरी में ५५
या तो यादू का तुझे श्याम हुनर आता है ५५
यही हरि भक्त कहते हैं यही सद्ग्रन्थ ७२
यह तमन्ना है घनश्याम का ८४
यूँ मधुर मुरली बजी घनश्याम की ८४
यूँ अगर आप मोहन मुकर जायेगे ५५
ये सच है मोहन कृपा न करते ०८
रसना निशि दिन भज हरि का नाम (र) ७
रे मुसाफिर भटका है जग जंगल० २९
रे मन ये दो दिन का मेला रहेगा ३६
रे मन मूरख कब तक जग में ४३
रे मन दिवाने नटवर० ४६
रूठकर बोलो न घनश्याम० ५४
रूठे हैं अगर घनश्याम तो० १००
रे मन प्रति स्वांस पुकार यही० ६०
लड़गई २ हो अखियां० [ल) २०
लगन श्याम से यूं लगाया करें हम ६०
लगन उसने अपनी लगाये हुये है ६६
समझो न यह की आँखें आंसू बहा रही हैं। (स) २५
सच पूछो तो मुझको नहीं है ज्ञान ४८
सभी तुझसे कहते हैं हाल अपना अपना० ५६
संसार के कर्तार का आकार न होता ५७
सुघर सांवले पर लुभाये हुये हैं। ६३
सदा श्याम श्यामा पुकारा करेंगे ! ८५

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सदा अपनी रसना को रसमय बनाकर। १०५
श्याम चरणों में मन को लगाये जांये। ३
श्याम प्यारे दिलदार अपना झलक १८
श्याम तेरी छटा प्यारी जी पिया० २३
श्याम सुन्दर अब तो हम आशिक २४
श्री राम धुनि में जब तक मन तू० ६४
श्याम सुन्दर तुझे कुछ मेरी खबर ७१
श्याम मन हर में मन को लगाया नहीं। ७८
श्याम तेरी नेह नगरिया प्यारी ८२
श्याम सुन्दर को बस एक नजर देख लें। १०१

[ह]

वे दयामय दीन पालक ७
हमें निज धर्म पर चलनो बताती० ४
हैं आंख वो जो राम का दर्शन० ५
हमारी बार तुम निकले जो मन मोहन० ३५
हाजिर है सरकार जनो के लिये ३५
हमारे मन हरि सुमिरन मन भावै ३८
हिन्दू कुल का है सम्मान श्री गोविन्द और० ५६
हमेशा दोनो को छेड़ कर भी ६०
हे नाथ दयावानो के शिर मौर ६४
है प्रेम जगत में सार० ६७
हे नाथ पद कमल का० ७५
हरि बोल मेरी रसना घड़ी घड़ी ७७
हिन्द में प्रतिवर्ष आती है नववी राम की ९६
हमारे दोनों एक धनी ९८
हाँ मेरा मोहन मुरली वाला १०३
हमको जग ही ने खुद छोडा ११२
हिंडोल झूलत दोउ सरकार ११३

❀ इति ❀

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जय श्री हरिः

[प्रथम भाग]

❀

पद १

जय जगपति, जय जनपति रघुकुलपति राम।
शोभित श्रीसिय समेत, छविधर अभिराम॥
जय कृपाल, प्रणतपाल, दायक विश्राम।
घन सम तन द्युति ललांम, सुगति शान्ति धाम।
भूमि भार हरन हार, जय अनन्त नाम॥
त्रिभुवन बिख्यात बिमल पावन गुण ग्राम॥
नेति नेति गावत ऋग, यजु अथर्व, साम।
पूर्ण 'विन्दु' पूर्ण सिन्धु परम पूर्ण काम॥

———

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पद २

हे दयामय, दीनपालक, अज विमल, निष्काम हो।
जगपति, जग व्याप्त, जगदाधार जग विश्राम हो।
दिवस निशि जिसको, प्रबल भव रोगकी हो जन्त्रणा।
उस दुखी जन के लिये तुम वास्तविक सुख धाम हो।
क्लेश इस कलिकाल का उसको कभी व्यापे नहीं!
हृदय में जिसके तुम्हारा, ध्यान आठो याम हो।
एक ही अभिलाष है पूरी इसे कर दो प्रभो।
मेरी रसना पर, सदा रस "बिन्दु" मय तव नाम हो।

❀

पद ३

अधमों को नाथ उबारना, तुम्हें याद हो कि न याद हो।
मद खल जनों का उतारना, तुम्हें याद हो कि न याद हो।
प्रहलाद जब मरने लगा, खन्जर पे सिर धरने लगा।
उस दिनका खम्भ विदारना, तुम्हें याद हो कि न याद हो।
धृतराष्ट्र के दरबार में, दुःखी द्रोपदी की पुकार में।
साड़ी के थान संवारना, तुम्हें याद हो कि न याद हो।
सुरराज ने जो किया प्रलय, व्रजधाम बसने के समय।
गिरिवर नखों पर धारना, तुम्हे याद हो कि न याद हो।
दृग बिन्दु, जिनके निराश हो, केवल तुम्हारी आश हो!
उनकी दशायें सुधारना, तुम्हें याद हो कि न याद हो।

❀

पद ४

दशा मुझ दीन की भगवान सम्हालोगे तो क्या होगा।
अगर चरणों की सेवा में लगा लोगे तो क्या होगा।
मै नामी पात की हूं और नामीं पापहर तुम हो।
जो लज्जा दोनों नामों की, बचा लोगे तो क्या होगा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जिन्होंने तुमको करूणाकर पतित पावन बनाया है !
उन्हीं पतितों को तुम पावन बना लोगे तो क्या होगा !
यहां सब मुझसे कहते हैं तू मेरा है ! तू मेरा है !!
मैं किसका हूं ? ये झगड़ा तुम चुका लोगे तो क्या होगा !
अजामिल गीध, गणिका, जिस दया गङ्गा में तरते हैं !
उसी में 'बिन्दु" सा पापी मिला लोगे तो क्या होगा !!

❀

पद ५

जिधर भी मैं देखता हूं मुझको नजर वो घनश्याम आ रहा है !
जगत की हर एक वस्तुओं में, प्रकाश अपना दिखा रहा है !
ग्रहादि, नक्षत्र रवि सुधाकर, निशा दिवस वायु व्योम जलधर !
अनेक रंगों के रूप धरकर, सभी के दिल को लुभा रहा है !!
सघन निर्जन में, बन चमन में, घरों में धामों के धान्य धन में !
हरेक तन में, हरेक मन में, वो नन्द नन्दन समा रहा है !
कभी वो माखन चुरा रहा है, कभी वो गायें चरा रहा है !
कभी वो बंशी बजा रहा है, कभी वो गीता सुना रहा है !
कभी मिला वो कृष्ण राम बनकर, हरेक अवतार नाम बनकर !
तो 'बिन्दु" भी उसका धाम बनकर दृगों में उसको बसा रहा है !

—:o:—

पद ६

कन्हैया प्यारे दुलारे मोहन, वजाओ फिर अपनी प्यारी बंशी !
जो भक्त बेसुध हैं वो उठेंगे जिस दम बजेगी तुम्हारी बंशी !!
जो चलता दुष्टों का वार जग में, जो बढ़ता पापों का भार जग में !
तो लेके कृष्णावतार जग में, बजादीं मोहन मुरारी वंशी !!
सभी निशा मोह से जगे थे, स्वधर्म पालन में सब लगे थे !
सभी के दिल प्रेम में रंगे थे, अधर पै जब तुमने धारी बंशी !!
कभी बनी वंशी प्रेम सूरत, कभी बनी बंशी ज्ञान मूरत !
पड़ी जो सत्कर्म की जरूरत, तो गीता बनकर पुकारी बंशी !

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बहे यमुन-प्रेम 'बिन्दु' तन में, हो इन्द्रियाँ सब इसी लगन में !
तो फिर इसीदिल के वृन्दाबन में, बजाये बाँके बिहारी बँशी !

—०—

पद ७

कृपा करो हम पै श्यामसुन्दर, ऐ भक्त वत्सल कहाने वाले !
तुम्हीं हो धनुशर चलाने वाले, तुम्हीं हो मुरली बजाने वाले !
तुम्हे पुकारा था द्रोपदी ने, बचाया प्रह्लाद को तुम्हीं ने !
तुम्हीं हो खम्भे में आने वाले, तुम्हीं हो साड़ी बढ़ाने वाले !
तुम्हीं ने ब्रज से प्रलय हटाया समुद्र में सेतु भी बनाया !
ऐ जल पै पत्थर तैराने वाले, ऐ नखपर गिरिवर उठाने वाले !
इधर सुदामा गरीब ब्राह्मण, उधर दुखी दीन था विभीषण !
उसे भी लङ्का दिलाने वाले, इसे त्रिलोकी लुटाने वाले !!
ऐ कौशिला सुत यशोदानन्दन; अधीन दुख 'बिन्दु, केनिन्दन !
छुड़ादो मेरे भी जग के बन्धन, ऐ गज के फन्दे छुड़ाने वाले !

—०—

पद ८

हमें निज धर्म पर चलना, बताती रोज रामायण !
सदा शुभ आचरण करना, सिखाती रोज रामायण !
जिन्हें संसार सागर से, उतर कर पार जाना है ॥
उन्हें सुख से किनारे पर, लगाती रोज रामायण ।
कहीं छबि विष्णु की बाँकी, कहीं शंकर की है झांकी ।
हृदय आनन्द झूले पर, झुलाती रोज रामायण ॥
सरल कविता की कुंजोंमें, बना मन्दिर है हिन्दू का ।
जहां प्रभु प्रेम का दर्शन, कराती रोज रामायण ।
कभी वेदों के सागर में, कभी गीता की गङ्गा में ।
कभी रस 'बिन्दु,में मन को, डबाती रोज रामायण ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पद ९

पुकार सुनलो जरा, काली कमली वाले।
झलक दिखादो सुघर, श्याम ब्रज गली वाले ॥
हे इन्तजार है सभी को, तुम्हारे दर्शन की।
कभी तो आके मिलो ग्वाल मण्डली वाले ॥
ये कहके ढूँढ़ती हैं, गोपियाँ गोपाल तुम्हें।
छिपे कहाँ हैं वे वृषभान की लली वाले ॥
जिसे सुना के जमाने को तुमने मोह लिया।
सुना दो तान वही मोहनी मुरली वाले ॥
न देंगे दोनोंके दृग, 'बिन्दु को दर्शन की दवा।
जियेंगे कैसे भला, दिल की बेकली वाले ॥

—※—

पद १०

हे आँख वो राम का दर्शन किया करे।
वो शीश है चरणो में बन्दन किया करें।
बेकार वो मुख है, जो ब्यर्थ बाद में।
मुख वह है जो हरिनामका सुमिरन कियाकरे॥
हीरों के कड़ो से नहीं है शोभा हाथ की।
है हाथ वो जो नाथ का पूजनं किया करे।
मरकर भी अमर नाम है उस जीव का जग में।
प्रभु प्रेम पै बलिदान जो जीवन किया करे॥
कविवर वही है श्याम के सुन्दर चरित्र का।
रसना के जो रस 'बिन्दु' से वर्णन किया करे॥

—:※:—

पद ११

इस अपार संसार सिन्धु में राम नाम आधार है।
जिसने मुख से राम कहा उस जन का बेड़ा पार है॥
इस भवसागर में तृष्णा नीर भरा है।

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

फिर कामादि जलजीवों का पहरा है ॥
यदि कहीं-कहीं पर भक्ति सीप होती है।
तो उसके अन्दर राम नाम मोती है ॥
इन्ही मोतियों से नर देही का सुन्दर शृंगार है।
जिसने मुख से राम कहा उस जन का बेड़ापार है।
कलिकाल महा नद अगम विषय जलधारी।
उठती है माया लहर भँवर-भ्रम भारी ॥
इसमें जब नर हरिनाम ताव पाता है।
तो पल भर में ही पार उतर जाता है ॥
राम नाम रस 'बिन्दु' कुशल केवट ही खेवनहार है।
जिसने मुख से राम कहा उस जन का बेड़ा पार है ॥

—

पद १२

एक अर्ज मेरी सुनलो, दिलदार हे कन्हैया ॥
कर दोअधम की नैया, भव पार हे कन्हैया ॥
अच्छा हूं या बुरा, हूं पर दास हूं तुम्हारा ॥
जीवन का मेरा, तुम पर —है भार, हे कन्हैया ॥
तुम हो अधम जनों के उद्धार करने वाले।
मैं हूं अधम जनों का, सरदार हे कन्हैया ॥
करुणा निधान करुणा करनी पड़ेगी तुमको।
वरना ये नाम होगा, बेकार हे कन्हैया ॥
ख्वाहिश ये है मुझसे, दृग 'बिन्दु' रत्न लेकर।
बदले में दे दो अपना कुछ प्यार हे कन्हैया ॥

पद १३

बंशी वाले क्यो नहीं आते हमारी आह पर।
मस्त हैं हम तो तुम्हारे दर्शन की चाह पर ॥
खैरख्वाहों पर अगर, खुश हो गये तो क्या हुआ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हम तो तब जानें कि खुश हो जाओ बदख्वार पर ॥
रूप धन का और बाहों का भी बल जाता रहा ।
अब तो है निर्वाह निर्बल का तुम्हारी बांह पर ॥
युद्ध अब तक जो कठिन कलिकाल से करते थे हम ।
फैसला है उसका अब घनश्याम शाहन्शाह पर ॥
फायदा यह नाथ का यश, 'विन्दु' बरसाने में हैं ।
भूले भटके पातकी आते ए सीधी राह पर ॥

पद १४

रसना निशिदिन भज हरि का नाम,
श्री राम कृष्ण श्री कृष्ण राम ।
जो हैं सुखकर आनंद धाम,
श्री राम कृष्ण श्री कृष्ण राम ॥
केशव कान्हा चितचोर कहो,
या रघुबर अवध किशोर कहो ।
रटो दिन प्रति घड़ी पल आठो याम,
श्री राम कृष्ण श्री कृष्ण राम ।
मन राधावर के चरण गहो,
जानकी रमण के शरण चलो ।
बोलो बन कर दिल से गुलाम,
श्री राम कृष्ण श्री कृष्ण राम ॥
राघव सा कोई कृपालु नहीं,
माधव सा कोई दयालु नहीं ।
आरत जन के आते हैं काम,
श्री राम कृष्ण श्री कृष्ण राम ॥
धनु-शर धारी मुरली 'धारी'
जय रघुबंशी जय बनवारी ।
है प्रेम 'बिन्दु' दोनों का धाम,
श्री राम कृष्ण श्री कृष्ण राम ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पद १५

भटका बहुत मन माया में अब हरि से ध्यान लगा लेना।
करुणा कर केशव को भजकर, यह जीवन शुद्ध बना लेना ॥
झूठे झगड़ों को त्याग जरा, बेखबर नींद से जाग जरा।
प्रभु पद से कर अनुराग ज़रा, सतसंग का रंग चढ़ा लेना ॥
कर्ज नर तन लिया था, उसको तू बिसरा गया !
सूद का तो जिक्र क्या है, मूल धन भी खा गया ॥
धर्म की डिग्री हुई, अब काल कुर्की आयेगी।
जिन्दगी तेरी अधम 'नीलाम करदी जायेगी ॥
यदि यम बन्धन से बचना है नरकों में कभी न जाना है।
तो झूठी माया रचना है दिल पर यह ज्ञान जमा लेना।
अपनी चालों में तुझे, कामादिकों ने फंसा लिया।
पाप की हुण्डी खरीदो, श्वांस रत्न लुटा दिया !
अब पता तुझको चलेगा, अपने उस नुक़सान का।
होने वाला है दिवाला, पाप की दूकान का ॥
दृग 'बिन्दु' न व्यर्थ लुटाना अब खाली करना न खजाना।
आखिर का सोच ठिकाना अब, पूँजी बचे बचा लेना ॥

पद १६

श्याम चरणों में मन को लगाये जायेंगे।
ज्योति जीवन की जग में जगाये जायेंगे ॥
हजार बार कृपागार से करार हुआ।
मगर न उनका भजन दिलसे एक बार हुआ ॥
विषय में भूख में निद्रा में दिन गुजरते हैं।
मनुष्य होके भी पशुओं का काम करते हैं ॥
अब तो बिगड़ी दशा को बनाये जायेंगे ॥श्याम०
समझ रहे हैं कि संसार हमारा होगा।
ये पुत्र मित्र ये परिवार हमारा होगा ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नहीं ध्यान कि जब काल प्राण लेता है ।
तो गैर क्या है ये तन भी न साथ देता है ।
ऐसी दुनिया से नाते हटाये जायेंगे ।। श्याम०

अधमो के भार बेशुमार हो गये भगवन् ।
कि जससे थक गये लाचार हो गये भगवन् ।
न तोड़ो कर्म के बन्धन तो कुछ रहम करदो ।
न सब घटाओ तो थोड़ासा वजन कम करदो ।
अब न सिर पर ये बोझ उठाये जायेंगे ।। श्याम०

सहे जो कष्ट सहे जो भूल जो हुई सो हुई ।
किये जो कर्म किये भूल जो हुई सो हुई ।
दयालु अखिर दावा यही हमारा है ।
दुःख दृग 'बिन्दु" उस पर चढ़ाये जायेंगे ।।श्याम
हमें भी तारो जो लाखों को तुमने तारा है ।

पद १७

भज तुलसीदासं मन भज तुलसी दासं ।
यत्पद-जलजस्मरणं शुभ सुकृताभासं ।। भज तुलसी०
सिय लक्ष्मण युत रघुपति, जन प्राणाधारं ।
बसत सदा निशिवासर हृदयागारं ।। भज तुलसी०
यस्यादर्श अनूपं दुख दारिद दमनं ।
कविकुलजीवनरूपं, कलिमल ज्वरशमनं ।। भज तुलसी०
यत्कृत सुखद सदैव श्री हरि गुण ग्रामं ।
श्रवणकरं हर गिरजा कविवर बलधामं ।। भज तुलसी०
सुन्दर सरल सुहावनि, कविता गंभीरं ।
मन रञ्जन दृग अञ्जन भञ्जन भव भीरं ।। भज तुलसी०
भाषा छन्द रसांमृत, जे नर कृत पानं ।
ते वैराग्ने विभीषण रत हरि पद ध्यानं ।। भज तुलसी०
द्वादश ग्रन्थ निरूपण, प्रेम पथिक प्राणं ।
अधम अधीन सहायक दायक निर्माणं ।। भज तुलसी०
रामायणं पद ललितं निर्मल नवतीतं ।
रसना विन्दु निरन्तर श्रवण कथा गीतं ।। भज तुलसी०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ दूसरा भाग

पद १८

ओ लला नन्द के तू खबर ले हमारी भला।
ओ मुरारी तिहारी है न्यारी कला ॥ ओ लला०
दीनों को स्वामी हैं अन्तरयामी हैं।
जगत का रखवाला।
आजा आजा ऐ गोकुल, बसइया मेरे ॥
आजा बांके बिहारी कन्हैया मेरे।
फिर तो एक बार नजर मेहर की चला ॥ ओ लला०
मदन मोहन ! तुझे आरत दुखी हो तो फरियाद करते हैं।
तेरे ही पै अपने दुखकी फरियाद करते हैं ॥
सगा कोई नहीं अपना न कोई अपना प्यार।
तेरे भक्तों को तेरे नाम का केवल सहारा है॥
दीनों के हैं दृग "बिन्दु" का तुझ पर ही फैसला। ओलला०

❀

पद १९

अब आजा रे मुरली वाले झलक दिखा जा।
हाँSS प्यासे नैनों की प्यास बुझा जा ॥ अब०
उजड़ी सी झोंपड़ी में बुलाता हूं तुझे श्याम।
वीराने में मेहमान बनाता हूं तुझे श्याम।
गर तुमको गरीबों की गरीबी से प्यार है ॥
तो तुझ गरीब को भी तेरा इन्तजार है।
हाँSS दिल के दर्द को आकर मिटा जा ॥ अब०
वन्दन के लिये वेद का साधन भी नहीं है।
पूजन के लिये धूप या चन्दन भी नहीं है ॥
अर्पण करूँ तो क्या करूँ फल फूल भी नही।
भोजन करूँ तो क्या फलमूल भी नहीं ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हाँऽऽरूखी भाजी का भोग लगा जा ॥ अब०
पूजा भी करूंगा तो मैं इस तौर करूंगा ।
धन हीनता की धूप को सुलगा के धरूगा ॥
दुख दोष का दुर्भाग्य का दे दूगा दीपदान ।
नैवेद्य निर्बलत्व का पीड़ित दशा का पान ॥
हाँऽऽ ऐसे पूजन का मान बढ़ा जा ॥ अब०
काया जमीं पे बोये हैं कुछ बीज तेरे नाम ।
घनश्याम! इसके वास्ते बनना तुही घनश्याम
अब इस दुखी इन्सान की तुझ पर ही नजर है
दो चार दया 'बिन्दु' दरसाने की कसर है ॥
हाऽऽ सूखी खेती को सब्जी बना जा ॥

—❀—

पद २०

कन्हैया तुम्हें एक नजर देखना है ।
जिधर तुम छिपे हो उधर देखना है ॥
अगर तुमहो दीनों की आहों के आशिक ।
तो स हों को अपना असर देखना है ।
उसी हाथ का अब हुनर देखना है ॥
बिदुर भिलनी के घर जो तुमने देखे ।
तो हमको तुम्हारा भी घर देखना है ।
टपकते हैं दृग 'विन्दु' तुमसे ये कहकर ।
तुम्हें अपनी उल्फ़त में तर देखना है ॥

—❀—

पद २१

मन! अब तो सुमिर ले राधेश्यांम ।
राधेश्याम मन! सीता राम ॥
अब तक तो जग में भरमाया ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उचित मार्ग पर कभी न आया।
अब भजले हरि नाम ॥ मन० ॥
अब तक तो भटकता था जगत के व्यर्थ जालों में।
मगर कुछ अब सोच कर चल ? जरा सच्चे ख्यालों में।
जो तेरे पास हरि सुमिरन का सच्चा पास होवेगा।
तो कर विश्वास तेरा स्वर्ग हो में बास होवेगा।
कृष्ण लिखा हो जन इस तन में,
जम के फन्दे कटे सब छन में।
कृष्ण नाम सुख धाम ॥ मन० ॥
जिसे तू मेरी कहता है वह अन्तिम दिन नहीं होगा।
तू जिस माया में भटका है वो कुछ तेरा नहीं होगा ॥
जो धन दौलत कमाया है यहाँ हो सब धरा होगा।
भजन हरिका किया है जो वही साथी तेरा होगा ॥
पाप विन्दु का घड़ा फोड़ दे।
व्यर्थ वासना डोर तोड़ दे ॥
करले कुछ विश्राम ॥ मन० ॥

———०———

पद २२

जगत झूठा नजर आया ॥ जगत० ॥
मतलब की है सगाई,
बातों की है सफाई।
वृथा ही भरमाया ॥ जगत० ॥
कोई कहता है कि सोने की महल बनवायेंगे।
कोई कहता है कि शाहं शाह हम बन जायेंगे।
पर यह न समझे कि इस जीवन का क्या औकात है।
चार दिन की चांदनी फिर अंधेरी रात है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बांधकर मुट्ठी किया था गर्भ में इक़रार क्या।
श्याम के सुमिरन की तुझको अब नहीं दरकार क्या॥
उस बड़े दरबार में मुंह कौन सा दिखलायेगा।
बन्द हाथों आया था और खाली हाथों जायेगा॥
अब दृग के 'बिन्दु' खो मत,
हरि को ही दे दे काया॥ जगत०॥

—०—

पद २३

मिलूं गर मेरे मन से मन, मिलाते हो मदन मोहन।
जियूं गर जान खुद बनकर जिलाते हो मदन मोहन॥
नहीं इस चित्त चंचल को अलख लखने ख्वाहिश हैं।
देखूँ गर सांवली सूरत लखाते हो मदन मोहन॥
नहीं काबिल हूं मैं इसके कि अनहद नाद को सुन लूँ।
सुनू गर रस भरी मुरली सुनाते हो मदन मोहन॥
तपस्या है नहीं इतनी कि योगी सिद्ध हो जाऊं।
बनू गर अपना तुम प्रेमी बनाते हो मदन मोहन॥
नहीं ताक़त है ब्रह्मानंद के एक 'बिन्दु' पीने की।
पियूँ गर प्रेम के प्याले पिलाते हो मदन मोहन॥

......

पाद २४

गजब की बासुरी बजती थी बृन्दावन बसैया की।
करूँ तारीफ मुरली की या मुरली धर कन्हैया की।
जहाँ चलता था न कुछ काम तीरों से कमानो से।
विजय नटवर की होती थी वहां मुरली की तानों से।
मुरली वाले मुरलिया बजा दे जरा।
उससे गीता का ज्ञान सिखा दे जरा॥
तेरी वन्शी में भरा है वेद मन्त्रों का प्रचार।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

फिर वही बन्शी बजाकर करदे भारत का सुधार
तनपे हो काली कमलिया गले गुन्जो का हार।
इस मनोहर वेष में आजा सवलियो एकबार॥
ब्रज की गलियों में गोरस लुटा दे जरा।
मुरली वाले मुरलिया बजा दे जरा॥
सत्यता के स्वर हैं जिसमें और उलफत का लय।
एकता की रागिनी है वह, कि करती है विजय॥
जिसके एक लहजे में तीनो लोक का दिल हिल उठे।
तेरे भक्तो को जरूरत अब उस मुरली की है॥
ऐसी मुरली की तान सुना दे जरा।
मुरली वाले मुरलिया बजा दे जरा॥
कर्म यमुना बिन्दु हो और धर्म का आकाश हो
चाह की हो चाँदनी साहस का चन्द्र विकास॥
फिर ये वृन्दावन हो भारत प्रेम हास विलास हो।
मिल के सब आपस में नाचें इस तरह का रास हो।
फिर से जीवन की ज्योति जगा दे जरा।

पद २५

जो करुणाकर तुम्हारा ब्रज में अवतार हो जाये।
तो भक्तों का चमन उजड़ा हुआ गुलजार हो जाये॥
गरीबों को उठाले सांवल गर अपने हाथों से।
तो इसमें सक नहीं दोनो का जीर्णोद्धार हो जाये॥
लुटाकर दिल जो बैठे हैं वे रो रो कर ये कहते हैं।
किसी सूरत से सुन्दर श्याम का दीदार हो जाये॥
बजा दो रसमयी अनुराग की वह बासुरी अपनी।
कि जिसकी तान का हर तन में पैदा तार हो जाये॥
पड़ी भव सिन्धु में हैं दीनो के दृग 'बिन्दु' की नैया।
कन्हैया तुम सहारा दो, तो बेड़ा पार हो जाये।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पद २६

क्या ही मजे से बजती है घनश्याम की बंशी।
मोहन बजा दो फिर वही विश्राम की वेन्शी॥
बन्शी की मधुरता का मजा मिलता है मुझको।
जिस जिस वक्त बजाता हूं तेरे नाम की बन्शी॥
अधरों पै उसे रखके बजाते थे जिधर तुम।
बजती थी उधर प्रेम के पैगाम की बन्शी॥
उस बांस का बन्शी की कोशिश का था ये दावा।
आशिक थी बे शुमार तने श्याम की बन्शी॥
बन्शी को बजाते हुये दृग बिन्दु में तुम हो।
जब बजने लगे आखिरी अन्जाम की बन्शी॥

पद२७

तेरी कञ्चन सी काया पल में ढल जाय।
बालक युवा जरठ पन बीते॥
अन्त समय अग्नि में जल जाय॥ तेरी०
गुजरता है जो दिन रात हसी खेलों में।
जिन्दगी बीत जायेगी इन्ही झमेला में॥
तू तो गफलत में है तुझको पता न चलता हैं।
हर एक स्वाँस तेरा कीमती निकलता है।
जगत जाल में भटक रहा हैं,
स्वर्ण घड़ी बातों में टल जाय॥ तेरी०
तेरे अमलों का सच्चा हिसाब क्या होगा।
मनुष्य जन्म दे तेरा जबाब क्या होगा॥
दल के कांटे पे पाप का वजन कर ले।
कमी है धर्म में तो श्याम का भजन करले॥
जीवन का क्षणिक भरोसा क्या है!
जैसे "बिन्दु" सिन्धु मिल जाय॥ तेरी०॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रभो मुझको सेवक बनाना पड़ेगा।
कुटिल पर कृपा भाव लाना पड़ेगा॥
जिन जिन का कष्ट प्रभो तुमने दूर किया।
उन सबने जहां में तुम्हें मशहूर किया॥
शोहरत सुनी तो दास भी दरबार में आया।
कुछ दीन दशाओं की भी नज़रोने में लाया।
बुरा हूं भला हूं या जैसा भी हूं मैं।
गुलामी के पद पर बिठाना पड़ेगा प्रभो०॥
खाली भी मैं फिर जाऊं तो कुछ गम न रहेगा।
पर याद रहे सारा जमाना ये कहेगा॥
कानून कृपामय का इसी से बदल गया।
अब दीन बन्धुता का दिवाला निकल गया॥
जो हैं लाज रखनीं तो दृग बिन्दु पर ही।
दया का खज़ाना लुटाना पड़ेगा॥ प्रभो०

पद २६

बन्शी वाले हमारी खबर लेना।
विपत्ति पांडवो की तुमने बाँट ली आकर॥
तुम्हीं ने कैद देवकी की काट दी आकर।
तुम्हीं गरीबों के हो मान बढ़ाने वाले॥
बिदुर के घर में भाजी भोग लगाने वाले।
हम गरीवों पै कुछ भी नज़र देना॥ बंशी०
तुम्हें पुकारती गौवे कहां हो श्याम मेरे।
वो बृज की भूमि कह रही कहां आराम मेरे॥
हम भी अरमान दर्शनों का लिये हैं।
तुम्हारे वास्ते दिल जान दिये बैठे हैं॥
दीन दुखियों की झोली भी भर देना॥ बंशी०॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तुम्हीं ने चैन की बंशी बजाई थी बृज में।
तुम्हीं ने रास की लीला रचाई थी बृज में।
तुम्हीं हो नन्द की गौवों के चराने वाले।
तुम्ही हो माखन वो मिश्री के चुराने वाले॥ वंशी०
तुम्हारे नाम की रटना लग रहा भगवान्।
दया निधान के गुणगान गा रहा भगवान्॥
जरा हमारी तरफ भी नजर उठाओ तो।
अधम अधीन को भवजाल से छुड़ाओ तो॥
'बिन्दु' आंसू के, आंखों से हर लेना॥ बंशी०

—०—

पद ३०

मुझ पर भी दया की कर दो नजर,
ऐ श्याम सुन्दर ऐ मुरलीधर॥
कुछ दीनो के दुख की ले लो खबर,
ऐ श्याम सुन्दर ऐ मुरलीधर॥
आरत जन तुमको पुकार रहे हैं,
आने की बाट निहार रहे हैं॥
फिर छिपके कहां बैठे नटवर,
ऐ श्याम सुन्दर ऐ मुरलीधर॥
बृज वाला व्याकुल रहती हैं,
ग्वालों की टोलियाँ कहती हैं॥
कब आओगे कान्ह कुँवर बनकर,
ऐ श्याम सुन्दर ऐ मुरलीधर॥
जिस बंशी ने प्रेम प्रकाश किया,
रसदायक रास विलाप किया॥
बृज जाय वही बंशी घर घर,
ऐ श्याम सुन्दर ऐ मुरलीधर॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बिसरा दो इन्हें यो सम्भालो इन्हें,
ठुकरा दो चाहे अपनालो इन्हें ॥
दृग 'बिन्दु' हैं आपके पेशे नजर,
ऐ श्याम सुन्दर रे मुरली धर ॥

पद ३१

तेरी हीरा जैसी स्वास बातों में बीती जाय रे मन —
राम कृष्ण बोल ॥
गंगा यमुना खूब नहाया गया न दिल का मैल ।
घर धन्धों में लगा हुआ है ज्यों कोलहू का बैल ॥
तेरे जीवन की आशा बातों में बीती जाय रे मन-
राम कृष्ण बोल ।
किया न पौरुष आकर जग में दिया न कुछ भी दान !
मेरी तेरी करता करता निकल गया यह प्रान ॥
जैसे पानी बीच बताशा, बातें में बीती जाय रे मन —
राम कृष्ण बोल ।
पाप गठरिया सिर पर लादे रहा भटकता रोज ।
प्रेम सहित राधा माधव की किया न कुछ भी खोज ॥
झूठा करता रहा तमाशा, बातें में बीती जाय रे मन-
राम कृष्ण बोल ।
नस नस में प्रति रोम रोम में राम रमा है जान ।
प्रकृति 'बिन्दु' के कण में भी उसको तू पहचान ।
उससे मिलने की अभिलाषा बातों में बीती जाय रे मन
राम कृष्ण बोल ।

—❀—

पद ३२

श्याम प्यारे दिलदार, अपनी झलक दिखा दो ।
श्याम प्यारे दिलदार, मुरली वाले दिलदार ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मोहन प्यारे दिलदार, अपनी झलक दिखादो ॥
है दिल में याद तुम्हारी लबों पै आह भी है।
है दर्द सीने में हसरत निगाह भी है॥
ये भरोसा है कि सूरत कभी दिखा दोगे।
तुम्हीं ने दर्द दिया है तुम्हीं दवा दोगे॥
श्याम प्यारे दिलदार, अपनी झलक दिखा दो॥
बिदुर की भाजी वो भीलनी के फल कबूल गये।
तो आज किसलिए दावत हमारी भूल गये॥
न ध्यान दीन पुकारों पै कुछ दिया कान्हा।
बताओ सख्त जिगर कबसे कर लिया कान्हा॥
श्याम प्यारे दिलदार, अपनी झलक दिखादो।
दहीं के दूध के बृज ग्वालिनों से दान लिये।
सुदामा विप्र को तन्दुल पै तीन लोक दिये॥
वो प्यार और सखावत को, फिर दिखा जाओ।
वे बात सच है या झूठ! जरा बता ज़ाओ॥
श्याम प्यारे दिलदार, अपनी झलक दिखा दो॥
हो संग दिल, तो मोम दिल बना ही लेंगे कभी।
न कैसे आओगे वेसक वुला हीं लेंगे कभी॥
यही वजह है कि दृग 'बिन्दु' के फुहारे लिये।
ये धोते रहते हैं आँखों के घर तुम्हारे लिए॥
श्याम प्यारे दिलदार अपनी झलक दिखादो॥

—❀—

पद ३३

जिसकी चितवन का इशारा दिल में है।
बस वही दिल का सहारा दिल में है।
हर जग पर जिसकी हमको थी तलास।
वह दिल रहजन हमारा दिल में है॥

CC0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बस गया जिस दिन से दिल में सांवला।
क्या बतायें क्या नजारा दिल में है॥
दर्दे दिल को, दिल से क्यों रुखसत करें।
यह भी एक दिलाबर का प्यारा दिल में है॥
'विन्दु' आंखों के ये देते हैं सबूत।
प्रेम के गंगा की धारा दिल में है॥

पद ३४

दिल तो प्यारा है मगर दिलसे भी प्यारा तू है।
पर गजब ये है कि इस दिल में भी न्यारा तू है॥
दिलदुखाने का जो दावा भी करूं किस पै करूं।
द दल तू ही है, और दिल भी हमाँरा तू है।
मुझको तेरे सवा कोई भी नजर आता नहीं।
रोशनी जिसमें है आंखों का तारा वो तू है॥
तेरा कब्जा हैं हरेक़ दिल पै, कोई दे या न दे।
दिल दुलारा है तेरा, दिल का दुलारा तू हैं॥
'बिन्दु' आंसू के बहा बैठे हैं, उल्फत की नदी में।
मैं हूं मझधार में, घनश्याम किनारा तू हैं॥

—❀—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ तीसरा भाग ॥

पद ३५

तुमने घनश्याम अधीनों को तारा होगा।
जो कभी हमको भी तरने का सहारा होगा॥
हम जो मशहूर हैं पापी, तो तुम पतित पावन।
तुम न होगे तो भला कौन हमारा होगा॥
गम न होगा जो हमें बरबाद या पामाल करो।
नाम हर हाल में बदनाम तुम्हारा होगा॥
क्यों हमारी भी कुटिलता को सुधारोगे भला।
गर्चे कुब्जा की कुटिलता को सुधारा होगा॥
माना सरकार की आंखों में अनेकों हैं अधम।
'बिन्दु' का आँख के कोने में गुजारा होगा॥

पद ३६

यदि नाथ का नाम दयानिधि है तो दया भी करेंगे—
कभी न कभी।
दुखहारी हरी, दुखिया जन के, दुख क्लेश हरेंगे—
कभी न कभी॥
जिस अंग की शोभा सुहावनि है,
जिस श्यामल रंग में मोहनि है।
उस रूप सुधा से, सनेहियों के दृग प्याले भरेंगे—
कभी न कभी॥
जहाँ गीध निषाद का आदर है,
जहाँ व्याध अजामिल का घर है।
वही वेष बना के उसी घर में हम जा ठहरेंगे—
कभी न कभी॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करुणानिधि नाम सुनाया जिन्हें,
चर्णामृत पान कराया जिन्हें ।
सरकार अदालत में ये गवाह, सभी गुजरेंगे—
कभी न कभी ॥

हम द्वार पै आपके आके खड़े,
मुद्दत से इसी जिद पर हैं अड़े ।
भव सिन्धु तरे जो बड़े से बड़े, तो ये 'बिन्दु' तरेंगे...
कभी न कभी ॥

पद ३७

मेरा यार यशुदा—कुँवर हो चुका है।
वो दिल हो चुका है जिगर हो चुका है ॥
जगत को सभी खूबियाँ मैंने छोड़ी।
जो दिल था इधर अब उधर हो चुका है ॥
ये सच जानिये उसकी बस एक नजर पर।
जो कुछ पास था सब नजर हो चुका है ॥
वो उस मस्त को खद खबर ले रहा है।
जो उनके लिये बेखबर हो चुका है ॥
नहीं आँख का अश्रु जब 'बिन्दु' है यह।
ये उल्फत में लाखों गुहर हो चुका है ॥

पद ३८

घनश्याम तुझे ढूढ़ने जायें कहाँ कहां।
अपने विरह की याद दिलायें कहाँ कहाँ ॥
तेरी नज़र में, जुल्फ में, मुस्कान मधुर में।
उलझा है सब में, दिल तो छुड़ाये कहाँ २ ॥
चरणोंकी खाक सारी में खुद खाक बन गये ।
अब खाक पै हमें खाक रमाये कहाँ कहाँ ॥
जिनको तबीब देखके खुद बन गये मरीज़।
ऐसे मरीज़ मर्द दिखायें कहाँ कहाँ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दिन रात अश्रु 'बिन्दु' बरसते तो है मगर।
सब तन में लगी आग तो बुझायें कहाँ २॥

पद ३९

मैं घनश्याम को देखता जा रहा हूं।
उसी की झलक पर खिंचा जा रहा हूं॥
लुटाता है वह मैं लुटा जा रहा हूं।
मिटाता है वह, मैं मिटा जा रहा हूं॥
खबर कुछ नहीं है कहाँ जा रहा हूं।
बुलाता है वह मैं चला जा रहा हूं॥
मोहब्बत का मैं रंग यूँ ला रहा हूं।
निगाहों में उसकी बसा जा रहा हूं॥
पता प्रेम के सिन्धु का पा रहा हूं।
कि एक बिन्दु में ही बहा जा रहा हूं॥

पाठ ४०

ये अज सांवले सरकार! हम सुनाते हैं।
कि नैन आपके दिनों पै जुल्म ढाते हैं॥
न पूछते हैं किसीसे न कुछ बताते हैं।
जिधर भी दिल को ये पाते हैं घर बनाते हैं॥
बना के घर, ये खिलाफत का रंग लाते हैं।
ख्याले दिल की भी अपनी तरफ मिलाते हैं॥
खयाले दिल से भी भेद घर का पाते हैं।
तो दिल चुराके न जाने किधर को जाते हैं॥
बयान सब हमारे सच हैं, कसम खाते हैं।
ये अक्ष 'बिन्दु' की गंगा जली उठाते हैं॥

पद ४१

श्याम तेरी छटा प्यारी जो पिया करते हैं।
यही अपनी ह गिजा जिससे जिया करते हैं॥
नहीं मुरझाते भाव-पुष्प गुलशने दिल के।
प्रेम जल से उन्हें सींच दिया करते हैं॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रफुगरी की तरकीब निकाली है नई।
तेरी नजरों से जिगर जख्म दिया करते हैं॥
गजब के चाहने वाले भी हैं तेरे मोहन।
खाकसारी में भी अहसान किया करते हैं॥
गुथे सनेह के डोरे में 'बिन्दु' आँसू के।
इसी माला पै तेरा नाम लिया करते हैं॥

पद ४२

रे मुसाफिर! भटका है जग जंगल के बीच।
स्वांस रतन भर कर इस तन में तूने खजाना पटका है,
जग जंगल के बीच।
काम, क्रोध, अज्ञान, लोभ, मद इन चारों का खटका है,
जग जंगल के बीच।
समझ रहा तू गुलशन जिसको, यह माया का लटका है,
जग जंगल के बीच।
भोग, रोग, हिंसक पशु फिरते, काल बाघ का घरता है,
जग जंगल के बीच।
विषय 'बिन्दु' मत समझ सुधा, तू घूंट हलाहल घटका है,
जग जंगल के बीच।

पद ४३

श्याम सुन्दर अब तो हम आशिक तुम्हारे बन गये।
हम तुम्हारे बन गये और तुम हमारे बन गये॥
जब ये दिल दुनिया का था, दुश्मन हजारों बन गये।
अब ये दिल तुमको दिया हर दिल के प्यारे बन गये॥
जोग, जाप, तप नेम से कोई बना बिगड़ा करे।
हम अजामिल, गीध, गनिका के सहारे बन गये॥
आँख भर देखेंगे जब तुमको, समझ लेगे ये हम।
दिल बना बैकुण्ठ, दृग बैकुण्ठ द्वारे बन गये॥
बिरह नभ पर जब तुम्हारा ध्यान चन्द्रोदय हुआ।
प्रेम के जल 'बिन्दु' के टपके सितारे बन गये॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पद ४४

ध्यान घनश्याम का दीवाना बना देता है।
बागे दुनियां को भी वीराना बना देता है॥
बिहार सांवले सरकार का, मेरे दिल को।
कभी गोकुल, कभी बरसाना बना देता है॥
श्याम इश्क़ ने तेरे, यूँ दिल को किया रोशन।
दीनों दुखियों का परवाना बना देता॥
बुत परस्ती का कड़ा शौक इसे कहते हैं।
शर जहाँ झुकता है बुतखाना बना देता है॥
प्रेम-प्याले तो पियें भरके वो अपनी जानें।
'बिन्दु' का बिन्दु ही मस्ताना बना देता है॥

पद ४५

समझो न यह कि आँखें आंसू बहा रही है।
घनश्याम पर न जानें क्या क्या चढ़ा रही है॥
नख चन्द्र पै चरणों के कतरे जो टपकते हैं।
अनमोल मोतियों की माला पिन्हा रही हैं॥
नन्दलाल के हाथों में पहुंची जो अश्कमाला।
खुद लाल बनके लालों को भी लजा रही है॥
चश्मे गुहर झड़ी पर मुसका पड़े जो मोहन।
हीरे का नासा मणियां बनतीसी जा रही हैं।
सर्वाङ्ग देखकर जो दृग 'विन्दु' ढल पड़े हैं॥
नौकायें प्रेम की दो, नीलम लुटा रही है॥

पद ४६

जो इस सांवले को सदा ढूँढ़ता है।
उसे एक दिन साँवला ढूँढ़ता है।
जिसे ढूँढ़ने का अमल पड़ चुका है।
वो इस ढूँढ़ने में मजा ढूँढ़ता है॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अरे दिल जिसे कुल जहां ढूँढ़ता है ।
वो मुझमें है फिर तू कहां ढूँढ़ता है ॥
मिला उसको, जो दिल मिला ढूँढ़ता है ।
जो पूँछी पतित 'बिन्दु' क्या ढूँढ़ता है ।
पतित-बिन्दु जी का पता ढूँढ़ता है ॥

पद ४७

गजब का दावा है पापियों का, अजीब जिदपर सम्हल रहे हैं ।
उन्हीं से झगड़ पै तुल रहे हैं कि जिनसे त्रयलोक पल रहे हैं ॥
ये कह रहे हैं, कि श्याम सुन्दर, अधम उधारण बने कहां से ।
खिताब हमसे ही नाथ लेकर, हमीं से फिर क्यों बदल रहे हैं ॥
गरीब अधर्मों के तुम प्रेमी, ये बात मुद्दत से सुन रहे हैं ।
इसी भरोसे पै तुमसे भगवान झगड़ रहे हैं, मचल रहे है ॥
हमारा प्रण है कि पाप कर ले, तुम्हारा प्रण है कि पाप हर लें ।
तुम अपने वादे से टल रहे हो, हम अपने वादे पै चल रहे हैं ॥
नहीं है आंखों की अश्रु धारा, तुम्हारी उल्फत का ये असर है ।
पड़े थे पापों के दिल में छाले, जो 'बिन्दु' बनकर निकल रहे हैं ।

पद४८

उम्मीद है कि उनके हम खाक सार होंगे ।
जो प्रेमियों के प्यारे जीवन अधार होगे ॥
वैसे तो उनके प्रेमी लाखों हजार हेंागे ।
पर हमसे दीन दुर्बल, बस दो ही चार हेंागे ॥
गर बार-बार उनकी नजारों में ख्वार हेंागे ।
फिर भी गुलाम उनके, हम बार-बार हेंागे ॥
जीतेगें हम जो उनसे जीवन निसार हेंागे ।
हारेंगे हम जो उनसे तो गले हार हेंागे ॥
उनके चरण की नौका पाकर, सवार हेंागे ।
वो 'बिन्दु' भी किसी दिन भवसिन्धु पार हेंागे ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पद ४६

मुझसे अधम अधीन उधारे न जायेंगे।
तो आप दीन-बन्धु पुकारे न जायेंगे॥
जो बिक चुके हैं और खरीदा है आपने।
अब वे गुलाम गैर के द्वारे न जायेंगे।
पृथ्वी के भार आपने सौ बार उतारे।
क्या मेरे पाप भार उतारे न जायेंगे॥
खामोश हूंगा मैं भी अगर आप ये कहदें।
अब तुमसे पातकी कभी तारे न जायेंगे॥
तब तक न चरण आपके सन्तोष पायेंगे।
दृग 'बिन्दु' से जब तक ये पखारे न जायेंगे॥

पद ५०

भोले भक्तों के भाव को, कस भगवान् भुलायेंगे।
यदि नाम पतित पावन होगा, तो पतितों को अपनायेंगे।
अहसान करेंगे क्या हम पर, यदि हमको दास बनायेंगे॥
वे दीनानाथ कहाते हैं, अपनी ही लाज बचायेंगे।
वह दीन भी होगा, करुणाकर, हम पर करुणा बरसायेंगे।
हम रोज अर्ज़ी सुनायेंगे, वह हसकर पास बुलायेंगे।
पतवार नाम की लेंगे हम, भक्ति की वायु चलायेंगे।
इस युक्ति से काया नौका, भवसागर पार लगायेंगे॥
दृग से जल 'बिन्दु' बहायेंगे, स्वामी के पाँव धुलायेंगे।
यह चरणों की रज धो धोकर एक दिन गंगा वन जायेंगे।

पद ५१

लड़गई लड़गई लड़गई होअंखिया लड़गई श्याम सुन्दर से।
बहुत जगत भरमाई आंखें, राम-शरण तव आई आँखें॥
मुख मण्डल पर लड़गई हो लड़गई श्याम सुन्दर से।
दुनियां की रंगत क्या देखें साधारण [सूरत क्या देखें?
राघव छबि में गड़ गयी हो अंखिया लड़गई श्याम सुन्दर से॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पीकर भक्ति नशे की प्याली, छाय गई अखियन में लाली।
नेह पन्थ में बढ़ गई हो, अंखिया लड़गई श्याम सुन्दर से ॥
पुतली पुष्प कली बन आई प्रेम 'बिन्दु' से खूब सिंचाई।
श्याम चरण चढ़गई हो अंखिया लड़गई श्याम सुन्दर से ॥

पद ५२

मन ग्रहण करो अन्तिम उपदेश।
यह देश छोड़कर अबतो जाना है निज देश ॥
अब तक धोके में हो जाना था सब कुछ हो गया।
पाप के बाजार में अपना खजाना खो गया।
किन्तु अब माया तथा मदमोह मत फूलाना ॥
रात्रिदिन श्री कृष्ण राधा के चरण मत भूलना ॥
श्री कृष्ण के भजन से कटते हैं दुख क्लेश।
प्रार्थना ईश्वर से सुख शांतिम हो आप सब।
कृष्ण! करुणाकर! हरणकर ले हृदय के पाप सब।
'बिन्दु' के वचनो का केवल आखिरी यह सार है।
श्याम के सुमिरन बिना यह जिंदगी वेकार है।
हम उसका है सहारा, प्यारा ब्रज का नरेश ॥

पद ५३

भवसागर का रत्न वही है जिसमें कुछ निर्मलता है।
धन्य पुरुष है वही कि जिसका नाम जगत में चलता है।
रामचंद्र श्रीराघव ने इस जग में धर्म प्रकाश किया ?
कर्म वीरता दिखलाकर,खल रावण-वंश विनाश किया ?
केवट भील और कपि कुल को प्रेम प्रथा से दास किया।
इस लिये श्रीराम नाम पर, भारत ने विश्वास किया।
इन नामों से नरजीवन का वृक्ष फूलता फलता है।
धन्य पुरुष है वही कि जिसका नाम जगत में चलता है ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नाम हुआ है बृज में कृष्ण कन्हैया रूप निराले का।
कर्म कियावीरों का जिसने, वेष बनाया ग्वाले का।
चूर्ण किया मद कालिन्दी में, काली विषधर काले का।
अब तक भारत में घर-घर यश छाया बंशी वाले का।
मुख से कृष्ण राम कहते ही, मन का पाप निकलता है।
धन्य पुरुष है वही कि जिसका नाम जगत में चलता है॥
रघु दिलीप शिव से राजो थे, याचकता हरने वाले।
सत्य वचन पर हरिश्चन्द्र, दशरथ से थे मरने वाले।
हनुमान, श्री भरत बिभीषण, भक्ति-भाव भरने वाले।
इन लोगों के नाम हुये, आदर्श अमर करने वाले॥
ऐसे ही सत्यकर्मों से कुछ भूमि भार भी टलता है।
धन्य-पुरुष है वही कि, जिसका नाम जगत मेंचलता है॥
नर की शोभा और बड़ाई धर्मनाम से होती है।
बदनामों के वर्णन में कवियों की कविता रोती है॥
काया क्या है ? सीप, 'बिन्दु' सत्यकर्म सीप का मोती है।
ग्रन्थ-सूत्र में इन्हीं मोतियों को, लेखनी पिरोती है॥
जिसके श्रवण मात्र से जीवन का मार्ग सम्हलता है।
धन्य पुरुष है वही कि जिसका नाम जगत में चलता है॥

पद ५४

अब मन ! भजो श्री रघुपति राम।
पल छिन सुमिरन कर तरो जगत जलधिको,
भरमत फिरत काहे माया के फन्दन में,
तज कपट छल काम ॥ अब मन० ॥
सदा कहो सुखकर दुःखहर धनुधर श्री हरी,
अमित अधम जिन तारे, भक्त रखवारे, दीनके सहारे।
'बिन्दु' विमल गुण ग्राम ॥ अब मन०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पद ५५

मेरे राम । मुझे अपना लेना ।
दुखी दीन को दास बना लेना ॥
ठोकरें खाईं बहुत झूठे जगत के प्यार पर ।
इस लिये आये हैं सीतापति तुम्हारे द्वार पर ॥
अब मुझे तारो न तारो यह तुम्हारे हाथ है ।
गर न तारोगे तो बदनामी तुम्हारी नाथ है ॥
जरा नाम की लाज बचा लेना । मेरे राम मुझे०
नीचगणिका, गज, अजामिल की खबर ली आपने ॥
भक्त द्वारा भिलनी भी मुक्त कर दी आपने ।
भक्त कितने आप पर जीवन निछावर कर गए ।
नाम लेकर आपका पापी हजारों तर गए ॥
उन्हीं अधमों के साथ मिला लेना । मेरे राम मुझे ॥
काम क्रोधादिक लुटेरों का हृदय में वास है ।
पातकों का बोझ है अधमों की संगति पास है ॥
पवन माया की चलीं है भ्रम भँवर रहता है साथ ।
बीच भवसागर में बेड़ा 'बिन्दु' का बहता है नाथ ।
मुझे धार के पार लगा लेना । मेरे राम मुझे० ॥

—❀—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ चौथा भाग ॥

पद ५६

भक्त जन मुदित मन हृदय सुमिरन करो हर हर महादेव, हर० ।
जननि गिरिजा सहित ध्यान शिवका धरो, हर हर महादेव, हर० ।

योग योगेश सर्वेश, आरति हरण,
मंगलकरण, सुभग जिनके युगल चरण ।
अशरण शरण, प्रणत पाल शंकर प्रभो,
हर हर महादेव हर हर महादेव ॥
त्रिपुर-नाशक प्रकाशक सुखद साज के,
त्रासक असुर नीच मति खलसमाज के ।
मदन मद के बिनाशक सदा शिव कहो ।
हर हर महादेव हर हर महादेव ॥
भूताधिपति, राम पद भगति दातार,
शुभ गति सुमति दान पूरण कृपागार ।
संसार-सिन्धु तारक महेश्वर विभो !
हर हर महादेव हर हर महादेव ॥
जयति शुभ नाम सुख धाम अभिराम हर
शोभितललाम, छविचन्द्र शिर गंगाधार ।
स्वीकार 'विन्दु, सेवक का प्रणाम हो ।
हर हर महादेव हर हर महादेव ॥

पद ५७

मन मूरख ! बोल राधा कृष्ण हरे ।
राधा कृष्ण हरे गोपी कृष्ण हरे ।
अधम गज, गीध, गणिका जिसने हस हँस कर उधारे हैं ।
अजामिल से पतित भ जिस पतित पावन ने तारे हैं ॥
उसी का नाम अपने, नीच दासों की खबर लेगा ।
बँधेगा तार सुमिरन का, तो एक दिन तार भी देगा ।
मन मूरख ! बोल राधा कृष्ण हरे ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नहीं कलियुग, ये कर युग है, यहाँ करणी काम ले तू।
वजन पापों का सर पर है, उसे कुछ तो घटा ले तू॥
जो हरिजन बन तो ऐसा बन, कि हरि सुमिरन की हद कर दे
भजन के जोर से, यमराज का खाता भी रद कर दे॥
मन मूरख ! बोल राधा कृष्ण हरे॥
नहीं उनकी नजर पड़ती है, हरि सुमिरन की राहों पर।
पड़ा परदा है, मोती "बिन्दु" का जिनकी निगाहों पर॥
दिखाई उनको क्या भगवान दें जो दिल के गन्दे हैं।
नजर आता नहीं उनको, कि जो आँखों के अन्धे हैं॥॥
मन मूरख ! बोल राधे कृष्ण हरे।

पद ५८

मेरी आँखों में वही दिलदार है,
जिसपै शैदा ये सभी संसार है।
जो अयोध्या में आदर्शधारी बना।
और बृज में जो लीला बिहारी बना।
ऐसे नटवर पे सब कुछ निसार है। हां मेरी०॥
कभी झांकी दिखाई धनुष बान से।
कभी मुरली बजाई मधुर तान से
हर जगह पर वो खुद आशकार है। हां मेरी०॥
कभी बलि के यहां विप्र दुर्बल बना।
द्रौपदी के लिये वस्त्र बादल बना।
कभी खम्भे से लेता अवतार है। हां मेरी॥
कभी कञ्चन की लङ्का लुटाता फिरे।
कभी गोकुल में माखन चुराता फिरे।
हर चमन में उसी की बहार है। हां मेरी०॥
जो कि वाराह, वामन, परशुराम है।
जो कि घनश्याम है और जो राम है।
दीन दृग 'बिन्दु' से जिसको प्यार है। हां मेरी॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पद ५९

ओ पर्दा नशी तेरी, हर शक्ल सही में हूं।
है झूठ तो बता दे, किस शै में नहीं हूं ॥
रवि चन्द्र, सितारों में, जल थल में, पहाड़ों में।
जलवा है जहाँ तेरा, मौजूद वहीं में हूं॥
सृष्टि के दो भागों में, दोनों ही बराबर हैं।
आजाद कहीं तू है, आबाद कहीं मैं हूं॥
इस बागे जहाँ से ही मिलता है पता मुझको।
हर हर में यही तू है हर गुल में यही मैं हूं॥
यह 'बिन्दु' भी मिलता है, जब नूर समन्दर से।
फिर कौन जुदा किससे जो तू है वही मैं हूं॥

पद ६०

तरीका अब नया अपनी सेवा का दिखायेंगे!
युगल सरकार की तस्वीर आँखों में खिचायेंगे॥
जमाकर लालसा गद्दी, लगाकर भाव की तकिया।
जगाकर ज्योति जपकी मन के अन्दर में बिठायेंगे॥
मनोहर छन्द तागों में, सुमन शब्दों को गूथेंगे।
बसाकर इत्र, रसका काव्य की माला पेन्हायेंगे॥
जलाकर आरती अनुराग में, कपूर कर्मों का।
पुजारी प्रेम के द्वारा, उचित पूजन करायेंगे॥
गिराकर 'बिन्दु' आँखों से बहायेंगे नदी गंगा।
तुम्हें नहला के इसमें फिर हम गोते लगायेंगे॥

पद ६१

दास रघुनाथ का सुत का सखा,
कुछ इधर भी रहा कुछ उधर भी रहा।
सुख मिला श्री अवध और बृजबास का
कुछ इधर भी रहा कुछ उधर भी रहा॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मैथिली ने कभी मोद मोदक दिया,
राधिका ने कभी गोद में ले लिया।
मातृ सत्कार में मग्न होकर सदा
कुछ इधरभी रहा कुछ उधर भी रहा॥
खूब ली है प्रसादी अवध राज की,
खूब जूठन मिली यार बृजराज की।
भोग मोहन छका, दूध माखन चखा,
कुछ इधर भी रहा कुछ उधर भी रहा॥
उस तरफ द्वार दरवान हूं राज़ का,
इस तरफ दोस्त हूं दानी सिरताज का।
घर रखता हुआ जर लुटाता हुआ,
कुछ इधरभी रहा कुछ उधरभी रहा॥
कोई नर या इधर या उधर ही रहा,
कोई नर ना इधर ना उधर ही रहा॥
'बिन्दु' दोनों तरफ ले रहा है जमाँ,
कुछ इधर भी रहा कुछ उधर भी रहा॥

पद ६२

करना है कुछ तुमको विहार आंखों से,
देखते रहो बृज की लहर आँखों से।
थे खड़े कदम के तले नन्द के लाला,
था बना अनोखा नटवर वेष निराला।
जिसने भी कुछ पी लिया रूप मधु प्याला,
पल भर में ही बन गया मस्त मतवाला।
दिल बोल उठा यह बार बार आँखों से,
देखते रहो बृ ज की बहार आंखों से।
मैंने चाहा मोहन को ग ले लगाना,
मोहन मुझसे कुछ करने लगे बहाना॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मने ये कहा सांवले भाग मत जाना,
तुमको है मन मन्दिर में आज बिठाना ॥
हँस कर बोले घनश्याम यार आँखों से।
देखते रहो बृज की बहार आँखों से ॥
इस काया को ही बृज की भूमि बना लो।
इस मानस को ही बृन्दावन ठहरा लो ॥
भावना पुञ्ज में सेवा कुँज सजा लो।
राधिका भक्ति घनश्याम प्रेम प धरा लो ॥
फिर 'विन्दु' बहादो जमुनाधार आंखों से।
देखते रहो बृज की बहार आंखो से ॥

पद ६३

हमारी बार तुम निकले जो मन-मोहन सनम झूठे।
तो सरदारी के सुन्दर नाम कर देंगे हम झूठे ॥
जो कदमो ने तुम्हारे तरू शिला केवट उधारे थे।
तो अब कलिकाल में करते हो क्यो साबित कदम झूठे ॥
पतित से पतितपावन का मिला क्या खूब जोड़ा है।
न तुम सच्चों में कम सच्चे, न हम झुठो में कम झूठे ॥
पढ़ा है हमने ग्रन्थो में कि तुम अधमो के प्रेमी हो।
बता दो ग्रन्थ झूठे हैं कि तुम झूठे कि हम झूठे ॥
जो करूणासिन्धु कर दो 'बिन्दु' पर करुणोनजर कुछ भी।
तो कर झगड़ा हो मिट जाये न तुम झूठे न हम झूठे ॥

पद ६४

हाजिर है सरकार जनों के लिये

निराकार निर्गुन होकर भी बन जाते सरकार, जनों के लिये।
दुर्योधन के महल त्यागकर गये विदुर के द्वार, जनों के लिये ॥
निज साकेत बिहार छोड़कर प्रगटे कारागार, जनों के लिये।
राज्य त्याग कर बन २ भटके जगपति जगदाधार, जनो के लिये ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नरसी हुण्डी हेतु बन गये साँवले साहुकार, जनो के लिये।
अश्रु 'बिन्दु' माला को प्रभु ने कर लिया मुक्ताहार, जनो के लिये

पद ६५

दिखा देते हो रुख जब सांवले सरकार थोड़ा सा।
तो भर लेती हैं आंखें शर्बते दीदार थोड़ा सा॥
ये खिल जाते हैं जब आंसू के कतरे पुष्प बन २ कर।
खिला देते हैं दिल में प्रेम का गुलजार थोड़ा सा॥
जरा मस्ती के झोको में हिलो आँखें ले हिलते ही।
छलक पड़ता है प्यालो से तुम्हारा प्यार थोड़ा सा॥
चले बिकने ये अश्को से गुहर मुझसे ये कहकह कर।
कि अब देखेंगे करुणासिन्धु का बाजार थोड़ा सा॥
गिरे दृग 'बिन्दु' पृथ्वी पर तो बन कर हम यूं बोले।
पतित पावन से लिखवाते हैं हम इकरार थोड़ा सा॥

पद ६६

छोड़ बैठा है सारा जमाना मुझे।
नाथ अब आपही दो ठिकाना मुझे॥
पातकों की घटा घोर घमशान है।
और जग सिंधु का बेग बलवान है॥
काम, मद, क्रोध माया का तूफान है।
देह जलयान का जीर्ण सामान है॥
चाहते हैं ये मिलकर डूबाना मुझे नाथ आप ही दो० ॥
क्या तुम्हें दीन गज ने पुकारा नहीं।
क्या दुखी गीध था तुमको प्यारा नहीं॥
क्या यमन पिंगला को उबारा नहीं।
क्या अजामिल अधम तुमने तारा नहीं॥
फिर बनाते हो क्योंकर बहाना मुझे नाथ, अब आपही दो० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

किसके कदमों पे नीचा ये सर मैं करूँ ।
आह का किसके दिल पर असर मैं करूं ॥
किसका घर है कि जिसपर घर मैं करूँ ।
अश्रु के 'बिन्दु' किसकी नजर मैं करूं ॥
आखिरी ये है बिनती सुनाना मुझे नाथ अब आप ही दो० ।

पद ६७

दरश दिखलादो राजिव नैन ।
पड़त नहीं अब एक घड़ी पल चैन ।
लगी है जब से लगन दिल ही और हो बैठा ॥
न भूख प्यास है जीने से हाथ धो बैठा ॥
जो एक बार रूप माधुरी को पी जाऊँ ।
तो इसमें शक नहीं मरता हुआ भी जी जाऊँ ॥
दहता तन बिरहानल दिन रैन दरश दिखला दो०
जो प्राण जाना ही चाहें तो इस तरह जायें।
कि मेरे सामने करुणानिधान आ जायें ॥
कहूं मैं उनसे कि सवस्व दे चुका तुमको ।
वो यह कहें कि शरण अपनी ले चुका तुमको ॥
सुनें ये रस 'बिन्दु' भरे मृदु बैन दरश दिखलादो०॥

पद ६८

अब तो सुनलो पुकार, वृज के बसैया कन्हैया मेरे ।
हजारों अर्जियाँ दरख्वास्त पेश कर दी हैं ।
उन्हीं में पापों की मिसलें भी साथ धर दी हैं ॥
हुजूर जल्द मुकदमों का तपसेहा कर दो ।
तभी है मुन्सिफी जब दास को रिहा कर दो ॥
हो सदा जै जै कार करुणा करैया कन्हैया मेरे ॥
मै जग समुद्र में पहिले ही से डूबा हूं ! मगर ।
बहा रहे ये दृग 'बिन्दु' दूसरा सागर ।
भरोसा अब तो है तरनेका उन्हीं के बल पर ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कि जिनके नाम ने तेरा दिये पत्थर जल पर ।।
करदो पलभर में पार, जीवन की नइया खेवइय्या मेरे

पद ६६

अफसोस मूढ़ मन तू, मुद्दत से सो रहा है।
सोचा न यह कि घर में अन्धेर हो रहा है।
चौरासी लाख मंजिल, तय करके मुश्किलों से।
जिस घर को तूने ढूँढ़ा, उस घर को खो रहा है।
घट में है ज्ञान गंगा उसमें न मारा गोता।
तृष्णा के गन्दे जल में, इस तन को धो रहा है।
अनमोल स्वांसा तेरी, पापों में जा रही है।
रत्नों को छोड़ कंकड़ और काँच ढो रहा है ।।
संसार सिन्धु से तू क्या खाक पार होगा।
विषयों के 'विन्दु' में जब किश्ती डुबो रहा है।

पद ७०

हमारे मन हरि सुमिरन धन भावै
मन में बन्द करै तो उसको कोई देख न पावै।
बाहर खोल धरै जो उसको कोई नहीं चुरावै ।।
हमारे मन० ।

घटने का तो नाम न लावै हरदम बढ़ता जावै ।।
भाई बेटा संगी साथी कोई नहीं बटावै ।।
हमारे मन० ।

पानी चाहे जैसा बरसे उसको नहीं गलावै ।।
अग्नी चाहे जैसी सुलगे उसको नहीं जलावै ।
हमारे मन० ।

आंधी नहीं उड़ावै उसको धरती नहीं समावै ।
ऐसो आत्म 'बिन्दु' धन पाकर शाहंशाह कहावै।।
हमारे मन० ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पद ७१

रे मन ! ये दो दिन का मेला रहेगा।
कायम न जग का झमेला रहेगा।।
किस काम का ऊँचा जो महल तू बनायेगा।
किस काम का लाखों का जो तोड़ा कमायेगा।।
रथ हाथियों का झुण्ड भी किस काम आयेगा।
तू जैसा यहां आया था, वैसा ही जायेगा।।
तेरे सफर में सवारी के खातिर,
कन्धों पै ठठरी का ठेला रहेगा।
रे मन ! ये दो दिन का मेला रहेगा।।
कहता है ! ये दौलत कभी आयेगी मेरे काम।।
पर यह बता ? धन हुआ भला किसका गुलाम।
समझा गये उपदेश हरिश्चन्द्र, कृष्ण' राम।।
छूटेगी संपत्ती यहाँ की यहीं पर तेरी कमर में न धेला रहेगा
रे मन ये दो दिन का मेला रहेगा।।
साथी है मित्र गंगा के जल 'विन्दु' पान तक।।
अर्धाङ्गिनी बढ़ेगी तो केवल मकान तक।।
परिवार के सब लोग, चलेंगे मकान तक।
बेटा भी हक निभायेगा, तो अग्निदान तक।।
इसके तो आगे भजन ही है साथी,
हरि के भजन बिनु अकेला रहेगा।
रे मन ! ये दो दिन का मेला रहेगा।।

पद ७२

मोहन प्रेम बिना नहीं मिलता, छाहे कर ले कोटि उपाय।
मिलै न जमुना सरस्वती में, मिलै न गंग नहाय।
प्रेम सरोवर में जब डूबे प्रभु की झलक लखाय।। मोहन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मिले न पर्वत में, निर्जन में, मिले न बन भरमाय।
प्रेम बाग घूमे तो हरि को, घट में ले पधराय ॥ मोहन॥
मिलै न पण्डित को, ज्ञानी को, मिलै न ध्यान लगाय।
ढाई अक्षर प्रेम पढ़े तो, नटवर नयन समाय ॥ मोहन०
मिलै न मन्दिर में मूरति में, मिलै न अलख जगाय।
प्रेम "बिन्दु" दृग से टपकत तो, तुरत प्रगट हो जाय ॥मोहन०॥

पद ७३

जग में सुन्दर हैं दो नाम, चाहे कृष्ण कहो या राम।
एक हृदय में प्रेम बढ़ावै, एक पाप के ताप हटावै।
दोनों सुख के सागर हैं, दोनों हैं पूरण काम ॥
चाहे कृष्ण कहो या राम ॥
माखन बृज में एक चुरावे, एक बेर शबरी घर खावै।
प्रेम भाव से भरे अनोखे, दोनों के हैं काम ॥
चाहे कृष्ण कहो या राम
एक कंस पापी संहारे, एक दुष्ट रावण को मारे।
दोनों हैं अधीन दुख हर्ता, दोनों बल के धाम ॥
चाहे कृष्ण कहो या राम।
एक राधिका के संग राजे, एक जानकी संग विराजे।
चाहे सीता राम कहो या बोलो राधेश्याम ॥
चाहे कृष्ण कहो या राम ॥
दोनों हैं घट घट के वासी, दोनों हैं आनन्द प्रकाशी,
'बिन्दु' सदा गोबिन्द भवन से, मिलता हैं बिश्राम ॥
चाहे कृष्ण कहो या राम ॥

—:॥:—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ पाँचवा भाग ॥

पद ७४

अहो उमापते अधीन भक्त की व्यथा हरो ।
दयालु विश्वनाथ दीन दास पै दया करो ॥
तुम्हीं अशक्त के लिये समर्थ हो अपार हो ॥
तुम्हीं अनादि काल से अनन्त हो अपार हो ॥
तुम्हीं अथाह सृष्टि सिन्धु मध्य कर्णधार हो ।
तुम्हीं करो सहाय तो शरीर नाव पार हो ॥
प्रभो। अधीन मलिन है न पाप चित्त में धरो ।
दयालु विश्वनाथ दीन दास पै दया करो ॥
अनेक पातकी सदा अशुद्ध कर्म जो किये ।
परन्तु एकबार शम्भु नाम प्रेम से लिये !
गये समस्त शम्भु धाम ध्यान शम्भु में दिये ।
अनाथ के न नीचे मर्म नाथ लेख में लिये ।
दयालु बिश्वनाथ दीन दास पै दया करो ॥

पद ७५

अजब है यह दुनियाँ बाजार ।
जीव जहाँ पर खरीददार है ईश्वर साहूकार ॥ अजब०॥
कर्म तराजू रैन दिवस, दो पलड़े तोलें भार ।
पाप पुण्य के सौदे से ही होता है ब्यापार ॥ अजब०॥
बने दलाल फिरा करते हैं कामादिक बटमार ।
किन्तु बचाते हैं उनसे, ज्ञानादिक पहरेदार ॥ अजब० ॥
गिनकर थैली स्वांस रत्न की सम्हला दी सौ बार ।
कुछ तो माल खरीदा नगदी, कुछ कर लिया उधार ।अजब॥
भरकर जीवन नाव चले, आशा सरिता के पार ।
कहीं 'बिन्दु' भर छिद्र हुआ तो डूब गये मझधार ॥अजब०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दादरा पद ७६

मैं घनश्याम का बावला हो रहा हूं।
कभी हंस रहा हूं कभी रो रहा हूं॥
जो आंखों से हरदम निकलते हैं मोती।
ये तोहफा उन्हीं के लिये ढो रहा हूं॥
न रहा जाय कालिख लगी कुछ इसी से।
विरह जल में मल मल के दिल धो रहा हूं॥
नहीं अश्रु के 'बिन्दु' गिरते जमी पर।
ये कुछ प्रेम के बीज मैं बो रहा हूं॥

पद ७७

प्रभो अपने दरबार से अब न टालो।
गुलामी का इकरार मुझसे लिखालो॥
दोहा—दीनानाथ अनाथ का, भला मिला संयोग।
अब यदि तारोगे नहीं, हंसी करेंगे लोग॥
है बेहतर की दुनियां की बदनामियों से।
बचो आप खुद और मुझको बचालो॥
दोहा—पशु निषाद खग भीलनी, नीच जाति कुल नाम।
बिना योग जप तप किये गये तुम्हारे धाम॥
ये जिस प्रेम के सिन्धु में जा मिले हैं।
उसी सिन्धु में 'विन्दु' को भी मिला लो॥

पद ७८

उल्फत नशे का जिस दम सच्चा सुरूर होगा।
परमात्मा उसी दम, जाहिर ज़ुरूर होगा।,
अधमों की अधमता पर, खुश हो अधम उधारण।
फिर क्यो न अधमता पर हमको गुरूर होगा॥
हैरशै में उसकी सूरत उस दिन झलक पड़ेगी।
जिस दिन दुई का परदा इस दिल से दूर होगा॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लग जायगी जो उसके कदमों की एक ठोकर।
पापों का सख्त पुतला पलभर में चूर होगा॥
गर अश्रु 'बिन्दु' यूं ही बरसेंगे तो बिला सक।
वन्दे के सामने खुद हाजिर हजूर होगा॥

पद ७६

घनश्याम तुमको यह अर्ज है, कुछ ऐसा मेरा सुधार हो।
इस तन में मेरी तलाश हो, इस मन में तेरा ही प्यार हो॥
तेरी चाह में ही चढ़ा रहूं, तेरे द्वार पर ही पड़ा रहूं।
कदमों पै तेरे अड़ा रहूं चाहे कष्ट मुझ पै हजार हो॥
तेरी याद दिल में किया करूँ, तुझे धन्वाद दिया करूँ।
तेरा नक़द नाम लिया करूँ ये रकम मुझपै उधार हो॥
तेरे ध्यान में तू फंसा रहे, रग रग में तू ही बसा रहे।
अनुराग का वह नशा रहे, दिन रात का न शुमार हो॥
चले प्राण तन से जो ऊबकर, अहसाँ ये मुझपे तू खूब कर।
तेरे प्रेम सिन्धु में डूबकर, भव सिन्धु 'बिन्दु' भी पार हो॥

पद ८०

रे मन मूरख कब तक, जग में जीवन व्यर्थ बितायेगा।
राम नाम नहिं गायेगा, तो अन्त समय पछतायेगा॥
जिस जग में तू आया हैं, यह एक मुसाफिर खाना है।
सिर्फ रातभर रुककर इसमें सुवह सफर कर जाना है॥
लेकिन यह भी याद रहे, स्वासों का पास खजाना है।
जिसे लूटने को कामादिक, चोरों ने प्रण ठाना है॥
माल लुटा बैठ तो घर जाकर क्या मुँह दिखलायेगा।
राम नाम नहिं गाएगा, तो अन्त समय पछतायेगा०
शुद्ध न की वासना हृदय की बुद्धि नहीं निर्मल की है।
झूठी दुनियादारी से, क्या ? आशा मोक्ष के फल की है।
अभीं भी कर जो करना हो, क्यों देर आज और कलकी है
तुमको क्या है खबर जिन्दगी, तेरी कितने पल की है॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जम के दूत घेर जब लेंगे, तब क्या धर्म कमायेगा ।
राम नाम नहिं गायेगा, तो अन्त समय पछतायेगा ॥
पहुंच गुरू के पास ज्ञान के दीपक का उजियाला ले ।
कण्ठी पहन कण्ठ में जप की, कर सुमिरन की माला ले ।
खाने को दिलदार रूप का, रसमय मधुर नेवाला ले ।
पीने को प्रीतम प्यारे के, प्रेम तत्व का प्याला ले !
यह न किया ! तो आँखों से, आँसू के 'बिन्दु, बहायेगा ।
राम नाम नहिं गायेगा तो, अन्त समय पछतायेगा ।

पद ८१

न किया जिसने भजन राम का वो नर कैसा ।
बसा न जिसमें सुघर श्याम तो वो घर कैसा ॥
जो व्यर्थ नाच तमाशों में सिर्फ होता रहा ।
नलुटा सन्तों के सत्कार में वो नर कैसा ॥
ये जग के लोग तो खुश हो के वाहवा करदें ।
मगर न खुश हो जगत के नाथ वो नर कैसा ॥
गरज के वास्ते लाखों के दर पै झुकता रहे ।
न दीन बन्धु के दर पर झुके वो नर कैसा ॥
असर हजार दिलों में ये अश्रु 'बिन्दु, करे ।
न हो दयाल के दिल पर तो वो असर कैसा ॥

पद ८२

खबर क्यों न लेंगे मेरी नन्दकुमार
नन्दकुमार प्यारे कान्हा दिलदार । खबर०
पतित-बंधु अब मुझसे बढ़कर पतित और क्या पायेंगे ।
तारेंगे फिर भी न मुझे, तो कमलाकर पछतायेंगे ॥
कीर्ति गँवायेंगे अपनी. दुनियाँ में नाम हँसायेंगे ।
अधमो को अधमोद्धारक क्या मुख अपना दिखलायेंगे ॥
खबर क्यों न लेंगे मेरी नन्दकुमार

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शबरी गीध, निषाद निशाचर, जो जो हरि दरबार गये।
यह सब छोटे पापी थे जिसको पल भर में तार गये॥
मुझसा महा अधम देखा तो भूल सभी इकरार गये।
अब या तो तारें मझको, या कह दें हम हार गये॥
खबर क्यों न लेंगे मेरी नन्दकुमार॥
दर पर दास बैठकर सच्ची श्रद्धा पर तुल जायेगा।
सरल हृदय करुणानिधान का थाहों से धुल जायेगा।
अश्रु 'बिन्दु" द्वारा बहकर मन का मल धुल जायेगा।
तभी पतित पावन के घर का दरवाजा खुल जायेगा॥
खबर क्यों न लेंगे मेरी नन्दकुमार॥

पाठ ८३

क्यूँ ये कहते हो घनश्याम आते नहीं!
सच्चे दिल से उन्हें तुम बुलाते नहीं।
क्यूँ ये कहते हो कुछ भोग खाते नहीं?
भीलनो भाव से तुम खिलाते नहीं।
क्यूँ ये कहते हो गीत सुनाते नहीं।
पार्थ सी धारण तुम दिखाते नहीं।
क्यूँ ये कहते हो लज्जा बचाते नहीं।
द्रौपदी सी बिनय तुम सुनाते नहीं।
क्यूँ ये कहते हो नर तन बनाते नहीं।
प्रेम के 'बिन्दु" दृग से गिराते नहीं।

पद ८४

तूने किया न हरि का ध्यान, जग में जन्म व्यर्थ ही बीता।
पाकर सुख सम्पति सम्मान बजते डंके और निशान।
लेकिन सब है धूल समान, यदि तू रटै न रघुबर सीता।
करता है वेदान्त बखान, बनाता है शिक्षक विद्वान।
पर वह झूठा है सब ज्ञान, जब तक काम क्रोध नहिं जीता।
रचता है तू जाल विधान, गृह में खिंचती कलह कमान।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

फिर भी रखता यह अभिमान, पढ़ता हूं रामायण गीता।
ठाने जप तप मख हठ दान जो है साधन कठिन महान॥
जिसमें सहज मिलै भगवान ऐसा प्रेम 'बिन्दु' नहिं पीता।

पद ८५

कृष्ण प्यारे को नहीं तूने जाना रे
रहा दुनियाँ में हरदम दिवाना रे।
झूठ कपट व्यवहार में किया सवेरा शाम।
एक बार भी प्रेम से लिया न हरि का नाम॥
इसमें करता है लाखों बहाना रे। कृष्ण०।
धन दौलत से एक दिन खाली होगा हाथ।
अन्त समय भगवान का भजन चलेगा साथ।
भर ले भक्तों का दिल में खजाना रे॥ कृष्ण०।
जो करना है जल्द कर क्यों बैठा है मौन।
पल-पलमें तो प्रलय है कल की जाने कौन।
व्यर्थ अब तो न जीवन गँवाना रे। कृष्ण०।
कहीं न उसको ढूँढ़, तू करले यह विश्वास।
प्रेम 'बिन्दु' को देखकर आता है प्रभु पास।
इससे बढ़कर है क्या समझाना रे। कृष्ण०।

पद ८६

प्रबल प्रेम के पाले पड़कर प्रभु को नियम बदलते देखा।
उनका मान भले, टल जाये, जनका मान न टलते देखा।
जिनकी केवल कृपा दृष्टि से, सकल सृष्टि को पलते देखा।
उनका गोकुल के गोरस पर सौ-सौ बार मचलते देखा।
जिनके चरण कमल कमलाके करतलसे न निकलते देखा।
उनको बृज करील कुञ्जोंमें कण्टक पद पर चलते देखा।
जिनका ध्यान, विरचि शंभु, सनकादिक से न सम्हलते देखा।
उनको ग्वाल सखा मण्डल मे लेकर गेंद उछलते देखा॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जिनकी बंक भृकुटी के भय से सागर सप्त उबलते देखा ॥
उनको ही यशुदा के भय से अश्रु 'बिन्दु' दृग ढलते देखा ॥

पद ८७

घनश्याम जिसे तेरा जलवा नजर आता है।
उससे ये कोई पूछे क्या नजर आता है॥
हरजाँ तूही रौशन है हरशै में तेरी लौ है।
हरदिल में तेरी सूरत पर शैदा नजर आता है॥
हैरान हैं नजरें भी गैर को क्या देखें।
नजरों में भी तेरा ही नकशा नजर आता है॥
बतलायें किसे क्या हम ? क्या है कद्र आँसू की।
एक 'बिन्दु' उल्फत का दरिया नजर आता है॥

पद ८८

पाप लाखों के जो तू हर गया बंशी वाले।
तो मेरे पाप से क्यों डर गया बंशी वाले॥
डूबने वाला हूं भवसिन्धु में कुछ देर नहीं।
क्योंकि पापों का घड़ा भर गया बंशी वाले॥
नाम पर तेरे न हो कैसे भरोसा मुझको।
जब अजामिल सा अधम तर गया बंशी वाले॥
इसलिये भेंट में देता हूं अश्रु 'बिन्दु' तुझे।
कद्र इनकी तू भी कर गया बंशी वाले॥

पद ८९

जिस पर ये दिल फिदा है दिलदार वो है निराला।
हर दिल अजीज भी है, हर दिल का है वो उजाला॥
क्या है वो, क्या नहीं हैं झगड़ा ये दूर हो जब।
होता है तब वो जाहिर परदे में छिपने वाला॥
खम्भे से, मूर्ति से, जल सिन्धु से, जमीं से,।
पल भर में निकल आया जिसने जहाँ निकाला॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जर्रों में, पहाड़ों में, कतरों में, बादलों में।
अदना है 'बिन्दु' से भी है सिन्धु से भी आला

पद ६०

नक्शा है दिल पै तस्वीर घनश्याम की।
और जबाँ पर है तकरीर घनश्याम की॥
जिसको छूकर शिला नारी भी तर गई।
ढूँढ़ता हूं वो अक्सीर घनश्याम की॥
मस्त गजराज का मन इसलिये बंध गया।
पड़ गई जुल्फे जञ्जीर घनश्याम की॥
इस कदर मेरी आँखें मिली श्याम से।
आ गई इसमें तासीर घनश्याम की॥
'बिन्दु' दृग के नहीं दिल के टुकड़े हैं ये।
चल चुकी इन पै शमशीर घनश्याम की॥

पंद ६१

भक्त बनता हूं मगर अधर्मों का हूं सिरताज भी।
देखकर पाखण्ड मेरा हँस पड़े ब्रजराज भी॥
कौन मुझसे बढ़के पापी होगा इस संसार में।
सुनके पापों की कहानी डर गये यमराज जी॥
क्यूं पतित उनसे कहे सरकार तुम तारो हमें।
हैं पतित पावनती खुद रक्खेंगे अपनी लाज भी॥
'बिन्दु' दृग के दिल हिलादें क्या न दीनानाथ का।
दर्दे दिल भी साथ है और दुख भरी आवाज भी॥

पद ६२

सच पूछो तो मुझको है नही ज्ञान तुम्हारा।
पर दिल में रहा करता है कुछ ध्यान तुम्हारा॥
माना कि गुनहगार हूं पापी हूं अधम हूं।
सब कुछ हूं मगर किसका हूं ! भगवान तुम्हारा॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

फरियाद अश्क आहको, गर चाह है तुमको ।
इस तन में है मौजूद ये सामान तुम्हारा ॥
लाजिम है तुम्हे तारना भक्ति के बिना भी ।
भक्ति से जो तारा तो क्या अहसान तुम्हार ॥
अधमो की किया करते हो गर मेहमानबाजी ।
तो 'बिन्दु' भी सरकार है मेहमान तुम्हारा ॥

पद ६३

रे मन दीवाने नटवर श्याम पुकार ।
नटवर श्याम पुकार रघुबर राम पुकार ॥
जो मूढ़ श्याम सुन्दर का भजन करेगा नहीं ।
तो भव समुद्र से तू जन्म भर तरेगा नहीं ॥
जो तू पुकारेगा उसको तो खबर लेगा ।
पकड़ कर हाथ तुझे पल में पार कर देगा ॥
उसका नाम जगत जीवों का करता है निस्तार ।
नटवर श्याम पुकार ॥
दुःखी जनों को उसी श्याम का सहारा है ।
उसी को दीन अनाथों का प्रेम प्यारा है ॥
उजड़ती देखी जो वस्ती वो बसाई उसने ।
हमेशा लाज गरीबों की बचाई उसने ॥
'बिन्दु" वही भक्तों के कारण लेता है अवतार ।
नटवर श्याम पुकार ॥

पाठ ६४

बैठे हो कहाँ रूठ के बृजधाम बसइया ।
दिखला दो दरश अब तो हे बृजराज कन्हैया
है कितनी शर्म गर आनन्द उपजाओ न करुणाकर ।
पुकारें दीन तुमको और तुम आओ न करुणाकर ॥
अधम तारे हजारों तुमने लेकिन हमको तारो तो ।
जो करुणा सिन्धु हो, भव सिंधु से हमको उबारो तो ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देख तो भला कैसे हो गिरवर के चढइया।
दिखो दो दरश अब तो बृजराज कन्हैया ॥
तुम्हारे हर कदम पर अपनी हम आंख बिछा देंगे।
जो आओगे हमारे पास तो दिल में बिठा लेंगे ॥
मगर ऐसा न हो यह प्रार्थना बेकार हो जाये।
दिखा दो वह झलक अपनी कि बेड़ा पार हो जाये।
सुन लो ये बिनय 'बिन्दु' की फरियाद सुनइया।
दिखलादो दरश अब तो हे बृजराज कन्हैया ॥

—❀—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

❀ छठवां भाग ❀

पद ६५

❀ प्रार्थना ❀

जय जय जय जन संकट हारी, महिमा प्रभु अगम तुम्हारी।
सकल लोक संचालक पालक, मोहन मदन मुरारी ॥
अविचल, अमल असुर दल नाशक, मायापति मनहारी।
महिमा प्रभु ! अगम तुम्हारी ॥
जगधर, बिशम्भर, मुरलीधर करुणाकर बनवारी।
कमलापति, कमलाक्ष, कृपानिधि, चक्र सुदर्शन धारी ॥
महिमा प्रभु ! अगम तुम्हारी ॥
जय गोविन्द, गुणाकर गुणनिधि 'बिन्दु' विश्व हितकारी।
निराकार साकार, अलख, लख अगुण सगुण अवतारी ॥
महिमा प्रभु ! अगम तुम्हारी ॥

पद ६६

बेकार कोई करता है क्यों ? तकरार हमारी आंखों से।
वह खुद देखें सांवलिया दिलदार हमारी आंखों से।
होगा वह निराकार, निर्गुण निरंजन भी होगा।
हमको दिखलाई पड़ता है, साकार हमारी आंखों से ॥
वह कैसी छटा अनोखी है, वह कैसा रूप मनोहर है।
इन बातों का ले ले कोई इजहार हमारी आँखों से ॥
यह कैसे माने हम उसका कुछ नामों निशाया पतानहीं
जब दिल में आया करता है, सौ बार हमारी आँखों से
गर उसे देखना चाहो तो, कुछ 'बिन्दु' आँसुओं के देखो
कतरे कतरे में लेता है, अवतार हमारी आंखों से ॥

पद ६७

कोशिश हजार करके भी ढूँढ़े जो उम्र भर।
तुम क्या हो ? क्या नहीं हो ? ये होगी नहीं खबर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अजाद हो इतने फिरा करते हो दर बदर ।
पाबन्द हो इतने की हो हर स्वांस के अंदर
जाहिर हो तो इतने हो हर शै में जल्वागार ।
छिपते हो तो इतने कही आते नहीं नजर ॥
फिर दूर होती इतनी कि हो इस अकलसे बाहर
नजदीक हो तो इतने की बनाया दिलमें घर ।
मिलते नहीं लुटाये कोई लाखा सीमों जर ।
मिलते हो गरीबों को तो आंसू के 'बिन्दु' पर ॥

पद ६८

तू नहीं अगर है दिल में तो यह ढांचा बोल रहा है क्यों ?
गर दिल में है तो दिल तुझको हर जगह टटोल रहा क्यों ?
साकार अगर है तो अपना आकार नहो दिखलाता क्यों ?
है निराकार तो झूठे आकारों में डोल रहा है क्यों ?
कुछ वजन अगर है तेरा तो फिर क्यों अनन्त कहलाता है ?
है नहीं वजन तो मिट्टी का पुतला तोल रहा है क्या ?
परदा है नहीं पसन्द तुझे तो परदे में क्यों बैठा है ?
परदे में है तो परदे के बाहर मुंह खोल रहा है क्यों ?
तू 'बिन्दु' रूप भवसागर रचकर भी सागर में न मिला
फिर अपने अंश बिंदु को भी सागर में घोल रहा है क्यों ?

पद ६९

वह दिल ही नहीं जिस दिल में कभी, सांवलिया तेरी याद न हो ।
वह याद नहीं जिसमें तुझसे कुछ जुल्म भरी फरियाद न हो ।
फरियाद नहीं है वह जिसमें हो चाह न तुमसे मिलने को ।
वह चाह नहीं जिसमें कि तेरे आशिक का घर बरबाद न हो ।
बरबादी भी वह क्या ? जिसमें कुछ रुस्वा न सारे बाजार हुए
रुसवाई वह भी क्या ? जिसमें कुछ जोशे जुनूं आबाद न हो
वह जोशे जुनू भी क्या ? जिसमें 'बिंदु' न आंखों से टपके
वह 'बिन्दु' भी क्या ? जिसमें उल्फत दरिया की लहर ईजाद न हो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अड़ा हूं आज तो इस जिद पै कि कुछ पा के हटूँ।
या हार जाऊँ या आपको खुद हरा के हटूँ॥
मुराद मन की पा जाऊँ तो यश बढ़ाके हटूँ।
नहीं तो आपकी घर घर हंसी कराके हटूँ॥
तजुबाँ आपकी बाहों का कुछ उठाके हटूँ।
या करामात मैं आहों की कुछ दिखा के हटूँ॥
या दीनबन्धु से इकरार ही लिखा के हटूँ।
या अश्रु 'बिन्दु' में यह नाम ही डुबाके हटूँ॥

पद १०१

जग असार में सार—रसना हरि हरि बोल।
यह तन तो है झाँझरि नइया।
केवल है हरि नाम खेवइया।
होजा भव से पार—रसना हरि हरि बोल।
अपने तन को बीन बनाले।
प्रेम स्वरों के तार चढ़ाले।।
राम नाम झंकार—रसना हरि हरि बोल।
जीवन कर्ज लिया है तू ने।
चुकत कुछ न किया है तूने॥
ऋण का भार उतार—रसना हरि हरि बोल।
अधिक नहीं कुछ कुछ करले तू।
'बिन्दु' बिन्दु से घट भरले तू॥
भर ले धन-भण्डार—रसना हरि हरि बोल।

पद १०२

जल्वये यार है कहां ? जख्मा दिलो जिगर में है।
मस्ती की मस्त धुन में है, अशिकों की नजर में है॥
मर्दों की सख्त जां में है जालिमों की फना में है।
सच्चों की सच्ची जुवां में है जिन्दा दिलों के जर में है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पहुंचे हुओं की चाहमें भटकते हुओं की राह में है।
बिछड़े हुओं की आह में, उजड़े हुओं के घर में है।
मचले हुओं की मान में, रूठे हुओं की शान में है॥
बहके हुओं की तान में, बहसी दिलों के सर में है।
प्रेम हृदय के धाम में, ज्ञानी के आत्माराम में है॥
पानी के 'बिन्दु' श्याम में बिरह के चश्मेतर में है।

पद १०३

रूठ कर बोलो न घनश्याम तो चारा क्या है।
हाँ मगर कहदो कि दर्शन में इजारा क्या है॥
जो निगाहों को मेरी खुद ही बुलाते हो तुम्ही।
तो बता दो कि भला तेरा इशारा क्या है।
खींच ली आंखोंने जो तस्वीर तुम्हारी जो कहीं।
मेरी तकदीर है अहसान तुम्हारा क्या है॥
अपने गर एक खरीददार से तुम होगे खिलाफ।
इसमें नुकसान तुम्हारा है हमारा क्या है॥
न जलन दिल की मिटाये जो अश्रु 'बिन्दु' कहीं।
तो बिरह आग से बचने का सहारा क्या है॥

पद १०४

ये सांवले को मनाने की राह करते है।
कि जान बूझ के कुछ कुछ गुनाह करते है।
कभी तो यह था कि उनको चाहते थे मगर—
अब उनको चाहने वालों की चाह करते हैं॥
तमाशा ये है कि मुझपर निगाह है लेकिन—
निगाह मेरी बचाकर निगाह करते हैं॥
वो रंजों गम के बहाने जो छड़ते हैं हमें।
तो गोया हमसे सुलह की सलाह करते हैं॥
खफा है लाख मगर "बिन्दु" आंख के लेकर।
सम्हल के देखते हैं वाह-वाह करते हैं॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पद १०५

ये न कहना कि अजो क्या है भला चोरी में।
लो सुनाता हूं तुम्हे जो है मजा चोरी में॥
देखो संसार का सब भेद ढका चोरी में।
और संसार का करतार छिपा चोरी में॥
देह तो जड़ है इसी वास्ते प्रत्यक्ष भी है।
इसमें चैतन्य जो बैठा है कहां! चोरी में॥
"विन्दु" वेद ने भी जिसका कभी पाया न पता।
ग्वाल-बालोंको गोकुल में मिला चोरी में॥

पाठ १०६

या तो जादू का तुझे श्याम! हुनर आता है।
या तेरे चाहने वालों में असर आता है॥
जाता जिस कूचे में हूं तेरा ही घर आता है।
सर झुकोता हूं जहां तेरा ही दर आता है॥
दिल के शीशे में तू इस तौर उतर आता है।
जिस तरफ देखता हूं तू ही नजर आता है॥
"बिन्दु" आंसू का नहीं आंख में भर आता है।
प्रेम सागर से ये अनमोल गुहर आता है॥

पद १०७

विरह की बिरह वेदनायें सुनकर भी भूल जाते हो।
दो चार पलों के जीवन को पल-पल पर क्यों कलपाते हो॥
सीखा है नीर छोड़ना तो कुछ औषधि करना भी सीखो।
यदि घाव नहीं भर सकते तो, क्यों चितवन चोट चलाते हो
पहले ही सोच समझ लेते मैं भला बुरा हूं कैसा हूं।
जब बांह पकड़ ही ली तो फिर अब क्यों वृजराज लजाते हो।
विरहानल में जल जाना भी मेरा तुमको स्वीकार नहीं।
जब अलने लग जाता हूं तो छिप २कर छवि दिखलाते हो॥
इससे भी अधिक मिलेगी पर ऐसी न मिलेगी प्राणेश्वर।
दृग 'बिन्दु' मोतियों की माला क्यों पैरों से ठुकराते हो॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पद १०८

सभी तुमसे कहते हैं हाल अपना।
दिखाते हैं तुमको कमाल अपना अपना ॥
है बाजारे मजहब में हर दिल का सौदा।
बताते है सब सच्चा माल अपना अपना ॥
किसी में तू आकर फँसे, इसलिये सब--
बिछाते हैं सब उल्फत का जाल अपना अपना ॥
भरे सब की आंखो में आंसू के कतरे।
गुहर अपना अपना है, माल अपना अपना ॥
खरीदे हैं दोनों के दृग "विन्दु" तूने।
पसन्द अपनी अपनी ख्याल अपना अपना।

पद १०९

हिन्दू कुल का है सम्मान श्री गोविन्द और गीता से।
सब शुभ गति का है सामान, श्री गोविन्द और गीता से ॥
गीता धर्म शास्त्र की शान।
गीता वैदिक बिमल विधान ॥
मन हो जाता तत्व स्थान।
श्री गोविन्द और गीता से ॥
पाठ गीता का सदा करना कुलोचित कर्म है।
शब्द गीता के सुमिरना ही सनातन धर्म है ॥
चित्त में श्री कृष्ण के सिद्धान्त धरना चाहिये।
हिन्दुओं को नित्य गीता पाठ करना चाहिये ॥
मिलता जिनको गीता ज्ञान।
उनका सब होता प्रस्थान ॥
पाते पद निर्वाण महान।
श्री गोविन्द और गीता से ॥
हैं वो हिन्दू जिसको हिन्दू-जाती का अभिमान हो।
सर्वदा अपने सदाचारो पै जिसका ध्यान हो ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वेद, शास्त्र, पुराण बचनों पर अटल विश्वास हो।
दास हो गोविन्द का गीता की पुस्तक पास हो।
जो जन गाते गीता गान।
उनके हो जाते भगवान।
मिलता अमृत 'बिन्दु' का दान॥
श्री गोविन्द और गीता से।

पद ११०

कौन है गुलशन कि जिस गुलशन में रोशन तू नहीं।
कौन है वह गुल कि जिसमें है तेरी खुशबू नहीं॥
तू है लैला, तू ही शीरीं हज़रते यूसुफ तू ही।
कौन है आशिक जो तेरे इश्क में मजनूं नहीं॥
जब जिलाना मारना भी एक तमाशा तेरा है।
क्यूं न फिर बेखौफ हाथों में तेरे दिल दूं नहीं।
नासमझ था, तब ये, ख्वाहिश थी कि समझूँ तुझे
जब समझ आई तो यह समझा के कुछ समझा नहीं॥
'बिन्दु' कहता है कि मैं ? जब जुदा दरिया से हूं।
मिल गया दरिया में फिर कहता है कि कुछ भी हूं नहीं।

पद १११

संसार के कर्तार को आकार न होता।
तो उसका ये संसार भी साकार न होता।
साकार से जाहिर है निराकार की हस्ती।
साकार न होता तो निराकार न होता।
हम मान भी लेते कि वहदृष्टि से परे है।
आंखो में अगर उसका चमत्कार न होता।
व्यापक ही सही, सब में वो, रहता मगर कहां।
रहने को अगर जिस्स का आधार न होता।
आंखों से निकलते न कभी 'बिन्दु' के मोती।
निर्गुण का सगुण से जो बंधा तार न होता।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पद ११२

जब से घनश्याम इस दिल ,में आने लगे ।
क्या कहें ? रंग क्या क्या दिखाने लगे ॥
आए यूँ ही जो एक दिन टहलते हुये ।
कुछ झिझकते हुये, कुछ सम्हलते हुये ।
चुपके चुपके से दिल लेके चलते हुये ।
मैंने पकड़ा जो बाहर निकलते हुये ।
मोहनी डाल पर मुस्काने लगे ।
क्या कहें० ?
एक दिन उनके आने का बतलाऊं ढब ।
आ गये नैन से हो लगाकर नकब ।
बांध कर ले चले जानों-दिल माल सब
मैंने देखा तो पूछा कि यह क्या गजब ।
कुछ मचल कर वो मुरली बजाने लगे ॥
क्या कहे० ?
एक दिन ख्वाव में ही खड़े आप हैं ।
दिल उड़ाने की धुन में अड़े आप हैं ।
मैं ये बोला कि हजरत बड़े आप हैं ।
क्यूँ मेरे दिल के पीछे पड़े आप हैं ।
चोट चितवन को चितपर चलाने लगे ।
क्या कहे० ?
एक दिन आप आये तो इस तौर से ।
दर्द दिल बन के दिल में उठे जोर से ।
मैंने देखा उन्हे जब बड़े गौर से ।
भागने फिर न पाये किसी ओर से ।
बन गये 'बिन्दु' आँखों से जाने लगे ।
क्या कहें० ?

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पद ११३

वही प्यारा है जिसका हुश्न हर दिल को हिलाता हो।
वही है नूर जो हर दिल की कलियों को खिलाता हो॥
उसे हम इश्क क्या समझें ? जो दिलको तोड़ ही डाले।
वही है इश्क जो बेदर्द दिल से दिल मिलाता हो॥
वो कैसा गम ? जो करवाये शिकायत दिलसे दिलवरकी
वही गम है जो दिल को याद दिलवर की दिलाता हो।
असर वह क्या निगाहों का ? जिसपर मरमिटे आशिक
निगाहों का असर वह है, जो मरते को जिलाता हो॥
वो कैसा "विन्दु" आँसूका जो निकले दिलको तड़फाकर
वो है आँसू जो दिल को सब्र का प्याला पिलाता हो।

पद ११४

चाहे मैं भूलूँ तो भूलूँ मोहन ! तू मत मुझको भूल।
जग प्रपंच का प्रवल पातकी पावन पथ प्रतिकूल॥
अधम अंध हूं' चलता अपनी रुचि के ही अनुकूल।
मोहन ! तू मत मुझको भूल॥
आश्रय हीन सृष्टि तरु से हूं क्या शाखा, क्या मूल।
अभिलाषा यह है बन जाऊँ कल्प वृक्ष का फूल॥
मोहन ! तू मत मुझको भूल।
रक्षा करे न चक्र सुदर्शन, शंकर का न त्रिशूल।
रहे सदा फहराता शिर पर, तेरा पीत दुकूल।
मोहन ! तू मत मुझको भूल॥
काया क्लेशित अश्रु 'बिन्दु' दृग हृदय विरह की शूल।
हे बृजनाथ दीन को दे दे पग तल धूल॥
मोहन ! तू मत मुझको भूल।

—:※:—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ सातवां भाग ॥

पद ११५

❀ प्रार्थना ❀

रे मन ! प्रति स्वांस पुकार यही, जय राम हरे घनश्याम हरे ।
तन नौका की पतवार यही, जय राम हरे घनश्याम हरे ॥
जग में व्यापक आधार यही, जग में लेता अवतार यही ।
है निराकार साकार यही, जय राम हरे घनश्याम हरे ॥
ध्रुब को ध्रुव पद दातार यही, प्रेहलाद गले का हार यही ।
नारद वीणा का तार यही, जय राम हरे घनश्याम हरे ॥
सब सुकृतों का आगार यही, गंगा यमुना की धार यही ।
श्री रामेश्वर हरिद्वार यही, जय राम हरे घनश्याम हरे ॥
सज्जन का साहूकार यही, प्रेमीजन का व्यापार यही ।
सुख 'बिन्दु' सुधा का सार यही, जय राम हरे घनश्याम ॥

पद ११६

न यूं घनश्याम तुमको दुख से घबरा करके छोडूँगा ।
जो छोडूँगा ! तो कुछ मैं भी तमाशा करके छोडूँगा ॥
अगर था छोड़ना मुझको, तो फिर क्यूँ हाथ पकड़ा था
जो अब छोड़ा तो मैं, जाने न क्या २ करके छोडूँगा ॥
मेरी रुसवाइयां देखो ! मजे से शौक से देखो ।
तुम्हें भी मैं सरे बाजार रुसवा करके छोडूँगा ॥
तुम्हें है नाज 'यह बेदर्द रहता है हमारा दिल' ।
मैं उस बेदर्द दिल में, दर्द पैदा करके छोडूँगा ॥
निकाला तुमने ? अपने दिलके,जिस घरसे ? उसी घरपर
अगर द्दग "बिन्दु"जिन्दा है !तो कब्जा करके छोडूँगा ।

पद ११७

हमेशा दीनों को छेड़ कर भी, सुना जो करते हो चार बातें ।
तुम्हें भी यह शौक है कि कोई, सुनायें हम को हजार बातें ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हमारे चिढ़ने में तुमको भगवान, जरूर कुछ लुत्फ आता होगा।
जो सुनते रहते हो हंस के हरदम, कड़ी कड़ी नागवार बातें॥
ये सोचते हो जो बेकसों को, मुसीबतें जल्दी टाल देंगे।
तो फिर सुनायेगा कौन हमको, ये तैश की कर्जदार बातें॥
कहा था किसने ? कि पापियों के उधारने का करार कर लो।
करार जब कर चुके हो, तो फ़िर सुनोगे खुद लाखबार बातें॥
जुबान जब बेरुखी तुम्हारी, बयान करने में थक चुकी है।
तो अश्रु के 'बिन्दु' बनके निकली ये दर्द की बेसुमार बातें॥

पद ११८

तुम्हारी कृपा है तो दुश्मन का डर क्या।
तुम्हारे गुलामों को काफी खतरा क्या॥
शरणों में जो चरणों की सर आ चुका है
खिलाफ उसके कोई उठायेगा सर क्या॥
दया की नजर से जो तुम देखते हो।
करेगी किसी की भला बन्द नजर क्या॥
बनाते हो बिगड़ी हुई बात जब तुम।
बिगाड़ेगा नाचीज कमतर बशर क्या॥
अनाथों के दृग 'बिन्दु' पर तुम न रूठो।
तो कर लेगा सारा जहाँ रूठ कर क्या॥

पद ११९

भजन श्याम सुन्दर को करते रहोगे।
तो संसार सागर से तरते रहोगे॥
कृपा नाथ बेशक मिलेंगे किसी दिन।
जो सत्संग पथ से गुजरते रहोगे॥
चढ़ोगे हृदय पर सभी के सदा तुम।
जो अभिमान गिरि से उतरते रहोगे॥
न होगा अभी क्लेश मन को तुम्हारे।
जो अपनी बड़ाई से डरते रहोगे॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

छलक ही पड़ेगा दयासिन्धु का दिल
जो दृग 'विन्दु' से रोज भरते रहोगे॥

पाठ १२०

गुलाम गर्चे खता बेसुमार करते हैं।
मगर दयालु न उनपर विचार करते हैं॥
जो किसी तौर उन्हें कुछ भी अपनो मान चुका।
उसे वे प्राणों से भी बढ़के प्यार करते हैं॥
कुटिल हो क्रूर हो खल हो मगर है उनसे लगन।
तो उसके ऐबों का वह खुद सुधार करते हैं॥
जो सच्चे दिल से करे एक बार याद उन्हें।
तो दिल में याद उसे लाख बार याद करते हैं॥
जो डूबता हो गुनाहों से 'विन्दु' भंवर में कहीं।
वो उस अधम को भी भवसिन्धु पार करते हैं॥

पद १२१

कुछ दशा अनोखी उनकी बतलाते हैं।
जो मनमोहन के प्रेमी कहलाते हैं॥
जबके दिलदार हुआ सांवरिया प्यारा।
तब से छूटा जग का सम्बन्ध सहारा॥
हर बार हर जगह रुककर यही पुकारा।
है किधर छिपा दिलवर घनश्याम हमारा॥
क्या खबर उन्हें हम कहां किधर जाते हैं।
जो मन मोहन के प्रेमी कहलाते हैं॥ २॥
परवाह नहीं गर तन के वस्त्र फटे हैं।
बिखरे हैं सर के बाल लटपटे हैं॥
सूखे टुकड़े ही खाकर दिवस कटे हैं।
फिर भी स्नेह पथ पर अलमस्त डटे हैं॥
वन वृक्षों को निज दुख सुख समझाते हैं
जो मनमोहन के प्रेमी कहलाते हैं॥२॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जग भोग और उद्योग रोग से माने।
झोपड़े और नए महल एक ही जाने॥
पकवान मिले या मिले चनों के दाने।
दोनों में खुश हैं मोहन के मस्ताने॥
भ्रम शोक मोह मन में न कभी लाते हैं।
जो मनमोहन के प्रेमी कहलाते हैं॥
मिल गई जहाँ पर जगह पड़े रहते हैं
सर्दी, गर्मी, बरसात, धूप सहते हैं॥
खामोश किसीसे कभी न कुछ कहते हैं
रस सिंधु दृगों से प्रेम बिन्दु बहते हैं।
नाचते कभी हँसते रोते गाते हैं।
जो मनमोहन के प्रेमी कहलाते हैं।४॥

पद १२२

सुघर सांवले पर लुभाये हुये हैं।
कि सर्वस्व अपना लुटाये हुए हैं॥
अदा, मुस्कराहट, चलन और चितवन।
ये मेहमान मन में बसाये हुये हैं।
कृपा की नजर उनकी कितनी है मुझपर।
कि घर इस जिगर में बनाये हुए हैं।
न भूलेगा अहसान उनका मेरा दिल।
कि नजरों पै इनको चढ़ाये हुये हैं॥
दृगों के ये दो 'बिन्दु' हैं श्याम इससे।
कि घनश्याम इसमें समाये हुये हैं॥

पद १२३

गर प्रेम की इस दिल में लगी घात न होती।
तो सच है कि मोहन से मुलाकात न होती।
सरकार को नजराने में देता मैं भला क्या?
कुछ पास गुनाहों की जो सौगात न होती।

CC0. In Public Domain KirtiKant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

क्यों होते मुखातिब वो भला मेरी तरफ का,
आहों में कोशिश की जो करामात न होती।
वस दर्दे मुहब्बत का यह सारा तमाशा,
यह दिल में न होता तो कोई बात न होती।
दृग 'बिन्दु' बताते हैं कि घनश्याम है दिल में।
घनश्याम न होते तो ये बरसात न होती।

पद १२४

श्री राम धुन में जबतक, मन तू मगन न होगा
जग जाल छूटने का तब तक जतन न होगा।
व्यापार धन कमाकर तू लाख साज सजले,
होगा सुखी न जबतक सन्तोष धन न होगा।
तप, यज्ञ होम पूजा, व्रत और नेम करले।
सब व्यर्थ है जो मुंखसे हरिका भजन न होगा।
संसार की घटा से क्या ? प्यास बुझ सकेगी।
चातक दृगोंको जबतक, घनश्याम घन न होगा।
तू तोल कर जो देखे आंखों का प्रेम मोती,
एक 'बिन्दु' पर त्रिलोकी भरका वजन न होगा।

पद १२५

हे नाथ ! दयावानों के शिरमौर बतादो।
छोडूं मैं भला आपको किस तौर बतादो।
हाँ शर्त ये करलो, मैं हट जाऊ गा दर से,
अपना सा कृपा सिन्धु कोई और बतादो॥
गर धाम में सरकार के रह सकता नहीं हूं,
तो द्वार पै पड़ने के लिये पौर बतादो।
रैदास, आजामिल, सदन ब्याधा गीध व गणिका,
रहते हो जहाँ मुझको वही ठौर बतादो,
आंसू की झड़ी पर भी बया कुछ नहीं करते।
दृग 'बिन्दु' का कब तक ये चले दौर बतादो॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पद १२६

क्या वह स्वभाव पहला सरकार अब नहीं है !
दीनों के वास्ते क्या दरबार अब नहीं है ॥
या तो दयालू मेरी दृढ़ दीनता नहीं है ।
या दीन की तुम्हें ही दरकार अब नहीं है ॥
पाते थे जिस हृदय से आश्रय अनाथ लाखों ।
क्या वह हृदय दया का भण्डार अब नहीं है ॥
जिससे कि द्विज सुदामा त्रयलोक पा गया था ।
क्या उस उदारता में कुल सार अब नहीं है ॥
दौड़े थे द्वारिका से जिस पर अधीर होकर ।
उस अश्रु'विन्दु' से भी क्या प्यार अब नहीं है ।

पद १२७

जिससे बृजमण्डल का मन गोपाल मनमोहन में है ।
उस मधुर वात्सल्य की झांकी हमारे मन में है ॥
योगियों का तत्व, ब्रह्मानन्द जो वेदान्त का ।
खेलता फिरता यशोदा नन्द के आंगन में है ॥
है अचम्भा सृष्टि के कर्त्तार का भी कर कमल ।
चोर बनकर गोपियों के दूध, दही माखन में है ॥
एक यह कौतुक अनोखा देखिये बृजराज का ।
विश्व जिससे है बँधा ऊखल के वह बन्धन में है ॥
अंग में बृज-धूल गोरस 'बिन्दु' है मुखचन्द्र पर ।
शम्भु सा योगीश भी बलिहारी इस दर्शन में है ॥

पद १२८

कैद दुनियां ! किस अजब जादू की है टोने की है ।
जिसमें कैदी जीव को नफरत नहीं होने की है ॥
मोह के हाते में काली कोठरी अज्ञान की ।
उस अंधेरे में ही सारी जिन्दगी खोने की है ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शाह मुल्जिम, पैर में दोनों ने पहनी बेड़ियां।
फर्क इतना है कि एक लोहे की एक सोने की है॥
काला पहरेदार ने कैसा दिखाया सख्त काम।
टोकरी कर्मों की सर पर रात दिन ढोने की है॥
मौजके झोकों ने फेंका 'बिन्दु' को सागर से दूर।
वस यही एक बात पछताने की है, रोने की हैं॥

पद १२९

बहुत दिन से तारीफ सुनकर तुम्हारी।
शरण आ गया श्याम सुन्दर तुम्हारी॥
जो अब टाल दोगे मुझे अपने दर से।
तो होगी हंसी नाथ दर दर तुम्हार॥
सुना है कि उनको न करुणा सताती।
जो रहते हैं करुणा नजर पर तुम्हारी॥
यही प्रार्थना है यही याचना है।
जुदा हूं न नजरों से पल भर तुम्हारी॥
ये दृग 'बिन्दु' तुमको खबर दे रहे हैं।
कि है याद दिल में बरोबर तुम्हारी॥

पद १३०

वो जाने श्याम की नजरों के मजे कस कस के।
जिन्होंने खूब सहे वार दिलमें हंस हंस के॥
मिठास मिल चुकी उनको है मधुर मूरति की।
भ्रमर हैं जो कि कमलमुख पराग रस-रस के॥
उठा चुके हैं जो कुछ नाज कभी मोहन के।
उन्हें है याद वो अन्दाज उनकी नस-नस के॥
गजब कमाल अमानत में है खयानत का।
जिगर पर करते हैं कब्जा जिगरमें बस-बस के॥
नशे में रूप के फन्दे में जाल उल्फत के।
तड़फते रहते हैं आंखों के 'बिन्दु' फंस-फंस के॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पद १३१

हैं प्रेम जगत में सार और कुछ सार नहीं !

कहा घनश्याम ने ऊधो ! कि वृन्दावन जरा जाना ॥
वहां की गोपियों को ज्ञान का कुछ तत्व समझना ।
विरह की वेदना में वे सदा बेचैन रहती हैं ॥
तड़फ फर आह भरकर और रो रो कर ये कहती हैं ।
है प्रेम जगत में सार और कुछ सार नहीं है ॥ १ ॥
कहा ऊधो ने हंसकर, मैं अभी जाता हूं वृन्दावन ।
जरा देखूं कि कैसा है कठिन अनुराग का बन्धन ॥
हैं कंसी गोपियां, जो ज्ञान बल को कम बताती हैं ।
निरर्थक लोक लीला का यही गुणगान गाती है ॥
है प्रेम जगत में सार और कुछ सार नहीं हैं ॥ २ ॥
चले मथुरा से जब कुछ दूर वृन्दावन निकट आया ।
वहीं से प्रेम ने अपना अनोखा रंग दिखलाया ॥
उलझ कर वस्त्र में कांटे लगे ऊधो को समझाने ।
तुम्हारा ज्ञान पर्दा फाड़ देंगे प्रेम दीवाने ।
है प्रेम जगत में सार और कुछ सार नहीं हैं ॥ ३ ॥
विटप झुक कर ये कहते थे इधर आओ इधर आओ ।
पपीहा कह रहा था पी कहां यह भी तो बतलाओ ॥
नदी यमुना की धारा शब्द हरि हरि का सुनती था ।
भ्रमर गुंजार से भी यह मधुर आवाज आती थी ॥
है प्रेम जगत में सार और कुछ सार नहीं है ॥ ४ ॥
गरज पहुंचे वहां, था गोपियों का जिस जगह मंडल ।
वहां थी शान्त पृथ्वी, वायु धीमी, व्योम था निर्मल ॥
सहस्त्रों गोपियों के मध्य थीं श्री राधिका रानी ।
सभी के मुख से रह रह कर निकलती थीं यही बानी ॥
हैं प्रेम जगत में सार और कुछ सार नहीं है ॥ ५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कहा ऊधोने यह बढ़कर कि मैं मथुरा से आया हूं ।
सुनाता हूं सन्देशा श्याम का जो साथ लाया हूं ॥
कि जब यह आत्मसत्ता ही अलख निर्गुण कहाती है ।
तो फिर क्यों मोहवश होकर वृथा यह गानगाती है॥
है प्रेम जगत में सार और कुछ सार नहीं है ॥ ६ ॥
कहा राधिका ने तुम खूब सन्देश लाये हो ?
मगर यह याद रक्खो प्रेम की नगरी में आये हो ।
सँभालो योग की पूँजी न हाथों से निकल जाये ॥
कहीं विरहाग्नि में यह ज्ञान की पोथी न जल जाये ।
है प्रेम जगत में सार और कुछ सार नहीं है ॥ ७ ॥
अगर निर्गुण हैं हम तुम, कौन कहता है खबर किसकी ।
अलख हमतुम हैतो किसरको लखती है नजरकिसकी ।
जो हो अद्वैत के कायल तो फिर क्यों द्वैत लेते हो ॥
अरे खुद ब्रह्म होकर ब्रह्म को उपदेश देते हो ।
है प्रेम जगत में सार और कुछ सार नहीं है ॥ ८ ॥
अभी तुम खुद नहीं समझे कि किसको योग कहते हैं ।
सुनो इस तौर योगी द्वैत में अद्वैत रहते हैं ॥
उधर मोहन बने राधा वियोगिन की जुदाई में ।
इधर राधा बनी है श्याम, मोहन की जुदाई में ॥
है प्रेम जगत में सार और कुछ सार नहीं है ॥ ९ ॥
सुना जब प्रेम का अद्वैत ऊधो की खुली आँखें ।
पड़ी थी ज्ञान मद की धूल जिनमें वह खुली आंखें॥
हुआ रोमांच तनमें 'बिन्दु' आंखों से निकल आया ।
गिरे श्री राधिका पग पर, कहा गुरु मंत्र यह पाया ॥
है प्रेम जगत में सार और कुछ सार नहीं है ॥ १० ॥

पद १३२

कृपा की न होती जो आदत तुम्हारी ।
तो सूनी ही रहती अदालत तुम्हारी ।ध्रु

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जो दीनों के दिल में जगह तुम न पाते।
तो किस दिल में ! होती हिफाजत तुम्हारी ॥
गरीबों की दुनियां है आबाद तुमसे।
गरीबों से है बादशाहत तुम्हारी ॥
न मुलिजम ही होते, न तुम होते हाकिम।
न घर घर में होती इबादत तुम्हारी।
तुम्हारी ही उल्फत के हग, 'बिन्दु' हैं ये।
तुम्हें सौंपते हैं अमानत तुम्हारी ॥

--❀--

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

❀ आठवां भाग ❀

पद १३३

अहो ? शंकर भोले भगवान।
अतुल करुणाकर कृपानिधान।
हो जिस भांति बाह्य अन्तर में, भगवान व्याप्त समान।
उसी भाँति पूजन को भी है, सूक्ष्म स्थूल विधान॥
त्रिशूल त्रिकोणप बिल्व-पत्रों से, मिलता है यह ज्ञान।
क्यों न करें सत, रज तम-मिश्रित यह तन तुम्हें प्रदान॥
फल धतूरे देते हैं तुमको, मादक तत्व प्रधान।
उत्तम हो यदि दे दे मन का मादक फल अभिमान॥
गंगोदक सम मान रहे हो, जब जन का जल दान।
क्यों न करो ? फिर प्रेम 'बिन्दु'-गंगा में सुखद स्नान॥

पद १३४

ऐ मेरे घनश्याम ! हृदयाकोश पर आया करो।
ग्रीष्मऋतु कलिकाल की है धप, तुम छाया करो॥
दामिनी के बिन दया जल दान दे सकते नहीं।
इसलिए श्री राधिका को साथ में लाया करो॥
जिसकी गर्जन में सरस अनुरागकी हो ध्वनी भरी
उस मधुर मुरली से जन मन मोर हर्षाया करो॥
प्यासा है जिनकी तुम्हारे, दर्शनों की ही सदा।
उन तृषा-मय चातकों के दृगन तरसाया करो॥
प्रेम के अंकुर विरह की, अग्नि में झुलसे नहीं।
यदि समय पर कुछ कृपा के 'बिन्दु' बरसाया करो

पद १३५

मिला हैं मुझको किस्मत से खयाले रिन्द मस्ताना।
पिया करता हूं हरदम श्यामकी उल्फत का पैमाना

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मजा है बेखुदी का यह, कि मैं दुनियाँ में हूं लेकिन—
न जाना मैं ने दुनियां को न दुनिया ने मुझे जाना।
मुझे है सिर्फ अपने यार के दीदार से मतलब ॥
चाहे मन्दिरहो या मस्जिदहो, चाहे काबा या बुतखाना
हमेशा बस ये रिस्ता चाहता हूं, प्यारे मोहन से ॥
मैं उनको दिलरुबा समझूं वो समझें मुझको दीवाना ॥
नहीं है 'बिन्दु' दृग में, मोम दिल मोती के दाने हैं।
बिरह की आग में पड़कर पिघल जाता है हर दाना ॥

—❀—

पद १३६

श्याम सुन्दर तुझे कुछ मेरी खबर है कि नहीं।
तेरे दिल पर मेरी आहों का असर है कि नहीं ॥
ऐ मसीहाये यहाँ आ के जरा देख तो ले।
काबिले गौर मेरा दर्दे मेरा जिगर है कि नहीं ॥
इम्तेहाँ के लिए इक, तीरे नजर छोड़ तो दे।
देख इस दिल पै भी पड़ती ये नजर है कि नहीं ॥
तू न आये न सही, पर ये बता दे मुझको।
तेरी तस्वीर की इस दिल में गुजर है कि नहीं ॥
'बिन्दु' आंखों से निकलते ही दिखा देंगे तुझे।
प्रेम सागर में ये डूबा हुआ घर है कि नहीं ॥

—❀—

पद १३७

तेरा कौन संगीता, हरि बिन।
झूठी जगत जमाती, हरि बिन।
नारी सब सुख पावत पति सों दिन प्रति हिय हरषाती।
धन बल रूप घटे सोइ नारी, कलह करति दिन राती ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भले दिनन के साथी सब है, बन्धु सखा सुत नाती।
बुरे दिनन कोउ बात न पूछत, बनत प्राण के घाती॥
कंचन द्वार हजारन झूमत, यदि हाथिन की पांती।
काल करत जब अपनी फेरी, सम्पत्ति काम न आती॥
अब ही जागजतन कछु करले, फिर करि है केहि भांती।
जब चेतन घृत 'बिन्दु' न रहि है बुझि हैं जीवन बाती॥

—❀—

पद १३८

जीवन का मैंने सौंप दिया, सब भार तुम्हारे हाथों में।
उद्धार पतन अब मेरा हैं, सरकार तुम्हारे हाथों में॥
हम तुमको कभी नहीं भजते, फिरभी तुम हमें नहीं तजते
अपकार हमारे हाथो में, उपकार तुम्हारे हाथों में॥
हम में तुम में है भेद यही, हम नर है तुम नारायण हो
हम है संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में॥
कल्पना बनाया करती है, इक सेतु बिरह के सागर पर।
जिससे हम पहुंचा करते है, उस पार तुम्हारे हाथों में॥
दृग बिन्दु कह रहेंहै भगवन दृगनाव विरह सागरमें है।
मझधार हमारे हाथों में पतवार तुम्हारे हाथों में॥

पद १३९

यही हरि भक्त कहते हैं, यही सद्ग्रन्थ गाते हैं।
कि जाने कौन से गुण पर, दयानिधि रीझ जाते हैं।
नहीं स्वींकार करते हैं' निमन्त्रण नृप सुयोधन का।
बिदुर के घर पहुच कर भोग छिलको का लगाते है॥
न आये मधुपुरी से गोपियों की दुख कथा सुनकर!
द्रुपदजी की दशा पर द्वारका से दौड़े आते हैं॥
न रोए वन गमन में श्री पिता की वेदनाओं पर।
उठा कर गीध को निज गोद में आँसु बहाते हैं॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कठिनता से चरण धोकर मिले कुछ 'बिन्दु' विधिहर को।
वो चरणोदक स्वयं केवट के घर जाकर धुलाते हैं ॥

पद १४०

तोलने बैठा हूं मैं आज।
सम्पति वाला कौन बड़ा है हम तुम में बृजराज।
इस शरीर डांड़ी पर होगा तुलने का सब साज ॥
रात और दिन बन जावेंगे दो पलड़ों का साज।
आठ प्रहर हरिनाम ध्वनि का होगा सूत्र समाज ॥
ऊपर की प्रतुलिको होगी प्रभु सेवक की लाज।
अश्रु "बिन्दु" के बाँट बनाकर लेंगे अन्दाज।
कृपा तुम्हारी अधिक हुई या मेरा पाप जहाज।

पद १४१

न यज्ञ साधन न तप क्रियायें
न दान ही हमने कुछ दिये हैं ॥
परन्तु मन में है भरोसा।
पियूष हरि नाम का पिये हैं ॥
न वेद विधि का विधान है कुछ।
न आत्म अनुभव को ज्ञान है कुछ ॥
यही है केवल कि श्याम सुन्दर।
चरण तुम्हारे ही गह लिये हैं ॥
न बुद्धि विद्या ही काम आती।
न पूर्व के पुण्य ही हैं साथी ॥
प्रभो ! कृपा दृष्टि हैं तुम्हारी।
कि जिसके बल पर ही हम जिये हैं ॥
अधम हैं अपराध लीन हैं हम।
सभी तरह हीन हैं हम ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

परन्तु हो तुम अधम उधारण।
इसी पैं बिश्वास दृढ़ किये हैं॥
तुम्हारी छवि ज्योति के लिये ही।
है 'बिन्दु" घृत पुलियां है बत्ती॥
शरीर दिवट हैं जिसके ऊपर।
दृगों के ये सुन्दर ये दो दिये हैं॥

पद १४२

न शुभ धर्म कर्मादि धारी हूं भगवन्।
तुम्हारी दया का भिखारी हू भगवन्॥

न विद्या न बल है न सुन्दर सुमति है।
न जप है, न तप है, न सद्ज्ञान गति है॥
न भवदीय चरणों में श्रद्धा सुमति है।
दुराशामयी दुश्चरित की प्रकृति है॥
अधम हूं कल्याणकारी हूं भगवन्॥
तुम्हारी दया का भिखारी हूं भगवन॥
वो अनमोल नर जन्मा था हमने पाया।
उसे तुच्छ विषयादिकों में गवाया॥
न परलोक के दिव्य साधन कमाया।
किसीने न इस लोक में काम आया।
बृथा भूमि का भार हूं भगवन्॥
तुम्हारी दया का भिखारी हूं भगवन्॥
किसी का न उपदेश कुछ मानता हूं।
न अपने सिवा और को जानता हू॥
कथन शुद्ध सिद्धान्त मय छानता हू।
सभी से सदा दम्भ हठ ठानता हूँ॥
कठिन-क्रूर दण्डाधिकारी हूँ भगवन।
तुम्हारी दया का भिखारी हूँ भगवन्॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विकृति वृत्ति है पूर्व कृत कर्म फल में।
बड़ा आवरण शुद्ध चेतन विमल में ॥
बँधी आत्म सत्ता अविद्या प्रबल में।
मन मृग फसा मृग तृश्णा 'बिन्दु' जल में ॥
महा दीन दुर्बल दुखारी हूं भगवन्।
तुम्हारी दया का भिखारी हू भगवन् ॥

पद १४३

जो हरि भक्तों की दुनियाँ है वो यह गुणगान करती है।
कि प्रभुपद कञ्ज रज दासों को जीवन दान करती है ॥
न जाने कौन सी चैंत्यन्ता है इसके कण-कण में।
कि जो जड़ जल की धारा में भी पैदा जान करती है ॥
जिसे बांधा था हरि ने उसके जब सर पर ये पड़ती है।
तो बलि के द्वारे पर प्रभु का निवास स्थान करती है ॥
व क्यों इन्सानियत देगी हमारे मोम दिल को भी।
कि जब वह रिब्रक दिल पत्थर को भी इन्सान करती है।
गज़ब है इसके धोवन जल का जो एक 'बिन्दु' भी छू ले।
उसे यह विष्णु ब्रह्मा और शिव भगवान करती है ॥

पद १४४

हे नाथ पद कमल का मुझको पराग करना।
या गुञ्ज मालिक के भीतर का ताग करना ॥
जिसको अधर पे धर कर करते हो प्रेम वर्षा।
उस सरल बांसुरी का मृदु मधुर राग करना ॥
रासेश्वरी सहित तुम जिसमें विराजते हो ॥
ब्रज़भूमि की वो लतिका तरु कुञ्ज बाग करना।
या श्री चरण महावार का 'बिन्दु राग करना।
या गोपियों के सुन्दर शिर का सुहोग करना ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पद १४५

जब दर पे तुम्हारे ही अधमो का ठिकाना है।
फिर हो मेरी किस्मत में क्यूँ रञ्ज उठाना है॥
तारोगे तो तरलेंगे छोड़ो गे तो बैठे हैं।
दरवोर से अब हरगिज उठकर नहीं जाना है॥
मेरा तो कोई करणो, निभने की नहीं भगवान।
जैसे भी निवाहो अब तुमको ही निभाना है॥
फरियाद के सुनने में है कौन सिवा तुमसे।
गर तुम सुनो मेरी फिर किसको सुनाना है॥
दृग बिन्दु की शक्लों में ख्वाहिश इस दिल को।
जरिया है आंखो का आँसू बहाना।

पद १४६

दो शुभ संगति दीन दयाल
जो मानव मन कर देती है मानस राज मराल।
यद्यपि नगर वेश देश मन गृह गिरि तरु की डाल।
किन्तु राम सेवा से घर घर पूजे अञ्जनी लाल॥
कला चतुर्दश हीन क्षीर द्युति काम कलङ्क कराल॥
ईश शीश के नाते बंदित है वह रजनीपाल।
बिंदु बारि में बहकर बनता है बारीस विशाल॥
सुमन संग से चीटी चढ़ती चन्द्रभाल के भाल॥

पद १४७

बसहुं मन ! मनमोहन के पाव।
पग तल भूमि रेख कुंज बिच प्रेम कुटिर बनाव॥
बाग विराग बिचार विपट में रस प्रसून प्रकटाव।
तिनके सींचन हित नेनन सो बिमल विन्दु बरसाव।

पद १४८

मुझसा नमक हराम न और।
कभी नहीं उनका गुनगाता खाता जिनका कौर।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अधम अटपटा अधिक आलसी-मंडल का शिरमौर ॥
स्वामी की न गुलामी करता, बदनामी हर तौर।
हूं कलँक का 'बिन्दु' चाहता पद-नख शशि में ठौर ॥

पद १४६

हरि बोल मेरी रसना घड़ी घड़ी।
व्यर्थ बिताती है क्यों जीवन, मुख मन्दिर में पड़ीं पड़ी।
नित्य निकाल गोविन्द नाम का स्वांस से लड़ी लड़ी ॥
जाग उठे तेरी ध्वनी सुनकर इस काया को कड़ी कड़ी।
बरसा दे प्रभु नाम सुधा रस विन्दु 'बिन्दु' से झड़ी झड़ी ॥

पद १५०

मस्ती में हमारी भी जो परवा नहीं करते।
हम उनकी खुशी के लिये क्या नहीं करते ॥
इक उनको ये हासिल है हुकूमत करें हम पर।
हम उनकी गुलामी का भी दावा नहीं करते ॥
हम उनको मानते हैं, जो हर बात में हम से—
लड़ कर भी कहते है कि बेजा नहीं करते ॥
दुनियाँ के जो पर्दे से सो बेपर्दे हैं उनसे—
हम पर्दानशीं होके भी पर्दा नही करते ॥
हग 'बिन्दु' की जंजीर पिन्हाते हैं जो हमको।
हम उनकी नजर कैद से निकला नही करते ॥

पद १५१

वो खुश किस्मत है जिसका श्यामसुन्दर से लगा दिल हो।
मगर दर्दे जुदाई का मजा उस दिल को हासिल हो ॥
तड़प हो, आह हो, गम हो, बिलखना हो, या रोना हो।
ये सब सहकर भी उनकी फर्माबरदारी में शामिल हो ॥
अजब हो लुत्फ राहे इश्क पर इस तौर चलने में।
ख्यांले यार हो नज़दीक लेकिन दूर मंजिल हो ॥
बसर करने की खातिर इस जहां में सोहबतेदा हो।
गरीबों का मजा हो, या मस्तानों की महफिल हो ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तरक्की ख्वाहिशे दीदार की हो दिन ब दिन इतनी।
कि हर दृग 'बिन्दु' हरि के देखने को आंख का तिल हो ॥

पद १५२

श्याम मनहर से मन को लगाया नहीं।
तो मजा तूने नर तन का पाया नहीं॥
सुयश उनका श्रवण में समाया नहीं।
कीर्ति गुण गान उनका जो गाया नहीं॥
ध्यान में उनके यदि तू लुभाया नहीं।
उनके चरणों की सेवा में आया नहीं॥
तो मजा तूने नर तन का पाया नहीं।
उनके अर्चन का अनुराग छाया नहीं॥
द्वार पर उनके सर का झुकाया नहीं।
दास या मित्र उनका कहाया नहीं॥
उनपै सर्वस्व अपना लुटाया नहीं।
तो मजा तूने नर तन को पाया नहीं॥
प्रेम में उनके जीवन बिताया नहीं।
वेदनामय हृदय को बनाया नहीं॥
अश्रु का 'बिन्दु' दृग से गिराया नहीं।
उनकी विरहाग्नि मे तन जलाया नहीं॥
तो मजा तूने नर तन का पाया नहीं॥६॥

पद १५३

कहूं क्या मन मन्दिर की बात।
अकस्मात् आ बैठा कोई, सुन्दर श्यामल गात।
मृदुभावों के सुमन कुँज में रहता है दिन रात॥
उनकी मान भरी चितवन का पड़ता जब आघात।
तब अनुपम आनन्द अमृत की होती हैं बरसात॥
उसका मधुर हास रबि जब कर देता सुखद प्रभात।
प्रेम पराग "बिन्दु" मय खिल जाते हैं दृग जलजात॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ नवाँ भाग ॥

प्रार्थना

पद १५४

मातेश्वरी तू धन्य है, मातेश्वरी तू धन्य है।
कहता कोई सीता तुझे, कहता कोई तू शक्ति है॥
कहता कोई तू प्रकृति है, कहता कोई आसक्ति है।
तू सर्वरूपा, प्रेमियों के, प्राण धन की शक्ति है॥
तेरे अमित उपकार का, आनन्द अनुभव धन्य है।
मातेश्वर तू धन्य है, मातेश्वरी तू धन्य है।
तू कुटिल कलि कल के लिये मैं कुटिल मूर्ति करालिका।
हरि-हर विमुख नर के लिये कृत्या तूही, तू कालिका।
तू प्रभु पदाश्रित जीव को प्रत्येक पल प्रतिपालिका।
तू वैष्णवी है वैष्णवों के कण्ठ तुलसी मालिका॥
तू ब्रह्म जीव मिलाप की सद्ग्रन्थि सुदृढ़ अनन्य है।
मातेश्वरी तू धन्य है, मातेश्वरी तू धन्य है।
तू कर्मयोगी के लिये सत्कीर्ति परम ललाम है।
तू ज्ञानियों की शांति पूर्ण समाधि हैं सुखधाम है।
तू ध्यानियों की अटल श्रद्धा मानसिक विश्राम है॥
तूझे दामिनी से ही सुशोभित 'विन्दु' मय घनश्याम हैं।
तेरा उपासक जो नहीं, वह जीव कुटिल जघन्य है।
मातेश्वरी तू धन्य है, मातेम्वरी तू धन्य है॥

पद १५५

जो तू चाहे कि हो घनश्याम की,
मुझ पर नजर पहले।
तो ऊसके आशिकों की खाक पामें—
कर गुजर पहले॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तरिका है अजब इस इश्क़ की
मँज़िल पै चलने का।
कदम पीछे गुजरते हैं गुजर जाता—
है सर पहले।
उसी का घर बना पहिले, दिले
मोहन की बस्ती में।
कि जिसका दोनों दुनियां दोनों—
से उजड़ा है घर पहले।
मजा तब है कि कुर्बानी में हर इक—
जिद से बढ़ता हो।
ये तन पहले, ये जाँ पहले ये दिल—
पहले, जिगर पहले।
न रो! ऐ आँख! तेरे 'विन्दु' मोती—
गर्चे लुटते है।
यक़ीं रख यह, कि उल्फत में—
नफा पीछे जरर पले॥

पद १०६

कुछ अनोखा वो मेरे नन्द का लाल निकला।
जिसकी उल्फत का हरेक लुफ्त निराला निकला॥
क्यों न लेते भला वो इसको बड़े शौक के साथ।
उनकी हम शक्ल मेरा दिल भी तो काला निकला॥
इक नजर में लुटी, कुछ ऐसी मेरे दिलकी दुकान।
हर तरह ख्वाहिशे दुनियां का दिवाला निकला॥
अपनी चितवन के निशानता जो देखे उसने।
मेर हर दगे जिगर नाज से पाला निकला॥
श्याम सुन्दर की न हो नज़रे इनायत क्यूँ कर।
जब कि दृग 'विन्दु' भर दर्द का प्याला निकला॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

पद १५७

घनश्याम हमारो मनमोहन, कुछ दोस्त है कुछ उस्ताद भी है।
कुछ होश में है, कुछ मस्तभी है, कुछ कैद भी है, कुछ आजादीभी है
कभी बेवफा हो मुंह मोड़ता है, कभी पलभर साथ न छोड़ता है।
इससे ये है जहिर मेरो खबर, कुछ भूल गया, कुछ याद भी है॥
बसतों हैं जो उनको निकालता है, उजड़े हैं जो उनको संभालता है।
क्या खुब कि उसका खानये दिल, वीराना भी है आबाद भी है
कभी हँसता और हंसाता मुझे, कभी रूठता है तड़पाता मुझे।
सुखसिधु भी है दुख बिन्दु भी है कुछ मोम है कुछ फौलाद भी है

पद१५८

आन पड़ी मझधार कृष्ण नाव मेरी।
तु हैं खेवनहार कृष्ण नाव मेरी॥

मोह निशा का है अंधियारा षट् विकार तूफान करारो।
किसी ओर मिलता न किनारा, तेरा ही है एक सहारा॥

चाहे डुबो चाहे तार, कृष्ण नाव मेरी।
आन पड़ी मझधार कृष्ण नाव मेरी॥

तू खेवट है बहुत पुराना, किस किसने तुझको न वखाना।
बिपति पड़े मैंने पहचाना, अब है और न मुझे ठिकानो॥

पल में करदे पार, कृष्ण नाव मेरी।
आन पड़ी मँझधार, कृष्ण नाव मेरी।

खर्च राह का खुट गया है, विषय स्वांस धन लूट गया है।
बल का डांडा टूट गया है, साहस सारा छूट गया है॥

तू ही पार उतार, कृष्ण नाव मेरी।
आन पड़ी मँझधार, कृष्ण नाव मेरी॥

अब तक हल्की खूब रही हैं, चलती फिरती खूब रही है।
अब भँवरों में ऊब रही है, 'बिन्दु' भार से डूब रही है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करके दया उबार, कृष्ण नाव मेरी।
आन पड़ी मंझधार, कृष्ण नाव मेरी॥

पद १५६

श्याम तोरी नेह नगरिया न्यारी।
बाहर से कछु देख परत नहिं, भीतर शोभा भारी।
कहत सुनन में सुखद मनोहर सब सुखसाज संवारी।
पै कोउ रहन चहैं, तो वाको अति ही विषम कटारी।
तन के नैन लखें, तो वामें अति सूनी अंधियारी॥
मन के नैन लखें तो भासै कोटि भानु उजियारी।
योगी जन की गति जहँ नाहिं, ज्ञानिन की मतिहारी।
यहां बिहार करत निशिवासर, गोकुल की पनिहारी॥
भीतर पवन रात दिन सुलगै बिरहानल चिनगारी।
बाहर दोऊ दृग बरसत है प्रेम 'बिन्दु' जलझारी॥

पद १६०

मेरे और मोहन के दरम्यान होकर।
बसा है अजब इश्क मेहमान होकर॥
मजा दर्द का लुटता है हमेशा।
इधर जिस्म होकर उधर जान होकर!
उबलता हैं दोनों तरफ जोशे उल्फत।
इधर शौक होकर उधर शान होकर॥
निकलते हैं दोनोंकी आंखों के अरमां।

पद १६१

प्रभो। दो वह पीड़ामय प्यार।
जिसकी बिरह वेदना में भी हो सुख का संचार।
मन का मनमोहन से ऐसा बंध जाये, कुछ तार॥
जिससे वह मन भी हो जाये, मोहन का अवतार।

CC0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Nangarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सुधिको सुधि न रहे, ऐसा हो विस्मृत का व्यापार।
जीवन की गति में, हो जाये जीवन गति की भार।
उर उमंगा दो विरह सिन्धु का, इतना अगम अपार।
जिसके एक 'बिन्दु में पड़कर पहुंच न पाऊं पार॥

पद १६२

घनश्याम ये तुझ पर मेरा मस्ताना हुआ दिल।
अपना था जो अब तक वही बेगाना हुआ दिल॥
जिस जिस दिल में था घर अपना सजाया था जिसे खूब
सब ख्वाहिशें उसकी लुटी, वीराना हुआ दिल॥
इसी सांवली सूरत ने तो दुनियां ही बदल दीं।
पहले जो था काबा वही बुतखाना हुआ दिल॥
तेरी मये उल्फत के जो पीने का हुआ शौक।
तो जिस्म ये शीशा हुआ, पैमाना हुआ दिल॥
दृग 'बिन्दु' में भी हैं तेरी सूरत का ये जादूं।
जिस दिल ने इन्हें देखा वो दीवाना हुआ दिल॥

पद१६३

जो श्याम पर फ़िदो हो,
उस तन को ढूँढ़ते हैं।
घर श्याम का हो जिसमें,
उस मनको ढूँढ़ते हैं॥
जो बीत जाय प्रीतम—
की योद में विरह में।
जीवन भी देके, ऐसे—
जीवन को ढूंढ़ते हैं॥
सुख शान्ति में, सुरति में,
मति में तथा प्रकृतिमें।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्राणों की प्राणगति में,
मोहन को ढूँढ़ते हैं।
बँधता है जिसमें आकर,
वह ब्रह्म मुक्त बन्धन।
उस प्रेम के अनोखे—:
बन्धन को ढूँढ़ते हैं॥
आहों की जो घटा हो,
दामिनि हो दर्द दिलकी।
रस 'विन्दु' बरसे जिससे,
उस धन को ढूँढ़ते हैं॥

पद १६४

यह तमन्ना है कि घनश्याम का शैदा बन जाऊँ।
उनसे मिलने के लिये, जाने न क्या क्या बन जाऊं॥
जिस्म जल जाय जो विरहाग्नि के शोलों में कहीं।
शाक से राह में उनको मैं खाकेपा बन जाऊं॥
जान घुट जाय जुदाई के खरल में जो कहीं।
ऐसा पिन जाऊंगा, कि आंखों का सुरमा बन जाऊं॥
दम निकल जाये जो उनकी तसव्वर में कहीं।
बस तो फिर सांवली सूरत का ही नक्शा बन जाऊं।
'विन्दु' ऑखों के जो हम शक्ल बनाले मुझको।
ऐसा वह जाऊं कि ब्रज की नदी यमुना बन जाऊं॥

पद १६५

यूँ मधुर मुरली बजी घनश्याम की।
धूम घर घर में मची घनश्याम की॥
हो गया मुरली का आशिक कुल जहां।
मुरली आशिक हो गई घनश्याम की॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मुरली ने ही, श्याम को, दी राधिका।
बिधि मिलादी दामिनी घनश्याम की॥
मुरली रस का 'बिन्दु' बरसाती न जो।
शान घट जाती सभी घनश्याम की॥

पद १६६

सदा श्याम श्यामा पुकारा करेंगे।
नवल रूप निशिदिन निहारा करेंगे॥
यमुना-तट, लता कुंज ब्रज वीथियों में।
विचर कर ये जीवन गुजारा करेंगे॥
मिलेगा जो रसिकों की जूठन प्रसादी।
वही जीविका का सहारा करेंगे॥
चखेंगे करीलों के कांटों में हरदम।
जगत् कण्टकों से किनारा करेंगे॥
जो दृग 'बिन्दु' से धाम धोया करेंगे।
तो पलकों से पथ को बुहारा करेंगे॥

पद १६७

यूँ अगर आप मोहन मुकर जायेंगे।
तो भला हमसे पापी किधर जायेंगे।
अब करेंगे नहीं तो सच जानिये।
आपका नाम बदनाम कर जायेंगे॥
चाहते कुछ हो रिश्वत, तो है क्या यहाँ।
हाँ गुनाहों से भण्डार भर जायेंगे।
थी नफरत जो, घर में बिठाया ही क्यों।
जाय सर, गैर के अब न घर जायेंगे॥
है यकीं बिन्दु" गर चश्मे तर से बहे।
तो तुम्हें करके तर खुद भी तर जायेंगे॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पद १६८

अगर घनश्याम का दिल,
आशिकों को दूर कर देता।
तो था किसका दम कि घर घर में,
उन्हें मशहूर कर देता॥
मजा कुछ तो मिला होगा—
अनोखा इश्क में तेरे।
बर्ना जान क्यों अपनी—
फिदा मन्सुर कर देता॥
गरज क्या थी उसे गोकुल में—
आकर ग्वाला बन जाता॥
किसी का दर्दे दिल उसको—
न गर मजबूर कर देता॥
जहर चितवन की बर्छी का—
न आँखें 'बिन्दु' से ढलती।
तो उनका दर्द पैदा—
दिल में इक नासूर कर देता॥

पद १६९

मेरी और मोहन की बातें, या मैं जानूँ या वो जाने।
दिल की दुख दर्द भरी बातें, या मैं जानूं या वो जाने॥
जब दिल में उनकी याद हुई, इक शक्ल नई ईजाद हुई।
पल पल यह मस्त मुलाकातें, या मैं जानूँ या वो जाने॥
नहिं जगता हूं, नहिं सोता हूं, नहिं हँसता हूं, नहिं रोता हूं
वह दर्द जुदाई की रातें, या मैं जानूँ या वो जानै॥
गम की घन घोर घटा गरजी दामिनी वेदना की लरजी।
दृग 'विन्दु' भरी यह बरसातें या मैं जानूँ या वो जाने॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पद १७०

दृग तीर तेरे मोहन ! जिस दिल को ढ़ूँढते हैं ।
हम उस तेरे तीरों के बिस्मिल को ढ़ूँढ़ते हैं ॥
गो लाख बार तीरे मिज़र्गा से कट चुके हैं ।
हिम्मत यह है कि फिर भी कातिल को ढ़ूँढ़ते हैं ॥
पीकर जो मये हैं उल्फत बेहोश हैं बेखुद हैं ।
मंजिल में पहुंच कर भी मंजिल को ढूंढ़ते हैं ॥
हम इश्क समुन्दर में जिस दिल को खो चुके हैं ।
हर 'बिन्दु' में आंखों के, उस दिल को ढ़ूँढ़ते हैं ॥

पद १७१

बताऊँ तुम्हें श्याम मैं क्या, कि क्या हूं ।
अगर पूछिये सच तो बहरूपिया हूं ॥
कभी जोश उल्फत में हूं यार तेरा,
कभी कारे वद से गुनहगार तेरा,
कभी जिन्स तू मैं खरीदार तेरा,
कभी रूये गुल तू है, मैं ख्वार तेरा,
खुदा में कभी आके, बनता खुदा हूं ।
अगर पूछिये सच तो वहुरूपिया हूं ॥
कभी वेद वक्ता, कभी पूर्ण ज्ञानी,
कभी हूं उपासक, कभी धम ध्यानी,
कभी हूं कुटिल क्रोध मद मोह मानी,
कभी हूं सहज शान्ति मन कर्म बानी,
कभी ब्रह्म व्यापक अखिलसृष्टि का हूं ।
अगर पूछिये सच तो बहुरूपिया हूं ॥
कभी हुस्ने यूसुफ का दम भर रहा हूं,
कभी दारे मन्सूर पर मर रहा हूं,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कभी गैर पर जा फिदा कर रहा हूं,
कभी मौत अपनी से खुद डर रहा हूं,
कभी हूं वका और कभी मैं फना हूं।
अगर पूछिये सच तो बहुरूपिया हूं ॥

कभी कर्म योगी, कभी कर्म भोगी,
कभी हूं मैं प्रेमी, कभी हूं बियोगी,
कभी स्वस्थ सुन्दर, कभी दीन रोगी,
कभी सत्यवादी, कभी धूर्त योगी,
कभी क्षीण दीपक, कभी रवि कला हूं।
अगर पूछिये सच तो बहुरूपिया हूं ॥

कभी खुश्क मिट्टी कभी शक्ल पानी,
कभी हू हवा ओ फलक की निशानी,
कभी हूं मैं आबे गुज़र जिन्दगानी
कभी हूं मैं बचपन, बुढ़ापा, जवानी,
तमाशे में आकर तमाशा हुआ हूं।
अगर पूछिये सच तो बहुरूपिया हूं ॥

कभी दुःख ही दुःख सर पर उठाता,
कभी सुख के सागर में गोते लगाता,
कभी थाल पर थाल भोजन लुटाता,
कभी प्यास से 'बिन्दु' जलभी न पाता,
प्रभो आप नटवर हैं मैं नट बना हूं।
अगर पूछिये सच तो बहुरूपिया हूं ॥

—❀—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ दसवां भाग ॥

❀ प्रार्थना ❀

पद १७२

जय जय 'विन्दु' और व्रजनन्दन।
दोऊ बनवासी बन विहरत, दोऊ जन अभिनन्दन।
दोऊ प्रगट होत अति आतुर सुनत दीन दुख क्रन्दन॥
द्रवत हृदय द उन के देखे, फँसे दोऊ दृग फन्दन,
दोऊ सोहाग सोहागिन के विरहागिन के हित चन्दन।
रसिक जनके दोऊ रसनिधि, मानिन मान निकन्दन।
दोऊ जब मिल जात परस्पर, कटत जगतके वन्धन॥

पद १७३

जिसने घनश्याम तेरे प्रेम का अरमान लिया।
उसने हर तौर तेरे राज को पहचान लिया॥
अक्ल में जिसकी तू आया वो परेशान रहा।
दिल में तू जिसके बसा, उसने तुझे मान लिया॥
जान जो तुझसे चुराता है, वो अनजान रहा।
जान दी जिसने तुझे उसने जान लिया॥
परदये 'बिन्दु' ने यह सोच के दृग द्वार ढके।
दिलने एक साँवला परदानशी महमान लिया॥

पद १७४

ये झगड़ा है मोहन हमारा तुम्हारा।
कि अब क्या हुआ ? बल यो सारा तुम्हारा॥
जो निज कर्म से होते तरने के काबिल।
तो फिर ढूढ़ते क्यों सहारा तुम्हारा॥
न तारो तो ऐसा अधम ही बना दो।
कि अवतार फिर हो दुबारा तुम्हारा॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गरीबों की आंखों में जिस दिन से आया।
उस दिन से हैं, 'बिन्दु' प्यारा तुम्हारा ॥

पद १७५

योगी न यती आकिलो दाना, न बनादे।
कुछ श्याम बनाता है, तो मस्ताना बनादे ॥
वह आह दे कि सकेकि तुझे चाह हो मेरी।
वह दर्द दे, मुझको भी जो दीवाना बनादे ॥
जिन मस्तोंकी नजरों में तू हरदम है समाया
बस मुझको उन्हीं नजरों का नजराना बनादे ॥
इस दिल को मये इश्क का मयखाना बनादे।
आखों के हरेक 'बिन्दु' का पैमाना बनादे ॥

पद १७६

लगन श्याम से यूं लगाया करें हम।
मजे दर्द दिल के उठाया करें हम ॥
न यह लुत्फ कम हो कभी जिन्दगी भर।
वो रूठा करें, और मनाया करें हम ॥
चुभे उनके तीर नजर जब जिगर में।
वो ढूंढ़ा करें और छिपाया करें हम ॥
ये अरमाने दिल की हजारों हीं शक्लें।
मिटाया करें वो, बनाया करें हम ॥
उधर छेड़ कर मुस्कराया करें वो।
इधर 'बिन्दु' दृग से बहाया करें हम ॥

पद १७७

यही नाम मुख में हो हरदम हमारे।
हरे कृष्ण गोविन्द मोहन मुरारे ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लिया हाथ में दैत्य ने जब कि खंजर।
कहा पुत्र से, है कहां तेरा ईश्वर॥
तो प्रह्लाद ने याद की आह भरकर।
दिखाई पड़ा उनको खम्भे के अन्दर॥
है नरसिंह के रूप में राम प्यारे।
हरे कृष्ण गोविन्द मोहन मुरारे॥
सरोवर में गज ग्राह की थी लड़ाई।
न गजराज की शक्ति कुछ काम आई॥
कहीं से मदद उसने अब कुछ न पाई।
दुखी होके आवाज हरि को लगाई॥
गरुड़ छोड़ नँगे पाँवों पधारे।
हरे कृष्ण गोबिन्द मोहन मुरारे॥
अजामिल अधम में न थी क्या बुराई।
मगर आपने उसकी बिगड़ी बनाई॥
घड़ी मौत की सर पै जब उसके आई।
तो 'बेटे नारायण" की थी रट लगाई॥
तुरन्त खुल गये उसके बैकुण्ठ द्वारे।
हरे कृष्ण गोबिन्द मोहन मुरारे॥
दुशासन ने जब हाथ अपने बढ़ाये।
तो दृग 'विन्दु, थे द्रौपदी ने गिराये॥
न की देर कुछ द्वारिका से सिधाये।
अमित रूप यूँ बनके साड़ी में जाये॥
कि हर तार थे आप का रूप धारे।
हरे कृष्ण गोबिन्द मोहन मुरारे॥

पद १७८

जिस दर पै ठिकाना है वह कभी ना ढूँढ़ो।
जिस घर में पहुंचा है वह घर कभी न ढूँढ़ा॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इस दिल से उन्हें ढूँढ़ा, जिनसे नहीं कुछ हासिल।
दिल जिसने दिया है, वो दिलवरकभी न ढूँढ़ा॥
मन्दिर में उसे ढूँढ़ा मसजिद में उसे ढूँढ़ा।
एक बार मगर दिल के अन्दर कभी न ढूँढ़ा॥
सौ लाख बार ढूँढ़ा पर, अक्ल से हिकमत से।
आँखों में 'बिन्दु' आंसू भर कर कभी न ढूँढ़ा।

पद १७९

जो नहिं प्रेम प्याला पिया।
वह जगत में जन्म लेकर व्यर्थ हो क्यों जिया।
जोग, जप, तप, व्रत, नियम, सभी कुछ लिया॥
व्यर्थ है यदि प्रेम के रंगों में रंगा नहिं कियां।
रत्न, कंचन अश्व, गज, गोदन, बहु विधि किया।
क्या हुआ यदि प्रेम पथ पर प्राण दान न किया।
प्रेम विना जीवन वृथा घृत, 'बिन्दु, के बिना दिया।
प्रेम के बिना देह जैसे पति बिहीन त्रिया।

पद १८०

कन्हैया को एक रोज रोकर पुकारा।
कहा उनसे जैसा हूं अब हूं तुम्हारा।
वो बोले कि साधन किये तूने क्या हैं?
मैं बोला किसे तू ने साधन से तारा॥
वो बोले न दुनियां में आकर किया कुछ
मैं बोला कि अब भेजना मत दुबारा।
वो बोले परेशां हूं तेरी बहस से,
मैं बोला, ये कह दो, तू जीता मैं हारा॥
वो बोले कि जरिया तेरा क्या है मुझ तक?
मैं बोला कि दृग 'बिन्दु, का है सहारा॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पद १८१

धर्मों में सब से बढ़कर हमने ये धर्म जाना।
हरगिज़ कभी किसी के दिल को नहीं दुखाना॥
कर्मों में सबसे बढ़कर बस कर्म एक यह है।
उपकार की वेदी पर प्राणों की बलि चढ़ाना॥
विद्या में सब से बढ़कर विद्या ये समझ ली है।
हरि रूप चराचर को मस्तक सदा झुकाना॥
जितने भी बल हैं, सब में श्रेष्ट बल यही है।
करुणा पुकार अपनी करुणेश को सुनाना॥
सब साधनों में बढ़कर साधन यही मिला है।
प्रभु के चरणकमल पर दृग 'विन्दु' जल गिराना॥

—०—

पद १८२

मोहन और मस्तों के दिल का मिलता कुछ राज नहीं।
दिल में ही बातें होती हैं बाहर आती आवाज नहीं॥
तन तन्त्री के ही तारों पर अनुराग बज जाता है।
झनकार सुनाई पड़ती हैं दिखलाई पड़ता साज नहीं॥
लड़ते हैं और झगड़ते हैं, रूठते हैं, मचलते हैं, लेकिन।
मुख कमल खिला खुश रहता है जाहिर होते नाराज नहीं।
जब बिरह वेदना की चोटें, उर भेद २ कर जाती हैं।
दृग 'विन्दु' निकल पड़ते हैं, पर आती है कहीं दराज नहीं॥

पद १८३

ऐ श्याम मेरे दिल को वह मर्ज लगा देना।
जो दर्द तेरा जिसमें फिर भी न दवा देना॥
एक दिन तो मिलेंगे ही बोलेंगे हँसेंगे ही।
इस ख्वाबे तमन्ना से हरगिज न जगा देना।
हम तेरे तसब्बुर में बेहोश हैं पागल है।
दिखला के कहीं सूरत कुछ होश न ला देना।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मिलने की जो तुमसे हैं लौ दिल में लगी बेहद।
मिलकर न कहीं हमसे बुनियाद मिटा देना।
ऐ यादे जुदाई तू इन आंखों के परदे पर।
हर 'विन्दु' को दिलवर की तस्वीर बना देना।

पद १८४
होलिका

कौमे हिन्दू में, न गर हर साल आती होलिका।
हरि भजन में क्या असर है ? क्या बताती होलिका।
भक्तवर प्रहलाद ने झण्डा लिया हरि नाम का।
दैत्य कुल में कीर्तन करवा दिया हरि नाम का।
देश को प्याला पिलाया खुद पिया हरि नाम का।
जोश मुर्दा दिल में भी, जिन्दा किया हरि नाम का।
ऐसे हरि जन पर, न कुछ भी जुलम ढाती होलिका।
हरि भजन में क्या असर है ? क्या बत ती होलिका।
बाप से प्रहलाद, जिद करता था कीर्तन के लिये।
आफतों से कुछ नहीं डरता था कीर्तन के लिये।
अपनी कुर्बानी का दम भरता था कीर्तन के लिये।
सर हथेली पर लिये फिरता था कीर्तन के लिये।
आजमाइश से उसे चमका न जाती होलिका।
हरि भजन में क्या असर है ? क्या बताती होलिका। २
दैत्य कहते थे कि 'यह बेढब लड़ाई घर की है।
दीन कहते थे 'लड़ाई जुल्मी चश्मेतर की है।
भक्त कहता था 'लड़ाई जीव और ईश्वर की है।
काल कहता था 'लड़ाई नर की और नाहर की है।
फैसला इसका न गर कुछ भी सुनाती होलिका।
हरि भजन में क्या असर है ? क्या बताती होलिका। ३
राम कहने पर, छुरी नंगी जिगर के पार थी।
हाथ में माला फिरे तो हथकड़ी तैयार थी।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हरि भजन गाने के बदले, जेल की दीवार थी।
कीर्तन करने के बदले कण्ठ पर तलवार थी।
उस समय भी रंग अपना यदि न लाती होलिका।
हरि भजन में क्या असर है ? क्या बताती होलिका।
पर्वतों की चोटियों पर से गिराया भी गया।
फिर सुलाया कण्टकों पर से गिराया भी गया।
भर के प्याला भी हलाहल का पिलाया पी गया।
मौत से हर से तौर लड़कर भक्त बालक जी गया।
ताकत उस पर न अपनी आजमाती होलिका।
हरि भजन में क्या असर है ? क्या बताती होलिका।
दैत्य बोला होलिका से जुल्म ये ईजाद कर।
रिश्तये उलफत मिटाकर दिल को अब फौलाद कर।
आग में ज़लती नहीं तू ! याद आर्शीर्वाद कर।
खाक अपनी गोद में लेकर मेरी औलाद कर।
इतना सुनकर भी बालक को जलाती होलिका।
हरि भजन में क्या असर है ? क्या बताती होलिका।
होलिका की आग ने पहले बिठाया गोद में।
होलिका ने हरि के प्यारे को उठाया गोद में।
भक्त ने भी इस कदर आसन जमाया गोद में।
दौड़कर बैकुण्ठ से भगवान आया गोद में।
यह अचम्भा मी न भक्तों को दिखाती होलिका।
हरि भजन में क्या असर है ? क्या बताती होलिका।
आग की शोलाज़नी प्रह्लाद पर निष्फल गई।
दुर्जन की: कीं हुई तरकीब उलटी चल गई।
ये जलाते जिसको उसके सर से आफत टल गई।
जो जलाने वाली थी अफसोस वह खुद जल गई।
हरि विमुख होकर न इतना दण्ड पाती होलिका।
हरिभजन में क्या असर है ? क्या बताती होलिका।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

होलिका जाहिर में तो बदनाम खोटी हो गई।
हाँ मगर बातिन में उसकी उच्चकोटी हो गई॥
क्योंकि हरिजन पर निछावर बोटी बोटी हो गई।
भक्त के दृग 'बिन्दु' को सच्ची कसौटी हो गई॥
गर न उस प्रहलाद पर जीवन लुटाती होलिका।
हरि भजन में क्या असर है। क्या बताती होलिका॥

पद १८५

होली

न क्यूं आ जाय खिंच कर खुद भला ब्रजधाम की होली।
जो हरि भक्तों के मन मन्दिर में हो हरिनाम की होली॥
कटोरी और पुतली खेलती हैं सुर्ख डोरों से।
तो गोया आंख में होती है राधेश्याम की होली।
गुलाले इश्क रंगे खून, पाकर जिस्म पिचकारी।
न खेली हरि से गर होली तो फिर किस काम की होली।
वो होली भी है क्या होली! जो कुछ कौमे मनाती हों॥
ये हर इन्सान की होली है खासों आम की होली।
हरेक दृग 'बिन्दु' रंगे श्याम से रंग कर निकलते है।
इसे कहते हैं सच्चे आशिके बदनाम की होली॥

पद १८६

श्रीरामनवमी

हिन्द में प्रति वर्ष आती है नवमी राम की।
राम का सुमिरन करा जाती है नवमी रामकी॥
देश पर जब हो रहा दुष्टों का अत्याचार था।
हर तरफ संसार के हर घर में हाहाकार था॥
भूमि सह सकती न थी पापों का इतना भार था।
उसी समय भारत में ईश्वर ने लिया अवतार था॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यह सबक सबको सिखा जाती है नवमी राम की।
राम का सुमिरन करा जाती है नवमी राम की॥
किस तरह माँ बाप का सत्कार करना चाहिये।
किस तरह भाई से अपना प्यार करना चाहिये॥
किस तरह दोनोंके प्रति उपकार करना चाहिये।
किस तरह इस देश का उद्धार करना चाहिये॥
राम के यह गुण बता जाती है नवमी राम की।
राम का सुमिरन करा जाती है नवमी राम की॥
चक्रवर्ती राज्य पद को त्यागने में तीव्र त्याग।
भील गीध निशाद मिलने में था शुद्धानुराग।
बन में चौदह वर्ष बस जाने में था उत्तम विराग
बज रहा था जिस्म की रग रग में सच्चाई का राग
याद यह बातें दिला जाती है नवमी राम की।
राम का सुमिरन करा जाती है नवमी राम की॥
प्रेम करने में भरत दृग 'विन्दु' का आदर्श लो।
शरण जाने में विभीषण भाव का उत्कर्ष लो॥
दास बनने में सदा हनुमान का सा हर्ष लो।
मन्त्र यह प्रतिपक्ष लो, प्रतिमास लो, प्रतिवर्ष लो
यह सन्देशा शुभ सुना जाती है नवमी राम की।
राम का सुमिरण करा जाती है नवमी राम की॥

—❀—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

* ग्यारहवां भाग *

प्रार्थना

पद १८७

हमारे दोनों एक धनी।

इत गोपाल श्याम नटनागर उत रघुवंश मनी।
इत श्री नन्द यशोदा आँगन क्रीड़ा करत धनी।
उत पालने झुलावत दशरथ कौशिल्या जननी।
उत कर शरधनु क्रीट मुकुट पर कटि काछे कछनी॥
उत कर शरधनु क्रीट मुकुट की शोभा सुघर बनी
इत गोपिन के प्रेम भरे गोरस में देह सनी॥
उत राजत शरीर पर दीनन की दृग 'बिन्दु' कनी।

पद १८८

अब मोहन से अनुरागे।

जब तक सोये तब तक सोये, जब जागे तब जागे।
दाग पड़े थे जो मन में, भव भ्रांति दाह से दागे।
भाव रत्न बन गये वही जब प्रीति रीति रस पागे॥
श्वान समान फिरे विषयों के दर-दर टुकड़े मांगे॥
झूम रहे हैं अब मतंग से बधे प्रेम के धागे॥
आत्म 'बिन्दु' तट पर बैटे थे, कलिमल काग अभागे।
जाने कहाँ गये! जब हरि के कृपा कोर शर लागे॥

पद १८९

मन की मन में रहनी चाहिये

कहनी हो तो केवल मनमोहन से कहनी चाहिये।
जो बीती सो बीती अब आगे की गहनी चाहिये॥
जग के जो कुछ कहें? सब सुख से रहनी चाहिये।
पाप रेणु से भीत उठाई थी वह ढहनी चाहिये॥
दीन दयालु कृपालु चरण शरणागति लहनी चाहिये।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अब मन में आशा तृष्णा की कीच न रहनी चाहिये।
बहनी हैं तो प्रेम 'बिन्दु' की गंगा बहनी चाहिये॥

पद १९०

मोहन ! हम भी तुमसे रूठे।
जान गये हम छली प्रपंची हो कपटी अरु झूठे।
पहले शरण बुलाया था, दे देकर लोभ अनूठे॥
अब इस बार दरश देने में दिखलाये अगूठे।
सुनते हैं देते थे सबको सब सुख भर भर मूठे॥
हमने शत शत 'बिन्दु' बहाये लिये न टुकड़े झूठे॥

पद १९१

मुझे नहीं नाथ कुछ है चिन्ता,
कि जब है मन्दिर ये मन तुम्हारा।
तुम्हीं से पाया था कर रहा हूं
तुम्हीं को अर्पण भवन तुम्हारा॥
बनना चाहो इसे बना लो,
उजाड़ना हो उजाड़ डालो॥
प्रभो तुम्हीं बाग़वां हो इसके—
है ज़िस्म सारा चमन तुम्हारा॥
कराल कलिकाल के ठगों ने,
इरादा कुछ और ही किया है॥
सम्हलना लूट न जाय भगवन्—
अमूल्य यह प्रेम धन तुम्हारा॥
विचार आँखों का है कि घटने
न पाये आँसू की 'बिन्दु' धारा॥
भरे कलश द्वार पर मिले जब
हृदय में हो आगमन तुम्हारा॥

पद १९२

लगन उनसे अपनी लगाये हुये हैं।
जो मुद्दत से मन को चुराये हुये हैं॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उठायेंगे हाथों मुझको न क्यों कर।
जो नख पर गोबर्धन उठाये हुए हैं॥
निकले भी उनको तो कैसे निकालें।
कि रग रग के भीतर समाये हुए हैं॥
वोरूठे भी हमसे तो परवा नहीं है।
हम उनके हृदय को मनाते हुए है॥
जो भरना चहै अपने दामनको भरले।
मुहर 'बिन्दु" उन पर लुँटाये हुए हैं॥

पद १६३

रूठे हैं अगर श्याम तो उनको मनाये कौन।
अपनी जो बनी शान है वह भी घटाये कौन॥
कुछ उनका भला होता तो करते भी खुशामद।
अपनी गरज के वास्ते अहसाँ उठाये कौन?
अब तक तो रहे दोस्त बराबर का था दावा॥
अब फर्ज बन्दगी की सरायत निभाये कौन?
माना की जान उनकी है लेंगे वही आखिर।
पर उनके खतावार ये गर्दन झुकाये कौन?
गर कद्र करें वो तो हम 'बिन्दु' नजर है।
वरना फिजूल खाक में मोती मिलाये कौन?

पद १६४

अब तो गोविन्द के गुण गाले॥

सब कुछ भोग लिये जग के सुख सब अरमान निकाले।
जितने पाप हुए जीवन में, लेखा कौन सम्हाले॥
उनका एक उपाय यही है जी भर कर पछताले।
रंग बिरंगे फूल जगत के जितने देखे भाले।
कच्चा रंग सभी का छूटा सब पड़ गये काले।
'बिन्दु' बिन्दु पापों से तू ने घट के घट भर डाले।
उन्हें बहादे जल्द, बहाकर आंसू के परनाले॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पद १९५

श्माम सुन्दर को बस एक नजर देखले।
मोहनी मूरति का कुछ असर देखले॥
श्री अवध में मिलें चाहे ब्रज में मिलें।
या उधर देखलें या इधर देखलें॥
या किसी भाव से' नाम से रूप से।
पर बहाने किसी उनका घर देखलें॥
तार सकते हैं मुझसा अधम या नहीं।
दुखलें उनकी हिम्मत जिगर देखलें॥
सिन्धु आनन्द का जिसको हैं कहते सब।
हम हों खुश गर उसे "बिन्दु" भर देखले॥

पद १९६

[तोता मैना प्रश्नोत्तरी]

मैना—अरे तेरी एक स्वांस अमोल।
रे मन तोता हरि हरि बोल॥
तोता—रसना ! ज्ञान कथा मत खोल।
मैना जरा उपवन में डोल॥
रङ्ग रङ्ग के फूल खिले हैं।
बड़े भाग से भोग मिले हैं॥
सुख साधन के सुफल भले हैं।
सब के स्वा'द टटोल॥
मैना जग उपवन में डोल।
मैना—सपने में एक बाग लगाया॥
फूल फूलों में मन ललचाया।
जब छूने को हाथ बढ़ाया॥
जाग पड़ा कुछ भी नहिं पाया।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यथा ढोल में पोल
रे मन तोता हरि हरि बोल।
तोता—यदि सपना है जग उपासना।
जीव स्वप्न है स्वप्न वासना॥
सपने की क्या स्वप्न कल्पना॥
सपने में सपना है अपनो।
इस विचार को तोल॥
मैना जग उपवन में डोल॥
मैना---इस भ्रम में मत बन मतवाला।
यह तन अमर प्रेम का प्यालो॥
जिसमें सत् स्वरूप रस ढाला।
तू रस का है पीने वाला॥
विष का 'बिन्दु" न घोल।
रे मन तोता हरि हरि बोल॥

—※—

पद १९७

प्रेम ही है अपना सिद्धान्त
जिसने बना दिया है जीवन अमर कल्प कल्पान्त॥
जप तप, योग समाधि बल सब किये रहे उद्भ्रांत।
मोहन मधुर मूर्ति लिखते ही हुए सकल भ्रमशांत॥
नहीं वृतियां बदली बस कर निर्जन बन एकान्त।
मन एकाग्र हुआ जब देखा रसिक जनों का प्रान्त॥
संयम नियम योग हठ साधन करते रहें नितान्त।
बदल गई रूचि पढ़कर गणिका अजामिल वृत्तान्त॥
फूले फिरते हैं जिस पर उद्धव से ज्ञात महन्त।
ब्रज गोपी दृग 'बिन्दु, धार में बहा रही वेदान्त॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पद १६८

हाँ मेरा मोहन मुरली वाला।
हाँ मेरा नन्द नन्दन व्रज ग्वाला ॥
जिसे गोद में नन्द खिलाएँ।
जिने माँ यसुदा धम काएँ ॥
जिसे व्रज के ग्वाल चिढ़ाएँ।
जिसे गोपियां नाच नचाएँ ॥
हाँ वही जीवन प्रेम का प्याला।
हाँ मेरा मोहन मुरली वाला ॥
जिसमें दोनों के दिल की चाह थी।
जिसमें बेकसों की परवाह थी ॥
जिसमें दुखिया अधीनोंकी आह थी।
जिसमें भक्तोंके भावोंकी राह थी ॥
हाँ जिसमें जीवन का उजाला।
हाँ मेरा मोहन मुरली वाला ॥
जिसका प्रेम के वश था आना।
जिसका जिस्म था प्रेम खज़ाना ॥
जिसका प्रेमियों था ठिकाना।
जिसका प्रेमियों ने रस जाना ॥
हाँ जिसका पन्थ प्रेम निराला।
हाँ मेरा मोहन मुरली वाला ॥
जिसने गोपियों को तरसाया।
जिसने ब्रह्मो को था भरमाया ॥
जिसने नख पर गिरिराज उठाया।
जिसने गोरस 'विन्दु' चुराया ॥
हाँ जिसने मस्तोंको मौज़ा से पाला।
हाँ मेरा मोहन मुरली वाला ॥

—:०:—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पद १९९

कराल कलिकाल में जो तेरा—
न हरि के सुमिरन से प्यार होगा-।।
तो फिर बता दे कि किस तरह तू--
अपार भव सिन्धु से पार होगा ।।
विषय यथा खाना और सोना,
सुखों में हसना दुःखो में रोना ।।
यही रही खासियत तो अशुओं—
में तेरा जीवन शुमार होगा ।।
अभी तो माना की मोह प्याली.
को पी के अलमस्त हो रहा है ।।
मगर तू पछतायेगा कि जिस दिन
नशे का आखिर उतार होगा ।।
वो बांगवां अपने इस चमन में
खिला है खुद बनके गुल ,हजारों ।।
बतादे क्या है ? पसन्द तुमको ।
या गुल की खुशबू या ! खार होगा
जुरूर बरसायेगा तड़प कर,
ओ अबे रहमत के 'विन्दु' एकदिन।।
जो सामने उसके खुद गुनाहों,
से अपने तू शर्मशार होगा ।।

पद २००

जाता कभीं स्वभाव न खल का ।
कितना ही सत्संग करे वह सुजन साधु निर्मल का ।।
मिश्री मिश्रित पय से सिंचन करो बृक्ष के थल का ।।
किन्तु स्वाद करुआ ही होगा सदा निम्ब के फल का
चाहे अमृत ही अंजन बन जाये नेत्र कमल का ।।
किन्तु उलूक नहीं दर्शन कर सकता रवि मण्डल का ।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नाग प्रेम से पालो देकर मधु प्रसून कोमल का।
पर फुफकार छोड़ते ही उगलेगा सार गरल का॥
काला कम्बल लाख धुला लो रंग न होता हल का
चिकने घट पर नहीं ठहरता एक विन्दु" भी जलका॥

पद २०१

सदा अपनी रसना को रसमयबकरना।
हरीहर हरी हर हरी हर, जपाकर॥
इसी जप से कष्टों का कम भार होगा।
इसी जप से पापों का प्रतिकार होगा॥
इसी जप से नर तन का शृंगार होगा।
इसी जप से तू प्रभु को स्वीकार होगा॥
ये स्वांसों की दिन रात माला बनाकर।
हरीहर हरीहर हरीहर जपाकर॥
इसी जप से तू आत्म वलवान होगा।
इसी जप से कर्तव्य का ध्यान होगा।
इसी जप से सन्तों में सम्मान होगा॥
इसी जप से सन्तुष्ट भगवान होगा॥
अकेले ही या साथ सबको मिलाकर॥
हरीहर हरीहर हरीहर जपाकर॥
जो श्रद्धासे इस जप को है नित्य गाता।
तो उसका यही यप है जीवन विधाता॥
यही जप पिता है यही जप है माता।
यही जप है इस जग में कल्याण दाता॥
हरी का कोई रूप मन में विठाकर।
हरीहर हरीहर हरीहर जपाकर॥
ये जप जब तेरे मन को ललचा रहा हो।
वो रसिकों के रस पन्थ पर जा रहा है

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मजा श्री हरिनाम का आ रहा हो।
हरी ही हरी हर तरफ छा रहा हो॥
तो कुछ प्रेम के 'विन्दु' दृग से बहाकर।
हरीहर हरी हर हरी हर जपा कर॥

पद २०२

आया शरण हूं तेरी घनश्याम मुरली वाले।
दुनियाँ की आफतो से करके कृपा बचाले॥
उम्मीद है कि उनपर तेरी नजर न होगी।
मदमोह के नशे में जो खेल खेल खाले॥
बनती हुई किसी की लाखों बिगाड़ते हैं।
ऐसा है एक तूहा जो विगड़ा हुई बनाले॥
जब अंश में तेरा हूं जब पुत्र मै तेरा हूं।
फिर कौन है जो मुझको तेरे सिवा सम्भाले॥
दृग 'बिन्दु, के लेने में शायद ये मुझको डर है।
पापों से गम है यह कहीं डाल दे न छाले।

पद २०३

ऊधो! हैं बेपीर कन्हाई

हम सबके तन, धन, जीवन, लेकर भी दया न आई।
यदि प्रपंच मय झूठी थी जग की सब नेह सगाई॥
तो फिर क्यों न प्रथम ही हमको ज्ञान कथा समझाई॥
पहले चंचलता शिशुता वश हंसि हंसि प्रीति बढ़ाई॥
अब ग्रामीण ग्वालिनों के हित क्यों त्यागे ठुकराई।
माखन चोर कहाकर ब्रजमेंघर घर कीर्ति जमाई॥
धन्य कुबरी, जिसने पदवी, अलख ब्रह्म की पाई॥
प्रेम बिरह दृग 'विन्दु' मालिका मोह जाल ठहराई।
क्या पहिचाने रत्न जिन्होने वन वन गाय चराई॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पद २०४

पतझड़, न खिज़ाँ है, न तो गर्दों गुबार है ।
मस्ती की जिन्दगी में हमेशा बहार है ॥
जिन्दा दिली जहां है हम उस अंजुमन के हैं ।
हम आशिके वतन है मगर खुश वतन के हैं ।
मोहब्बत पसन्द भी है तो गुंचा दहन के है,
हम बुलबुले २ दा हैं मगर हम उस चमन के है,
जिसमें शिवाय गुल के खालिस है न खार है
मस्ती की जिन्दगी में हमेशा बहार है ।
कोई भी अजो जिस्न खामोश नहीं है ।
वस्फे जहां के उनको मगर जोश नहीं है ॥
सब देखते सुनते भी हैं वेहोश नहीं है ।
पर अपनी ही हस्ती के वास्ते उन्हें होश नहीं हैं,
है चूर नशे में न नशे का खुमार है ।
मस्ती की जिन्दगी में हमेशा बहार है ॥
फौलाद तसब्बुर की शरारत मरोड़ दी,
फिक्रो की जो जंजीर बन्धी थी वो तोड़ दी,
हर ख्वाहिशे हवा की हर एक चाल मोड़ दी,
अब डूबी है सागर में या सागर के पार ।
मस्ती की जिन्दगी में हमेशा बहार है ॥
महबूब की अब याद में आ जाते हैं अंसू,
आबादिये हस्ती को हिला जाते हैं, आँसू,
सैलाब आवे इश्क बढ़ा जाते हैं, आँसू ॥
आँखो के 'बिन्दु, बन के बता जाते है, आँसू ।
दरियाये दिल की मौजे है, मीठी फुहार है ।
मस्ती की जिन्दगी में हमेशा बहार है ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ बारहवां भाग ॥

❁ प्रार्थना ❁

पद २०५

जय ब्रजराज कन्हैया लाल !
जिनकी मधुर मोहनी शोभा लखि दृग होत निहाल।
जो ब्रजवासिन के प्रिय बलराम सखा सनेही ग्वाल।
ब्रज गोपिन के श्याम सलोने प्राणनाथ गोपाल।
जिनके मुख मुरलिका मनोहर गावत गीत रसाल।
मोर मुकुट पीताम्बर कटि तट चलत त्रिभंगी चाल।
राजत रोली तिलक 'विन्दु' श्रीयदुकुल भूषण भाल ॥

पद २०६

ये सच है मोहन कृपा न करते,
तो कौन अधमो को फिर बचाता।
अगर न होते अधम ही जग में,
उधम उधारन कहां से आता ॥
अनेक अपराध प्राणियों के,
क्षमा वो करते हैं यह सही है।
परन्तु अपराधी ही न होते ॥
तो कौन उनसे क्षमा कराता ॥
ये मान उनकी दयालुता ने,
उन्हें परेशान कर दिया है।
अगर न होती दया की सोहरत,
तो उनके दर पर ही कौन जाता।
पटल वो सकते हैं कर्म बन्धन,
जब तो जगदीश हैं कहाते।
अगर हुकूमत न इतनी होती,
तो कौन हाकिम उन्हें बनाता ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न शौक से सर पै वो उठाते,
अधीन दोनों की आफतों को।
तो क्या गरज़ थी किसी को,
आँखों से 'विन्दु' मोती की लड़ लुटाता ॥

—❀—

पद २०७

गैर मुमकिन है कि दुनियां,
अपनी मस्ती छोड़ दे ॥
इसलिये दिल ! तू भी यह,
बेकार वस्ती छोड़ दे ॥
तू न बन्दा बन खुदा को,
और खुदा भी तू न वन ॥
हस्तिये उल्फत में मिल जा,
अपनी हस्ती छोड़ दे।
खूब तरसाया है तेरी,
ख्वाहिशों ने ही तुझे ॥
तू भी अब इन ख्वाहिशों को,
कुछ तरसती छोड़ दे ॥
तुमको भी मन्सूर सा,
मशहूर होना है अगर ॥
जानें दिल देने में अपनी,
तंग दस्ती छोड़ दे ॥
'विन्दु' आँखों के तेरे,
दिखलायेंगे फस्ले बहार ॥
भर के आहों की घटाओं को,
बरसती छोड़ दे ॥

———

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पद २०८

ऐसी दुनियां को क्या करना।
जिसमें मरना तो मरना है, जीनो भी है मरना।
आज किसीका हुआविगड़ना, किसीका हुआसुधरना।
यही चक्र है जिसमें प्रतिदिन चढ़ना और उतरना।
माता, पिता, पुत्र, पत्नी को व्यर्थ भरोसा धरना।
कोई नहीं किसी का, जैसा करना वैसा भरना॥
यदि तू चाहे, कठिन मोह भ्रम शोक सिंध से तरना।
तो मन भ्रमर श्याम पदपंकज नौका, बीच बिचरना।
उसको आवागमन, जन्म, मरणादिक से क्या डरना।
जिसके मुख से झरता है हरिनाम 'बिन्दु"का झरना।

पद २०९

मोहन हम तो बने तुम्हारे।
अब तो मर्जी रहो तुम्हारी बनो न बनो हमारे॥
जाति-पाति, कुल,धम,धामजन सब कुछ तुमपर वारे।
जैसा चाहो नाच नचा लो सब प्रकार हैं हारे॥
सुनते थे गज, गीध, अजामिल गणिका अधम उधारे।
पर जाने मेरे कारण क्यूँ बन्द कर लिये द्वारे॥
छोड़ गये सब स्वारथ साथी अपनी राह सिधारे।
दीन, अधीन, मलीन, हीन के अब हो तुम्हीं सहारे।
पूर्व कम कृत कुटिल प्रकृति वश छोड़े साधन हारे।
चढ़ा रहे चरणों पर केवल दृग जल 'बिन्दु' फुहारे।

पद २१०

न तो रूप हैं न तो रंग है,
न गुणों की कोई भी खान है,
फिर श्याम कैसे शरण में ले,
इसी सोच फिक्र में जान है।
नफरत है जिनसे उन्हें सदा,
उन्हीं अवगुणों में मैं हूं बंगा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कलि कुटिलता है और, कपट भी है,
हठ भी है और अभिमान है ॥
तन, मन, वचन, में विचार से,
लगी लौ है इस संसार से ॥
पर स्वप्न में भा तो भूलकर,
कभी उनकाकुछ भी न ध्यान है ।
सुख शान्ति की तो तलाश है,
साधन न एक भी पास है ॥
न तो योग, जप, तप कर्म है,
न तो धर्म पुण्य, दान है ॥
कुछ आसरा है तो यही,
क्यों करगे मुझ पै कृपा नही ॥
इक दीनता का हूं 'बिन्दु" मैं,
वो दयालुता के निधान हैं ॥

पद २११

जिस कदर श्याम से हो लुफ्तो करम होने दो ।
जोशे उल्फत को घड़ी भर भी न कम होने दो ।
दिल यह कहता हैं तसव्वुर को न घटने दो कभी ।
आंख कहती है कि दीदारे सनम होने दो ॥
मचल रही है जुबाँ तर्जे बयानी के लिये ।
होश कहता कि मुझ में भी दक होने दो ॥
जान कहती है कि कुर्बान मैं हूंगी पहले ।
सर ये कहता है मुझे पहले कलम होने॥ दो
आँख के 'बिन्दु' ये कहते हैं, कि हट जाओ सभी ।
तर-बतर हम से जरा उनके कदम होने दो ॥

पद २१२

दुनियां तो क्या ! अपनी हस्ती को भुला बैठे ।
जिस दिन से लगन अपना मोहन से लगा बैठे ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हम मर मिटें फिर क्यूँ कर उनकी न नजर कुछ हो।
इस शजरे मुहब्बत में क्यूँ कर न समर कुछ हो ॥
तड़फती हुई आहों में क्यूँ कर न असर कुछ हो।
मुमकिन नहीं इस जीद का उनको न खबर कुछ हो ॥
हर तौर से इस जिद पर एतकाद जमा बैठे।
जिस दिन से लगन अपनी मोहन से लगा बैठे।
माना है अजब उनके अन्दाज जमाने में।
एकता है मगर हम भी जांबाज जमाने में ॥
इक दिन तो खुलेगा ही यह राज़ जमाने में।
कुर्बानिये दिल देगी आवाज जमाज जमाने में।
हम द्वार पै सर देकर दिलदार को पा बैठे।
जिस दिन से लगन अपनी मोहन से लगा बैठे ॥
आशिक को कभी दम भर आराम नहीं होता।
रोने के सिवा उसका कुछ काम नहीं होता ॥
है कौन? जो इस फन में बदनाम नहीं होता ॥
मरने के सिवा इसका कोई अन्जाम नहीं होता ॥
सब कुछ ये समझ कर भी इस दिल को लुटा बैठे।
जिस दिन से लगन अपनी मोहन से लगा बैठे ॥
थोड़ा सा सहारा कुछ पाया भी तो कब पाया।
बरसात का मौसम कुछ पाया भी तो कब पाया ॥
घनश्याम इन आंखों में छाया भी तो कब छाया।
कुछ 'बिन्दु' बरसने का लाया भी तो कब लाया ॥
जब आतिशे फुरकत में यह जिस्म जला बैठे।
जिस दिन से लगन अपनी मोहन से लगा बैठे ॥

पद २१३

हमको जग ने ही खद छोड़ा।
हमने तो जग में रहने का किया प्रयत्न न थोड़ा ॥
समझाने पर कभी न माना मन मस्तानो घोड़ा।
गई हेकड़ी भूल लगा जब तिरस्कार का कोड़ा ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जिन-जिनसे सम्बन्ध कठिन प्रण और प्रेम का जोड़ा।
स्वार्थ निकल जानेपर सबने हमसे नाता तोड़ा।
जिनके हित धन—धाम,धर्म ईश्वर से भी मुख मोड़ा
उन सबने सुखमय जीवन पथ में अटकाया रोड़ा ॥
पीड़ा देता था विषयों का पका हुआ फोड़ा।
अश्रु बिन्दु विष निकलपड़ा जब अंतःकरणनिचोड़ा ॥

पद २१४

होली इधर लली है, उधर श्याम लला होली में।
देखे क्या रंग दिखाते भला होली में ॥
नजर की चुटकियां दोनों की दौड़ती हैं, मगर-
न जाने किसका हृदय किसने मला होली में ॥
ये जिद पड़ी है, कि पीछे हटाये कौन किसे ?
मुकाबिला ये दोनों का भला होली में ॥
कभी जुदा कभी एक है, दोनों का स्वरूप।
ये श्याम गौर की प्यारी हैं कला होली में ॥
किसी की कुछ भी हार जीत जो देखी न वहां।
तो 'विन्दु' दोनों पै दिल हार चला होली में ॥

पद २१५

होली—हिंडोला भूलत दोऊ सरकार।
श्री मिथिलेश लली संग राजत श्री अवधेश कुमार।
दामिनि लरजि गरज घन बरसत रिमझिम परत फुहार ॥
झुकि झुकि लाल लली मुख निरखत मानत मोद अपार।
मानहुं अरुण 'विन्दु' पंकज पर भ्रमर भ्रमर बहु वार ॥

पद २१६

बांका झूला सिय साजन कारी।
मोतिनहार, बन्दनवार हीरे हजार की कतार।
बार, बार छबि निहार, रति पति निज मद भुलारी ॥
बाँका झूला० ॥ १ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चम्पा, चमेली, मोतिया, बेला, जूही, अकेली छवि सकेली।
मेलि मेलि करत केलि, फूलों की महक से फूलारी ॥
बाँका झूला० ॥ २ ॥
तपै विराज अवध राज, जानक जी समेत आज ॥
लखत लाज त्यागि, सुजन छविहरण त्रिबिध शूलारी ॥
बाँका झूला० ॥ ३ ॥
अरुण बरण मंगल करण, दोऊ पिय प्यारी के चरण।
शरण 'बिन्दु' पातकी के सोई जीवन धन मूलारी ॥
बाँका झूला० ॥ ४ ॥

—०—

पद २१७

चलो सखि चलियेरी जहाँ झूलत युगल किशोर ॥
घटा घिर आई बूँदे झरिलाई शोर करें दादुर चातक,
कोकिल नाचत मोर। झूलत युगल किशोर ॥
अवधबिहारी, जानकदुलारी, झूमिझूमि झमकि झूमत
झोकन सों झकझोर। झूलत युगल किशोर ॥
सखियां झूलावे, मीठे स्वर गावें अम्बुनिधि आनन्दको,
जानु लेत तिरंग हिलोर। झूलत युगल किशोर
प्रभा सम सिय, चन्द्र सिय पिय, लाख सुख पावत प्यास बुझावत
'बिन्दु' चकोर। झूलत युगल किशोर ॥

—❀—

पद २१८

दोउ जाने लेत लतन की ओटें।
कछु पुरवाई चलत घन गरज,, कछु बँदन की चोटें।
डरपति सिय,पट छाँह करत पिय, बांधिभुजाकी ओटें।
उत फहरत पचरंगी पगिया इत चूनर की गोटें।
यह छबि लखिदृग 'बिन्दु प्रिया प्रीतमके पाय पलोटे॥

—❀—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पद २१६

भीजेत कुंजन दोउ अटके।
प्रिय पाहुने भये विटपन के, पावन सरयू तट के।
पवन झकोर लली मुखमोरति छिपत छोर पिय पटके।।
युगल स्वरूप अनूप छटा लखि, रति मनोज मद भटके।
इकटक छबि रस 'बिन्दु' पिवत दृग पलभरहरतन हटके।

पद २२०

अवधनाथ, व्रजनाथ, तुम्हारा सदा मैं दास रहूं।
जहाँ जहां भी जन्म जग में पद पंकज के पास रहूं।।
या प्रमोद बन, या वृन्दावन का फल फूल बना देना।
या सरिता सरजू, या कालिन्दी का कूल बना देना।।
अवध भूमि, व्रजभूमि कहीं पथ की धूल बना देना।
या बन कर सर चाप रहूं, बनकर बंशी बांस रहूं।
जहां जहां भी जन्म जग में पद पंकज के पास रहूं।।
व्रज निकुंज की वाट बनूँ या अवधपुरी का हाट बनूँ।
बनूं सुदामा अश्रु 'बिन्दु' या केवट गंगा का घाट बनूँ।।
या व्रज के गुणनायक या कोशलेश का भाट बनूँ।
शुक का हृदय बनूं या नारद बीना का ठाट बनूं।।
युगल नाम का जाप करना प्रतिपल प्रपिक्षण, प्रपिस्वांस रहूं
जहां जहां भी जन्मूं जगमें पद पंकज के पास रहूं।।

पद २२१

दोनों ने जब क्लेशित होकर जगमें होहाकार किया।
परब्रह्म सच्चिदानन्द परमेश्वर ने अवतार लिया।।
रावण राक्षस के बल भूमण्डल सारा हिलता था।
ऋषि मुनि ज्ञानी सन्त सज्जनोंका कुछ भी पता न मिलताथा।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्यायों का नया रंग इस पृथ्वी तल पर खिलता था।
कोड़ों से द्विज साधु सुरोंका कल्पित कलेवर छिलता था॥
दीन देश पर जब अत्याचारों ने ही अधिकार किया।
परब्रह्म सच्चिदानन्द परमेश्वर ने अवतार लिया॥
दुष्कर्मों से पीड़ित होकर, भूमि सुरों के पास गई।
ब्रह्मादिक ने सुनी कहानी उनकी करुणा क्लेशमयी॥
देख धरा का भार मण्डली विबुधों की बेचैन हुई।
जगदीश्वर के सन्मुख सबने रक्खी वह आपत्ति नई॥
धेनु रूप धारण करके धरणी ने करुण पुकार किया।
परब्रह्म सच्चिदानन्द परमेश्वर ने अवतार लिया॥
आर्त्त प्रार्थना को सुनकर नभ वाणीसे निकला वरदान।
धीरज धरो हृदय में क्यूं करते हो सन्ताप महान॥
नहीं सहन कर सकता मैं भी दोनों का इतना अपमान।
शीघ्र अवध में दशरथ गृह होगा मेरा अवतार स्थान॥
इसी प्रकार सबको सुस्थिर प्रभुवर ने बारम्बार किया।
परब्रह्म सच्चिदानन्द परमेश्वर ने अवतार लिया॥
आज वही नौमी है जिस नवमी में प्रगटे रामलला।
सुगुण रूप से दिखलाई माधुर्य! और ऐश्वर्य कला॥
दुखितजनों के अश्रु 'बिन्दु' शास्त्रोंसे त्रिभुवन भारटल।
उसी बीर जननी तिथिको हम याद करेंक्यूँ करनभला॥
जिस तिथि ने सर्वस्वहीन भारतका फिर सिंगार किया।
पर ब्रह्म सच्चिदानन्द परमेश्वर ने अवतार लिया॥

❋ समाप्त ❋

विनीत

व्यवस्थापक—प्रेमधाम बृन्दावन (उ० प०)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रिय पाठक-गण थोड़ा ध्यान दें।

आप सभी प्रेमियों को ज्ञात हो कि भविष्य में मोहन-मोहिनी पर हस्ताक्षर करने का नियम समाप्त कर दिया गया है। इस पुस्तक की अत्यधिक मांग के कारण जाली संस्करणों की रोक थाम के लिये ही इस प्रथा का अवलम्बन किया था। परन्तु फिर भी धूर्त लोग यदा कदा अपनी कला का प्रयोग करते रहते हैं। अतः पूज्य गोस्वामी बिन्दुजी महाराज की रचनाओं के लिये भारत सरकार से लिखा पढ़ी करके कार्यालय ने रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क प्राप्त कर लिया है। भविष्य में सतर्क होकर पू० महाराजजी की सभी रचनाओं के मुख पृष्ठ पर 'प्रेम कमल ट्रेडमार्क देखकर ही असली पुस्तक समझ कर लें! अब इस ट्रेडमार्क के पश्चात अगर हस्ताक्षर वाली प्रति पाठकों को प्राप्त हो तो वे जाली समझते हुये प्रेमधाम कार्यालय को सूचित करें ताकि उनके प्रति कड़ी कार्यवाही की जा सके।

आप सभी प्रेमियों ने पू०महाराज जी की आध्यात्मिक अमर रचनाओं को जिन्होंने जन समाज में काफी जागरण उत्पन्न किया है। अभी तक उसे अपनाया है, भविष्य में भी कृपा पूर्वक अपनाते रहेंगे।

पाठकगण प्रयत्न करके सच्चाई के साथ प्रेमधाम कार्यालय से ही महाराज जी की सभी रचनाओं को थोक एवं फुटकर प्राप्त करने के लिये प्रयत्नशील रहेंगे!

विनीत :—

व्यवस्थापक प्रेमधाम, वृन्दावन (उ० प्र०)

मुद्रक—गोस्वामी श्री बिन्दु जी महाराज

प्रेमधाम प्रेस, वृन्दावन।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

Nam Kirti Kanta Sharma

class uttaramadhyama

Mahatma machine

winde

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection